● वर्ष-3
● अंक-100
रायपुर, मंगलवार
05 दिसंबर 2023
● पृष्ठ-8
● मूल्य-3 रु.
samacharpacheesa@gmail.com

।। संगच्छध्वम् संवदध्वम् ।।

समाचार पचीसा

राजनीति का जनपक्षकार

पेज-6›› आलू की खेती

छत्तीसगढ़ ने सबको चौंकाया

भाजपा के आगे बेदम हो गए भूपेश बघेल

नई दिल्ली/रायपुर. रविवार को चार महत्वपूर्ण रायों के चुनावी नतीजे आ गए। इन चुनावी नतीजे में छत्तीसगढ़ ने सभी को चौका दिया। दरअसल, छत्तीसगढ़ को लेकर एग्जिट पोल में यादातर कांग्रेस को बड़ी जीत दिखा रहे थे लेकिन जब चुनावी नतीजे आए तो सभी हैरान रह गए। चुनावी नतीजों में छत्तीसगढ़ में भाजपा ने जबर्दस्त जीत हासिल की है। भाजपा ने 54 सीटें हासिल की वहीं 75 प्लस का दम भरने वाली कांग्रेस 35 पर सिमट गई। वोट प्रतिशत में भी भाजपा काफी आगे रही। पार्टी को 46.27 प्रतिशत वोट मिले वहीं कांग्रेस 42.23 के साथ दूसरे नंबर पर ही। हालांकि बड़ा सवाल यह भी है कि आखिर लगातार भाजपा पर बढ़त बना कर रखने वाली भूपेश बघेल की सरकार राजनीतिक पंडितों को भी चौंकाते हुए आखिर चुनाव में कैसे हार गई।

भाजपा के जीत के बड़े कारण

मोदी फैक्टर- करिश्माई और व्यापक रूप से स्वीकार्य नेताओं की कमी के कारण, भाजपा प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी को पार्टी का चेहरा बनाकर चुनाव में उतरी। ज़मीन पर उनकी लोकप्रियता अभी भी बरकरार है, जिससे प्रमुख निर्वाचन क्षेत्रों में पार्टी उम्मीदवारों को प्रतिद्वंद्वी कांग्रेस से आगे निकलने में मदद मिली है। यही कारण है कि जीत का श्रेय उन्हीं को दिया जा रहा है।

महिला मतदाता- छत्तीसगढ़ में बीजेपी के पक्ष में जो बात काम आई, वह है महिला मतदाताओं का समर्थन। इस जनसांख्यिकीय पर ध्यान केंद्रित करते हुए, पार्टी ने घोषणापत्र में विशेष योजनाओं की घोषणा की। बीजेपी ने महतारी वंदन योजना की घोषणा की थी जिसके तहत प्रदेश की सभी को साल में 12000 रुपये देने की बात की गई है।

बीजेपी की संगठनात्मक ताकत- भाजपा आम चुनाव में अपने पक्ष में रहने वाले कारकों को विधानसभा चुनावों में भी तब्दील करने में सक्षम रही है। भाजपा वोटर्स खासकर महिलाओं को बूथ तक ले जाने में कामयाब रही। अमित शाह लगातार दौर कर बैठक और मीटिंग कर रहे थे। अमित शाह हर विधानसभा सीट की व्यक्तिगत रिपोर्ट ले रहे थे। पन्ना प्रमुखों ने भी बड़ी भूमिका निभाई है।

धान किसानों को बोनस- भाजपा ने चुनाव से पहले घोषणा पत्र में कहा था कि अगर वह सत्ता में आती है तो 21 क्विंटल प्रति एकड़ धान की खरीदी होगी। 3100 रुपये प्रति क्विंटल धान खरीदी जाएगी। किसानों को एक मुश्त भुगतान किया जाएगा। भाजपा का यह दाव चल गया।

विकास और हिन्दुत्व- कांग्रेस के अभियान का मुकाबला करने के लिए हिंदुत्व, विकास और कल्याण की राजनीति का संयोजन पेश करने के भाजपा के प्रयासों ने जमीन पर अछा काम किया है। इससे कुछ समुदायों के प्रति पार्टी के कथित तुष्टीकरण का मुकाबला करने में मदद मिली। भाजपा ने धर्म परिवर्तन को भी बड़ा मुद्दा बनाया और इसे हर सभा में उठाया गया है।

कांग्रेस के खिलाफ क्या गया- कांग्रेस की हार की बात करें तो कहीं ना कहीं छत्तीसगढ़ को उसका आत्मविश्वास से ले डूबा। कांग्रेस छत्तीसगढ़ में पूरी तरीके से आत्मविश्वास में थी। लेकिन जब चुनावी नतीजे आए तो उसके उप मुख्यमंत्री टीएस सिंह देव सहित कई बड़े नेताओं की जबरदस्त हार हुई है। इसके अलावा भाजपा ने भ्रष्टाचार को बड़ा मुद्दा बनाया। शराब घोटाले का भी भूपेश बघेल की सरकार पर आरोप लगाया। साथ ही साथ आखिरी चरणों में भाजपा की ओर से महादेव सट्टा एप में घोटाले को लेकर सीधे तौर पर मुख्यमंत्री भूपेश बघेल पर निशाना साधा गया। प्रचार के दौरान जिस तरह से महादेव बेटिंग ऐप का मामला सामने आया और बघेल से तार जुड़े, उसने कांग्रेस को बैकफुट ले गया। दूसरी भले ही कांग्रेस से साफ कहती रही कि सब कुछ पार्टी के भीतर ठीक है लेकिन मुख्यमंत्री पद को लेकर भूपेश बघेल और टीएस सिंह देव के बीच टकराव की स्थिति लगातार बनी रही।

संसद का शीतकालीन सत्र: दो विधेयकों को मिली मंजूरी

नई दिल्ली। संसद का शीतकालीन सत्र सोमवार से शुरू हुआ। यह सत्र ऐसे समय में हो रहा है, जब पांच रायों के चुनावी नतीजे आए हैं। जिनमें से तीन बड़े रायों में भाजपा को जबरदस्त जीत हासिल हुई है। संसद का शीतकालीन सत्र 22 दिसंबर तक चलेगा जिसमें कुल 15 दिन काम होंगे। इस दौरान 19 विधेयकों पर चर्चा हो सकती है। बसपा) के सांसद दानिश अली सितंबर में आयोजित संसद के विशेष सत्र में भाजपा सदस्य रमेश बिधूड़ी की 'आपत्तिजनक' टिप्पणी के मामले में कार्रवाई की मांग करते हुए सोमवार को गले में तख्तियां लटकाकर लोकसभा में पहुंचे जिस वजह से हंगामा भी हुआ। आज संसद में प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी का एनडीए सांसदों ने जबरदस्त तरीके से स्वागत किया। तीन रायों में मिली जीत से भाजपा उत्साहित है और यही कारण है कि मोदी के स्वागत के दौरान एनडीए सांसदों ने लोकसभा में तीसरी बार मोदी सरकार, बार-बार मोदी सरकार के भी नारे लगाए।

संसद ने सोमवार को 'अधिवक्ता (संशोधन) विधेयक, 2023' को मंजूरी प्रदान की। इस

विधेयक का मकसद अदालत परिसरों में दलालों की भूमिका को खत्म करना है। लोकसभा ने विधेयक पर विस्तृत चर्चा और विधि मंत्री अर्जुन राम मेघवाल के जवाब के बाद ध्वनिमत से स्वीकृति दी। रायसभा में यह विधेयक पिछले मानसून सत्र में पारित किया गया था। लोकसभा में विधेयक पर चर्चा का जवाब देते हुए मेघवाल ने कहा कि प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी के नेतृत्व वाली सरकार ने यह तय किया है कि उन औपनिवेशिक कानूनों को निरस्त किया जाएगा जो अनुपयोगी हो चुके हैं।

भाजपा ने सोमवार को लोकसभा में कहा कि प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी ने देश में 'स्वछता' अभियान शुरू किया है और इसी के क्रम में न्यायपालिका को भी 'स्वछ' बनाने का प्रयास किया जा रहा है। भाजपा सांसद जगदम्बिका पाल ने सदन में अधिवक्ता (संशोधन) विधेयक, 2023 पर चर्चा में हिस्सा लेते हुए कहा कि सरकार अपना औचित्य खो चुके ब्रिटिशकालीन कानूनों को निरस्त करने के प्रति वचनबद्ध है और यही वजह है कि उसने 'लीगल प्रैक्टिशनर्स एक्ट, 1879' को निरस्त करने और अधिवक्ता अधिनियम, 1961 में संशोधन करने का निर्णय लिया है। कांग्रेस ने न्यायपालिका को दलालों से पूरी तरह मुक्त करने के लिए 'बड़ी मछलियों' को पकड़ने के लिए आवश्यक प्रावधान करने की सोमवार को आवश्यकता जताई। कांग्रेस सांसद कार्ति चिदम्बरम ने अधिवक्ता (संशोधन) विधेयक, 2023 पर लोकसभा में चर्चा के दौरान कहा कि छोटी अदालतों में छोटे-मोटे दलालों के खिलाफ पहल करने के साथ-साथ केंद्र को 'बड़ी मछलियों' को पकड़ने के लिए प्रावधान करना चाहिए।

राघव चड्ढा 115 दिन बाद रायसभा में लौटे

वित्त राय मंत्री पंकज चौधरी ने सोमवार को कहा कि भारत 2047 तक उन्नत अर्थव्यवस्था बनने के लक्ष्य को हासिल करने की यात्रा के दौरान 'अमृत काल' की शुरुआत में ही 5,000 अरब डॉलर की अर्थव्यवस्था बन जाएगा। उन्होंने लोकसभा में एक प्रश्न के लिखित उत्तर में यह जानकारी दी। केंद्रीय पर्यटन एवं संस्कृति मंत्री जी. किशन रेड्डी ने सोमवार को लोकसभा को बताया कि शिक्षा मंत्रालय के साथ साझेदारी में राय-केंद्रित सांस्कृतिक पाठ्यक्रम लाने की कोई योजना नहीं है। रेड्डी ने लोकसभा में एक प्रश्न के लिखित उत्तर में कहा कि राष्ट्रीय शिक्षा नीति (एनईपी), 2020 के पैराग्राफ 4.32 में स्पष्ट उल्लेख है कि राय अपना स्वयं का पाठ्यक्रम और पाठ्य-पुस्तकें तैयार करेंगे और आवश्यकतानुसार राय-केंद्रित सामग्री उसमें समाविष्ट करेंगे।

तृणमूल कांग्रेस सांसद सुदीप बंदोपाध्याय ने सोमवार को केंद्र सरकार पर पश्चिम बंगाल का मनरेगा योजना, प्रधानमंत्री आवास योजना और राष्ट्रीय स्वास्थ्य योजना का बकाया धन रोकने का आरोप लगाते हुए इसे तुरंत जारी करने की मांग की, जिस पर केंद्रीय मंत्री धर्मेंद्र प्रधान ने कहा कि पश्चिम बंगाल सरकार में 'गरीबों का पैसा लूटा' जा रहा है। बंदोपाध्याय ने कहा, ''पश्चिम बंगाल को बिना देरी के यह धन दिया जाना चाहिए। हम प्रधानमंत्री तक अपनी बात पहुंचाना चाहते हैं।'' धर्मेंद्र प्रधान ने कहा कि तृणमूल कांग्रेस सांसद का यह दावा तथ्यात्मक रूप से सही नहीं है।

राज्सभा ने सोमवार को देश में डाकघर से संबंधित कानून को समेकित और संशोधित करने के उद्देश्य से लाए गए डाकघर विधेयक, 2023 को ध्वनिमत से मंजूरी दे दी।

विधेयक के उद्देश्य एवं कारण में कहा गया है कि इसका उद्देश्य भारतीय डाकघर अधिनियम, 1898 को निरस्त करना और भारत में डाकघर से संबंधित कानून को समेकित और संशोधित करना और उससे जुड़े या उसके प्रासंगिक मामलों का प्रावधान करना है। दूरसंचार मंत्री अश्विनी वैष्णव ने सोमवार को रायसभा में कहा कि सरकार ने प्रासंगिकता खो रहे डाकघरों का पुनरूद्धार करते हुए इन्हें सेवा प्रदान करने वाला संस्थान बनाने और इन्हें बैंकों में तब्दील करने के लिए पिछले नौ साल में कई प्रयास किए हैं।

मोदी ने शिवाजी की प्रतिमा का किया अनावरण

मुंबई। प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने सोमवार को कहा कि छत्रपति शिवाजी महाराज देश के लिए नौसेना के महत्व को समझते थे। पीएम मोदी महाराष्ट्र के सिंधुदुर्ग जिले में नौसेना दिवस कार्यक्रम को संबोधित कर रहे थे। मोदी ने राजकोट किले में छत्रपति शिवाजी महाराज की प्रतिमा का अनावरण किया।

छत्तीसगढ़ विधानसभा में दिखेगी नारी शक्ति, इस बार 19 महिला विधायक

रायपुर। छत्तीसगढ़ विधानसभा चुनाव के नतीजे तीन दिसंबर को आ चुके हैं। राज्य की 90 विधानसभा सीटों के लिए हुए चुनाव में 19 महिलाएं चुनकर सदन पहुंची हैं। विधानसभा चुनाव में बीजेपी और कांग्रेस ने 15 और 18 महिलाओं को अपना उम्मीदवार बनाया था। इनमें से 54 सीटें जीतकर सत्ता हासिल करने वाली बीजेपी से आठ और 35 सीटें जीतकर सत्ता से बाहर हुई कांग्रेस से 11 महिला उम्मीदवारों को जीत मिली है। रविवार तीन दिसंबर को हुई मतगणना के अनुसार बीजेपी की महिला उम्मीदवारों में केंद्रीय मंत्री रेणुका सिंह ने भरतपुर सोनहत सीट से, लक्ष्मी राजवाड़े ने भटगांव सीट से, शकुंतला सिंह पोर्ते ने प्रतापपुर सीट से, उद्देश्वरी पैकरा ने सामरी सीट से, रायमुनी भगत ने जशपुर सीट से, सांसद गोमती साय ने पत्थलगांव सीट से, भावना बोहरा ने पंडरिया सीट से और पूर्व मंत्री लता उसेंडी ने कोंडागांव सीट से जीत हासिल की है। कांग्रेस की महिला उम्मीदवारों में विद्यावती सिदार ने लैलुंगा सीट से, उत्तरी जांगड़े ने सारंगढ़ सीट से, शेषराज हरबंश ने पामगढ़ सीट से, चतुरी नंद ने सरायपाली सीट से, कविता प्राण लहरे ने बिलाईगढ़ सीट से, अंबिका मरकाम ने सिहावा से, संगीता सिन्हा ने संजारी बालोद से, मंत्री अनिला भेड़िया ने डौंडी लोहारा से, यशोदा निलांबर वर्मा ने खैरागढ़ से, हर्षिता स्वामी बघेल ने डोंगरगढ़ से और सावित्री मनोज मंडावी ने भानुप्रतापपुर से जीत हासिल की है।

प्रमुख समाचार

इंडिया गठबंधन को बड़ा झटका देने जा रही ममता बनर्जी!

6 दिसंबर की बैठक से बना सकती हैं दूरी

नई दिल्ली। विपक्षी गठबंधन इंडिया के लिए चुनावी रायों के नतीजों के बाद मुश्किले शुरू हो सकती हैं। बताया जा रहा है कि 6 दिसंबर की बैठक में तृणमूल कांग्रेस की भागीदारी अनिश्चित है। एक सूत्र ने बताया कि टीएमसी सुप्रीमो ममता बनर्जी के

बैठक में शामिल न होने की संभावना है, क्योंकि उनका उत्तर बंगाल में एक कार्यक्रम निर्धारित है। कांग्रेस ने 6 दिसंबर को नई दिल्ली में अगली भारतीय राष्ट्रीय विकासात्मक समावेशी गठबंधन भागीदारों की बैठक बुलाई है। बाद में ममता ने कहा कि मुझे नहीं पता, मुझे कोई जानकारी नहीं मिली, इसलिए मैंने उत्तर बंगाल में एक कार्यक्रम रखा...अगर हमारे पास जानकारी होती, तो हम उन कार्यक्रमों को निर्धारित नहीं करते।

हम (बैठक के लिए) जरूर जाते, लेकिन हमें कोई सूचना नहीं मिली है। यह बैठक ऐसे समय में बुलाई गई जब रविवार को भाजपा ने मध्य प्रदेश, छत्तीसगढ़ और राजस्थान में सरकार बनाने जारी है। कांग्रेस को तेलंगाना में जीत तो मिली पर उसके हाथों से छत्तीसगढ़ और राजस्थान जैसे बड़े राय निकल गए।

चुनावी हार के बाद कांग्रेस में हलचल, सोनिया ने बुलाई पार्टी नेताओं की बड़ी बैठक

नई दिल्ली। पूर्व कांग्रेस अध्यक्ष सोनिया गांधी ने विधानसभा चुनावों में सबसे पुरानी पार्टी के प्रदर्शन के एक दिन बाद सोमवार को शाम 5:30 बजे 10 जनपथ स्थित अपने आवास पर एक प्रमुख संसदीय

रणनीति समिति की बैठक बुलाई। यह बात कांग्रेस को हिंदी पट्टी में तीन झटके झेलने के एक दिन बाद आई है। सबसे पुरानी पार्टी छत्तीसगढ़ और राजस्थान में सत्ता से बेदखल हो गई, जबकि वह 2018 में चुनाव जीतने के बावजूद मध्य प्रदेश में भारतीय जनता पार्टी को सत्ता बरकरार रखने से रोकने में विफल रही। हिंदी पट्टी में, कांग्रेस अब बिहार में जनता दल और राष्ट्रीय जनता दल के साथ सत्तारूढ़ गठबंधन में है और हिमाचल प्रदेश पर शासन करती है। हालाँकि, कांग्रेस ने भारत राष्ट्र समिति से तेलंगाना छीनकर दक्षिण भारत में बड़ी जीत हासिल की। कर्नाटक के बाद दक्षिण भारत में यह पार्टी की दूसरी जीत है। कांग्रेस महासचिव और सांसद केसी वेणुगोपाल ने कहा कि हम निश्चित रूप से आत्मनिरीक्षण करेंगे कि मध्य प्रदेश, छत्तीसगढ़ और राजस्थान में क्या हुआ... हम निश्चित रूप से विश्लेषण करने जा रहे हैं।

महाराष्ट्र 'खिचड़ी घोटाला'में शिंदे गुट के नेता का नाम?

मुंबई। महाराष्ट्र में सत्तारूढ़ शिवसेना (एकनाथ शिंदे) में एक पार्टी सचिव, संजय माशिलकर एक नए विवाद में आ गए हैं। कि अप्रैल-जुलाई 2020 में कोविड-19 लॉकडाउन के दौरान प्रवासी श्रमिकों को खिचड़ी वितरित करने के लिए बृहन्मुंबई नगर निगम (बीएमसी) द्वारा 8.64 करोड़ रुपये का ठेका देने में कथित अनियमितताओं के लिए मुंबई पुलिस ने फोर्स वन मल्टी सर्विसेज नामक कंपनी के खिलाफ मामला दर्ज किया था। इंडियन एक्सप्रेस ने सूचना के अधिकार के तहत एक इंक्वायरी डाली थी। इसी के तहत यह खुलासा हुआ है। मुंबई पुलिस ने अपनी एफआईआर में कंपनी के भागीदारों का उल्लेख नहीं किया था, द इंडियन एक्सप्रेस द्वारा बीएमसी के साथ दायर एक आरटीआई आवेदन से पता चला कि माशिलकर अपने बेटों - प्रीतम और प्रांजल - के साथ भागीदार के रूप में फर्म के मालिक थे।

अवैध विदेशी फंडिंग देश को पहुँचा रही नुकसान

नई दिल्ली। देश में समान बैंकिंग संहिता की मांग को लेकर वरिष्ठ अधिवक्ता और भारत के पीआईएल मैन के रूप में विख्यात अश्विनी उपाध्याय की याचिका पर आज न्यायालय में सुनवाई हुई। हम आपको बता दें कि इस याचिका में अश्विनी उपाध्याय ने कहा है कि विदेशी कोष के स्थानांतरण के लेकर प्रणाली में कुछ खामियां हैं जिनका फायदा अलगाववादी, नक्सली, माओवादी और आतंकवादी उठाते हैं। उनका कहना है कि समान बैंकिंग संहिता देश के लिए जरूरी है। हम आपको बता दें कि इस मामले की अगली सुनवाई 9 अप्रैल को होगी।

उपाध्याय ने केंद्र सरकार से निवेदन किया है कि उससे पहले वह यूनिफॉर्म बैंकिंग कोड लायें क्योंकि विदेशी बैंक हृश्वस्नञ्ज-ऋञ्जल्स के जरिए विदेशी लेनदेन कर रहे हैं इसलिए आरबीआई को अवैध विदेशी फंडिंग का पता ही नहीं चलता है। हम आपको बता दें कि अपनी याचिका में उपाध्याय ने दलील दी है कि जब वीजा के लिए आव्रजन नियम समान हैं तो विदेशी मुद्रा लेन-देन के लिए विदेशी बैंक शाखाओं सहित भारतीय बैंकों में जमा विवरण एक ही प्रारूप में होना चाहिए चाहे वह चालू खाते में निर्यात भुगतान हो या बचत खाते में वेतन।

मणिपुर में फिर भड़की हिंसा, दो गुटों के बीच गोलीबारी में 13 की मौत

टेंग्नौपाल। मणिपुर के टेंग्नौपाल जिले में सोमवार दोपहर हुई ताजा हिंसा में कम से कम 13 लोगों की मौत हो गई है। सुरक्षा बलों के अधिकारियों ने कहा कि दोपहर के करीब, टेंग्नौपाल जिले के साइबोल के पास लीथू गांव में आतंकवादियों के दो समूहों के बीच गोलीबारी की सूचना मिली थी। मामले से अवगत एक अधिकारी ने कहा निकटतम सुरक्षा बल इस जगह से लगभग 10 किमी दूर थे। एक बार जब हमारी सेनाएं आगे बढ़ीं और उस स्थान पर पहुंचीं, तो उन्हें लीथू गांव में 13 शव मिले। बलों को शवों के पास कोई हथियार नहीं मिला।अधिकारी ने कहा कि ऐसा प्रतीत होता है कि मृतक लीथु क्षेत्र से नहीं हैं और हो सकता है कि वे किसी अन्य स्थान से आए हों जिसके बाद वे एक अलग समूह के साथ गोलीबारी में शामिल हो गए। अधिकारी ने कहा न तो पुलिस और न ही सुरक्षा बलों ने मृत लोगों की पहचान की पुष्टि की। पुलिस मौके पर पहुंच गई है। वे मामले की जांच करेंगे। मणिपुर 3 मई से मैतेई और कुकी समुदायों के बीच जातीय झड़पों से भड़का हुआ है। झड़पों में कम से कम 182 लोग मारे गए और लगभग 50000 बेघर हो गए। रविवार को ही अधिकारियों ने सात महीने के बाद हिंसा प्रभावित राय में कुछ जिलों के सीमावर्ती क्षेत्रों को छोड़कर मोबाइल इंटरनेट सेवाओं पर प्रतिबंध हटा दिया था।

मेरी बात

कांग्रेस की हार सबक भी है

गिरीश पंकज

मध्यप्रदेश, राजस्थान और छत्तीसगढ़ में भारतीय जनता पार्टी का बहुमत के साथ विजयश्री वरण करना इस बात का स्पष्ट संकेत है कि सन 2024 केंद्र में एक बार फिर भाजपा और उसके गठबंधन की सरकार बनेगी। राजस्थान और मध्यप्रदेश के राजनीतिक परिदृश्य का मुझे व्यक्तिगत रूप से कोई अनुभव नहीं रहा लेकिन छत्तीसगढ़ को लेकर जो अनुभव किए, उसे देखते हुए अब यह कहा जा सकता है कि जो हुआ, अच्छा हुआ, क्योंकि अगर छत्तीसगढ़ में कांग्रेस की सरकार और पाँच साल तक रह जाती तो अभिव्यक्ति की आजादी पर बड़ा खतरा और घना हो जाता । जो सरकार अभिव्यक्ति की आजादी का अकसर नारा बुलंद किया करती थी, पत्रकारों की सुरक्षा कानून की बात किया करती थी, वहीं सरकार सच लिखने वाले पत्रकारों को बर्दाश्त नहीं कर पा रही थी। हम सब ने देखा कि पिछले पाँच वर्षों में किस तरह से सच कहने वाले पत्रकार प्रताड़ित किए गए । कुछ पत्रकार गिरफ्तार किए गए, जेल में ठूँस दिए गए। एक पत्रकार ने तो सिर्फ प्रति में व्यंग्य ही लिख दिया था, उसे जेल में ठूँस दिया गया था। कुछ का तो अकल्पनीय दमन किया गया। हालांकि यह सत्ता का चरित्र है। इस दमनात्मक चरित्र से पूर्व सरकार भी अछूती नहीं थी, लेकिन कांग्रेस ने तो अति ही कर दी थी, और धीरे-धीरे वह निरंकुशता की ओर बढ़ती जा रही थी। उसका दमनात्मक रवैया चिंताजनक था। कांग्रेस इसी भ्रम में थी कि हमारी वापसी हो रही है लेकिन वह समझ नहीं पाई कि जनता के मन में कुछ और है।

अब मुझे क्या, सभी को पूरी उम्मीद है कि भाजपा की नई सरकार कांग्रेस के पतन से सबक लेगी कि हमें मीडिया की आजादी का ख्याल रखना है। जब तक कोई व्यक्तिगत मानहानि की स्थिति न हो अभिव्यक्ति की स्वतंत्रता का सम्मान करना है। प्रतीकों में कही गई बातों को लेकर किसी पत्रकार का दमन करना यह शर्मनाक रवैया है। कांग्रेस सरकार ने ऐसा खूब किया। इसी का परिणाम था कि यहां कांग्रेस सरकार के विरुद्ध हिम्मत के साथ कोई लिख नहीं पाता था। मगर अब उम्मीद की जा सकती है कि अभिव्यक्ति की स्वतंत्रता को सम्मान मिलेगा । लोकतंत्र में किसी भी सत्ता का पतन आने वाली सत्ता के लिए दरअसल एक संदेश होता है। इस संदेश को जो समझ पाते हैं, वे मनुष्य बन कर रहते हैं, मगर जो नहीं समझ पाते, वे अमानुषिक आचरण करने लगते हैं । पिछली सरकार के अनेक मंत्री पराजित हुए। उन्हें होना ही था। क्योंकि वह बेहद अमानवीय, बेहद क्रूर हो गए थे । इससे बड़ी क्रूरता का उदाहरण और क्या हो सकता है, जब एक युवक की हत्या कर दी गई तो उसके परिवार से मिलने उस इलाके का मंत्री नहीं गया। नतीजा क्या हुआ, भारतीय जनता पार्टी ने उस युवक के मजदूर पिता को टिकट दे दी और उसने पिछले तीन दशक से सत्ता पर बने रहने वाले मंत्री को उठाकर पटक दिया। सरगुजा के पूर्व राजा रहे की हार उनकी निष्क्रियता के कारण हुई। मंत्री रहते हुए उन्होंने कभी जनहित के कोई विशेष काम नहीं किए। उल्टे कहीं जनहित के कोई काम हो रहे थे, तो उसमें अड़ंगा लगाने की कोशिश की। नतीजा सबके सामने है कि वे पराजित हो गए । कांग्रेस का छत्तीसगढ़ से सफाया हुआ है। इनके अनेक मंत्री हार गए । उन सब की हरकत जनविरोधी हो चुकी थी। सभी अकड़ में रहते थे और जनता से दूरी बनाकर चलते थे। इसलिए जनता ने उन्हें अपने से दूर कर दिया।

बहरहाल, कांग्रेस सरकार के पतन का लाभ अब छत्तीसगढ़ की जनता को होगा। अब यहां तुष्टिकरण की नीति नहीं चलेगी। धर्म विशेष के कुछ लोगों को हद से अधिक प्रोत्साहित करने की हरकतों पर विराम लगेगा। धर्मांतरण की गतिविधियों पर अंकुश लगेगा । बेशक पिछले पाँच वर्षों में कांग्रेस ने कुछ अच्छी योजनाएं शुरू की थीं, लेकिन वे योजनाएं भ्रष्टाचार की भेंट चढ़ गई। गोठान-गोबर-गोमूत्र घोटाले से लेकर पीएससी घोटाला आदि अनेक घोटाले सामने आते गए। (यह सूची काफी लंबी है) सत्ता से जुड़े अनेक लोग करोड़ों में खेलने लगे थे। यह सारी हरकत जनता के सामने निरंतर आती रही। नतीजा यह हुआ कि जनता ने अपना मानस बना ही लिया था कि %अब नहीं सहिबो,बदल के रहिबो%। और उसने बदल दिया। इसलिए अब भाजपा की नई सरकार का दायित्व होगा कि वह फूँक-फूँक कर कदम रखे। उसने जितने भी लोकलुभावन वादे किए हैं, उसे पूर्ण करने की दिशा में तत्काल बढ़ जाए । कोई बहाना नहीं चलेगा कि हम पाँच साल तक सरकार में रहेंगे इसलिए धीरे-धीरे सारे वादे पूरे होंगे। उन सारे वादों को पहले साल में ही पूर्ण करने की दिशा में कार्रवाई तो शुरू कर ही देनी चाहिए । कांग्रेस सरकार जब सत्ता में आई तो उसके ठीक पहले उसने हाथों में गंगाजल लेकर के कसम खाई थी कि हम सरकार में आते साथ ही किसानों का कर्ज माफ करेंगे, शराबबंदी लागू करेंगे। और भी बहुत कुछ कहा था। लेकिन उनके सारे वादे अधूरे रह गए। भारतीय जनता पार्टी को हिम्मत के साथ शराबबंदी का निर्णय करना चाहिए और इस निर्णय की भरपाई अपने दूसरे संसाधन बढ़ाकर करना चाहिए । भाजपा को जनता ने एक बार फिर सिरआँखों पर बिठाया है। इसलिए जनभावना का सम्मान करके उसे अपने सारे वादे पूरे करने चाहिए। यह लोकतंत्र है । जनता बहुत बारीकी के साथ जनप्रतिनिधियों को देखती है इसलिए जनता से डरना बहुत जरूरी है। उसका दिल जीतना भी जरूरी है। मध्यप्रदेश में भाजपा सरकार ने जनता का दिल लगातार जीतती रही। उसका ही नतीजा था कि वह लगातार सत्ता में बनी हुई है।

2023 की करारी हार से कांग्रेस को मिला सबक, भूपेश बघेल के नवरत्न हारे

रायपुर। 2023 की करारी हार कांग्रेस के लिए कई सबक एक साथ छोड़ गया। पहला सबक जो कांग्रेस को सियासत ने सिखाया वो ये कि राज्य की अस्मिता को लेकर पार्टी को जिंदा नहीं रखा जा सकता है। राज्य की अस्मिता पर राजनीति भी नहीं की जा सकती है। कांग्रेस ने ये दोनों भूल की। भूपेश बघेल ने खुद को छत्तीसगढ़ की अस्मिता से जोड़कर खुद को मजबूत बनाया पर पार्टी कमजोर होती चली गई। पार्टी आलाकमान भी ये मानती रही कि भूपेश हैं तो भरोसा है की तर्ज पर सब ठीक चल रहा है और योजनाएं देश में सबसे बेहतर हैं। जनता ने इस तिलिस्म को अपने वोटों से तोड़ दिया।

भूपेश बघेल की सरकार में 13 मंत्री थे। 13 मंत्रियों में से 9 नवरत्नों को हार का स्वाद चखना पड़ा। कांग्रेस से हारने वालों की फेहरिश्त इनती लंबी हो गई कि नतीजों के दिन कांग्रेस के नेता एक दूसरे से ये पूछने लगे, सब हार गए या फिर कोई जीता भी की नहीं। सन्नाटा मुख्यमंत्री के घर से लेकर दफ्तर तक रहा। मीडिया से हंसकर बात करने वाले नेता भी अंडरग्राउंड हो गए। कांग्रेस को सबसे पहले बुरी खबर चित्रकोट और दुर्ग से मिली, जहां उनके सबसे बड़े सिपहसालार दीपक बैज, ताम्रध्वज साहू चुनाव हार गए। दूसरा झटका लगा साजा से, जहां कद्दावर कृषि मंत्री रविंद्र चौबे और आरंग से मंत्री शिव डहरिया चारों खाने चित्त हो गए। तीसरा झटका लगा कोरबा में, जहां जयसिंह अग्रवाल चुनाव हार गए। चौथा सबसे बड़ा झटका तब लगा, जब मोहम्मद अकबर सियासी संग्राम में ढेर हो गए। हार का ये सिलसिला आखिरी सीट तक जारी रहा। बस्तर, सरगुजा, रायपुर और दुर्ग संभाग में लगा जैसे बीजेपी ने अपना बुलडोजर चला दिया हो।

सरकार के 9 मंत्री जो हारे- टीएस सिंहदेव, डिप्टी सीएम, अंबिकापुर से हारे। गुरु रुद्र कुमार,लोक स्वास्थ्य यांत्रिकी मंत्री, नवागढ़ से हारे। मोहम्मद अकबर,वन मंत्री कवर्धा से हारे। ताम्रध्वज साहू, गृहमंत्री, दुर्ग ग्रामीण से हारे। रविंद्र चौबे, कृषि मंत्री, साजा से हारे। अमरजीत भगत, खाद्य मंत्री, सीतापुर से हारे। जयसिंह अग्रवाल, राजस्व मंत्री, कोरबा से हारे। मोहन मरकाम, आदिवासी विकास मंत्री, कोंडागांव से हारे। शिवकुमार डहरिया, नगरीय प्रशासन मंत्री, आरंग से हारे।

चाचा बनाम भतीजा-पाटन की सीट पर चाचा बनाम भतीजा की लड़ाई सालों से चली आ रही है। पाटन की सीट पर 35 फीसदी साहू वोट और 30 फीसदी कुर्मी वोट हैं। ओबीसी वर्ग के दोनों वोटों पर भूपेश बघेल की बराबर पकड़ है। इस चुनाव में भूपेश बघेल जरुर जीत गए लेकिन उनके जितने भी ओबीसी सिपहसालार थे, वो हार गए। पूरा संभाग जो कभी तिरंगे के रंग में रंगा था, आज भगवामय हो गया है। बस्तर से लेकर रायपुर तक और सरगुजा से लेकर दुर्ग तक कांग्रेस बस कागजों में गिनती की रह गई है।

दावों का निकला दम- 2018 में जब भूपेश बघेल की सरकार बनी थी, उस वक्त से ही भूपेश ने कांग्रेस पर भरोसा है का नारा हटाकर भूपेश है तो भरोसा है का नारा गढ़ा। भूपेश बघेल का ये नारा फेल हो गया। साढ़े चार साल तक सत्ता में अकेले राज किया और फिर आखिरी के 6 महीनों के लिए सिंहदेव को आधी गद्दी की जिम्मेदारी दे दी। समझदार जनता ने इसे वादाखिलाफी समझा और कांग्रेस को हराकर बदला लिया। सियासी जानकारों का तो यहां तक कहना है कि पूरी हार की असली जिम्मेदारी भूपेश बघेल के कंधों पर रही।

भूपेश मजबूत हुए कांग्रेस कमजोर हुई- सियासी जानकारों की मानें तो पिछले पांच सालों में भूपेश पार्टी को अकेले लेकर चले। अपना नारा दिया, गढ़बो नवा छत्तीसगढ़। पांच सालों में भूपेश बघेल छत्तीसगढ़ और कांग्रेस के केंद्रीय नेतृत्व में मजबूत बनकर उभरे लेकिन कांग्रेस भीतर ही भीतर कमजोर रही थी, इसका पता न भूपेश को चला और ना ही पार्टी आलाकमान को। चुनावों के दौरान कका जिंदा है की पंचलाइन भूपेश ने दिया पर वो काम नहीं आई। छत्तीसगढ़ के जिस स्थानीय गौरव का आह्वान वो पांच साल करते रहे, वो आखिर में काम नहीं आया।

रियासत से सियासत का सफर- 2018 में कांग्रेस की सरकार बनने के वक्त से ही टीएस सिंहदेव की इच्छा सीएम बनने की थी। सिंहदेव के करीबी विधायक उनको गद्दी पर देखना चाहते थे। सिंहदेव की इस इच्छा को भूपेश बघेल ने साढ़े चार साल तक परवान पर चढ़ाए रखा और जब आखिरी के 6 महीने बचे तो डिप्टी सीएम बना दिया। नतीजों से पहले तक सिंहदेव इशारों ही इशारों में ये कह चुके थे कि इस बार केंद्रीय नेतृत्व अपने पुराने फैसले को सुधारे। केंद्रीय नेतृत्व कुछ सोचता, उससे पहले ही कांग्रेस का राजपाठ बीजेपी ने छत्तीसगढ़ से समेट दिया।

राजेश अग्रवाल ने जीती हाई प्रोफाइल सीट अंबिकापुर

अंबिकापुर। छत्तीसगढ़ में भाजपा ने जीत दर्ज की सरगुजा की 14 में से 14 सीट पर भाजपा ने जीत दर्ज की है। इस लहर में बड़े बड़े दिग्गज चुनाव हार गये। इनमें से एक नाम डिप्टी सीएम टीएस सिंहदेव का है। कभी उनके ही साथ रहने वाले राजेश अग्रवाल ने उन्हें चुनाव हरा दिया है।

छत्तीसगढ़ की हाई प्रोफाइल सीट अंबिकापुर में स्थिति अधर में लटकी गई थी। यहां 21 वें और आखिरी राउंड और पोस्टल वैलेट की गिनती के बाद डिप्टी सीएम टीएस सिंहदेव 137 वोट से चुनाव हार गये। लेकिन इसकी आधिकारिक पुष्टि निर्वाचन अधिकारियों ने नहीं की। इसके बाद पोस्टल वैलेट की री कार्उटिंग की गई। जिसके बाद ये बताया गया कि सिंहदेव 94 वोट से पीछे हो गये हैं। रात करीब 10 बजे फाइनल हुआ कि भाजपा प्रत्याशी राजेश अग्रवाल चुनाव जीत गये हैं। राजेश अग्रवाल ने कहा अंबिकापुर की जनता का आशीर्वाद मिला। पार्टी के सभी लोगों का सहयोग मिला। बहुत अच्छा लग रहा है। जीत के लिए पहले से आश्वस्त थे। अंबिकापुर में पेय जल की समस्या है। सड़क और हॉस्पिटल की हालत सुधारनी है।

अंबिकापुर विधानसभा से कुल 13 प्रत्याशियों ने चुनाव लड़ा। कांग्रेस से टीएस सिंहदेव को 90686 वोट, भाजपा से राजेश अग्रवाल को 90780 वोट, गोंडवाना गणतंत्र पार्टी से बालसाय कोर्राम को 6083, हमर राज पार्टी से रामनन्दन पैंकरा को 719, जनता कांग्रेस छत्तीसगढ़(जे) से अभ्यर्थी अब्दुल माजिद को 1193 मत मिले। राष्ट्रीय महान गणतंत्र पार्टी के सुजान बिंद को 288, भारतीय शक्ति चेतना पार्टी के संतोष विश्वकर्मा को 251, निर्दलीय अभ्यर्थी अनिल श्रीवास्तव रोटी पार्टी को 311, निर्दलीय अभ्यर्थी एस्तर खलखो को 352, क्रान्तिकुमार को 335, मीरा रवि को 563, मुकेश गोस्वामी को 867 और राकेश कुमार साहू को 1318 वोट मिले। कुल 193746 मत वैध पाये गये। 114 वोट रिजेक्ट हुये और नोटा में 2168 मत पड़े।

प्रदेश में नारी शक्ति का कमाल, भाजपा के कमबैक में महिलाओं का योगदान

मतदान के अंतिम दिनों में लाई गई महतारी वंदन योजना को भाजपा का मास्टर स्ट्रोक माना जा रहा

कोरबा। छत्तीसगढ़ में बीजेपी की सत्ता वापसी के लिए महिलाओं की अहम भूमिका रही। महिलाओं को गेम चेंजर माना जा रहा है। लेकिन पिछले पांच सालों में ऐसा क्या हुआ कि महिलाओं ने बीजेपी को जनाधार दिया। आईए आपको बताते हैं छत्तीसगढ़ के इस मिशन में किस पार्टी से कितनी महिला उम्मीदवारों को उतारा गया था।

वहीं कांग्रेस की यदि बात करें तो इस बार कांग्रेस ने 90 में से 18 सीटों पर महिला प्रत्याशियों को उतारा था।जिसमें से 10 सीटों पर महिलाएं जीती हैं।जबकि 8 सीटों पर महिलाओं को हार का सामना करना पड़ा।

बीजेपी ने 90 विधानसभा में से 15 सीटों पर महिला उम्मीदवारों को मैदान में उतारा था।जिसमें से 8 सीटों पर महिलाएं जीतीं। जबकि 7 सीटों पर हार का सामना करना पड़ा।

मीडिया ने परिणाम के बीच महिलाओं से बात की थी। बीजेपी समर्थित महिलाएं हो या कामकाजी महिलाएं सभी का एक तरह से मिला-जुला जवाब है। शराबबंदी का अधूरा वादा महिलाओं को याद है। जबकि मतदान के अंतिम दिनों में लाई गई महतारी वंदन योजना को बीजेपी का मास्टर स्ट्रोक माना जा रहा है।

बीजेपी ने मतदान के ठीक पहले अंतिम दिनों में महतारी वंदन योजना लॉन्च की। महिलाओं को हर महीने 1000 रुपए देने का वादा किया। बीजेपी कार्यकर्ता गली-मोहल्ले में भीड़ लगाकर फॉर्म भरवाने लगे। फॉर्म भरने के लिए मोहल्लों में महिलाओं की भीड़ उमड़ी। महिलाओं को लगा कि हर महीने 1000 रुपए के मान से सालाना 12000 मिलेंगे। यह बीजेपी का मास्टर स्ट्रोक था। किसानों कर्जमाफी का वादा करके कांग्रेस ने साधा था,लेकिन महिलाओं को भूल गई थी।इस बार महिलाओं को बीजेपी ने साधा।हालांकि बाद में कांग्रेस की गृहलक्ष्मी योजना आई,लेकिन तब तक काफी देर हो चुकी थी।

2018 में जब छत्तीसगढ़ में कांग्रेस की सरकार बनी। तब कांग्रेस ने शराबबंदी का वादा किया। महिलाओं ने कहा कि सरकार ने गंगाजल हाथ में लेकर शराबबंदी का वादा किया,लेकिन घर-घर शराब पहुंची। इसलिए उनकी हार होनी तय थी। झूठी कसम खाने के बाद शराबबंदी का वादा पूरा नहीं किया। महिला नेता संजूदेवी राजपूत कहती हैं कि महिलाएं आकर मुझसे पूछती थीं, कि शराबबंदी कब होगी। यह अधूरा वादा महिलाओं को याद है।

महिला नेत्री रुकमणी नायर रहती है कि 15 साल प्रदेश में बीजेपी की सरकार रही। इसके बाद एक बार लोगों ने 5 साल के लिए कांग्रेस को मौका दिया। इन्होंने इतना भ्रष्टाचार किया, महिलाओं को इतना उपेक्षित रखा की जनता ने इन्हें 5 साल में ही बदल दिया। कांग्रेस के राज में महिलाएं असुरक्षित थीं। उनके साथ होने वाले अपराध में भी बढ़ोतरी हुई थी।

छत्तीसगढ़ विधानसभा चुनाव 2023 में प्रदेश की 90 विधानसभाओं में से 50 विधानसभाओं में पुरुषों की तुलना में महिलाओं ने ज्यादा मतदान किया है। जिसमें भरतपुर-सोनहत, प्रतापपुर, रामानुजगंज, सामरी, लुण्ड्रा, अंबिकापुर, सीतापुर, जशपुर, कुनकुरी, पत्थलगांव, लैलूंगा, सारंगढ़, खरसिया, धर्मजयगढ़, रामपुर, पालीतानाखार, जैजैपुर, मरवाही, सरायपाली, बसना, खल्लारी, महासमुंद, बिलाईगढ, राजिम, बिंद्रानवागढ़, सिहावा, डोंडीलोहारा, गुंडरदेही और संजारी-बालोद विधानसभा क्षेत्रों में वोट डालने वाले महिला मतदाताओं की संख्या वोट डालने वाले पुरुष मतदाताओं की तुलना में अधिक है।

वहीं धमतरी, दुर्ग शहर, पंडरिया, कवर्धा, खैरागढ़, डोंगरगढ़, राजनांदगांव, डोंगरगांव, खुज्जी, मोहला-मानपुर, भानुप्रतापपुर, कांकेर, केशकाल, कोंडागांव, नारायणपुर, बस्तर, जगदलपुर, चित्रकोट, दंतेवाड़ा, बीजापुर और कोंटा विधानसभा क्षेत्रों में वोट डालने वाली महिला मतदाताओं की संख्या वोट डालने वाले पुरुष मतदाताओं की तुलना में अधिक है।

आपको बता दें कि छत्तीसगढ़ में हुए दो चरणों के मतदान में कुल 1 करोड़ 55 लाख 61 हजार 460 मतदाताओं ने वोट डाले। जिसमें 77 लाख 48 हजार 612 पुरुष और 78 लाख 12 हजार 631 महिला मतदाता शामिल हैं।

छह बार के विधायक रविंद्र चौबे को ईश्वर साहू ने दी पटखनी

■ दंगे में मरा किसान का बेटा, भाजपा ने उसी को दिया टिकट

बेमेतरा। छत्तीसगढ़ के बेमेतरा जिले की साजा सीट पर काफी रोचक मुकाबला देखने को मिला। यहां के साधारण किसान ईश्वर साहू ने छह बार के विधायक और मंत्री रविंद्र चौबे को हराकर चौंका दिया। दूसरे समुदाय से हिंसक झड़प में ईश्वर के बेटे की हत्या कर दी गई थी। इससे लोगों में आक्रोश था। जनभावनाओं को देखते हुए भाजपा ने ईश्वर को टिकट दिया था। भाजपा की इस जीत को बड़ी रणनीतिक सफलता के रूप में देखा जा रहा है। ईश्वर साहू ने कुल 101789 वोट हासिल कर पूर्व मंत्री रविंद्र चौबे को 5196 वोटों से पराजित किया है।

हिंसक झड़पों में ईश्वर साहू के बेटे भुवनेश्वर साहू की हुई थी हत्या

छत्तीगसढ़ के बेमेतरा जिले में आने वाली सीट साजा में इसी साल अप्रैल में सांप्रदायिक दंगे हुए थे। स्कूली मारपीट से शुरू हुई इस घटना ने जल्द ही सांप्रदायिक दंगों का रूप धर लिया था। इस घटना में दो मुस्लिम और एक हिंदू व्यक्ति की मौत हुई थी। दोनों पक्षों की तरफ से आगजनी की घटनाएं हुईं। घर जलाए गए। इन हिंसक झड़पों में भुवनेश्वर साहू की हत्या हुई। भाजपा ने भुवनेश्वर साहू के पिता ईश्वर साहू को टिकट दिया था। ईश्वर साहू लगातार वोट के बदले अपने बेटे के लिए इंसाफ देने की बात कहते रहे।

ईश्वर साहू की भावनात्मक अपील और साहू मतदाता रहे निर्णायक

राजनीतिक जानकार कहते हैं कि ईश्वर साहू भावनात्मक ढंग से यह चुनाव को लड़े। इस सीट पर करीब 60 हजार साहू वोटर हैं। वह निर्णायक होते रहे हैं। साहू समाज का एकमुश्त वोट ईश्वर साहू के पक्ष में पड़े इसके लिए भाजपा ने पूरी कोशिश की। साहू समाज के अलावा लोधी समाज बड़ी संख्या में इस सीट पर हैं। भाजपा की कोशिश रही थी कि सभी जातियों को ईश्वर के साथ खड़ा किया जाए। जानकार मानते हैं कि ईश्वर साहू को प्रत्याशी बनाकर भाजपा ने चुनावों को धार्मिक रंग देने की कोशिश की।

छत्तीसगढ़ प्रमुख समाचार

कुली ने जीता अंतरराष्ट्रीय पावरलिफ्टिंग में स्वर्ण

कोरबा। रेलवे स्टेशन कोरबा में कुली का काम करने वाले दीपक पटेल ने एक नया कीर्तिमान रच दिया है। उन्होंने नेपाल में आयोजित अंतरराष्ट्रीय पावर लिफ्टिंग स्पर्धा में 53 किलोग्राम बाडी वेट की कैटेगरी से भारत का प्रतिनिधित्व करते हुए गोल्ड मेडल जीतकर यह उपलब्धि अपने नाम किया। दीपक ने पावर स्पोर्ट्स एसोसिएशन आफ इंडिया का नेतृत्व करते हुए पांच देशों की प्रतियोगिता में यह कमाल किया है। इनमें भूटान, नेपाल, श्रीलंका, हांगकांग और भारत समेत पांच देशों के चैंपियन का गौरवपूर्ण खिताब हासिल किया है। वे इस प्रतियोगिता में देशभर से शामिल होने वाले कुल 12 और छत्तीसगढ़ से एक मात्र खिलाड़ी हैं। दीपक की जीत का सिलसिला कोई नया नहीं है। उन्होंने इससे पहले पश्चिम बंगाल के सिलीगुड़ी में फेडरेशन कप नेशन पावरलिफ्टिंग चैंपियनशिप में स्वर्ण पदक जीत चुके हैं। अब तक उन्होंने चार बार की राष्ट्रीय प्रतियोगिताओं में गोल्ड जीता।

जैजैपुर विधानसभा में भाजपा की हार की वजह

सक्ती। जैजैपुर विधानसभा में बीजेपी को हार का सामना करना पड़ा। जीत के लिए प्रत्याशी ने जी तोड़ मेहनत की। लेकिन नतीजा सकारात्मक नहीं रहा। अब पार्टी हार की वजहों को खंगालने में लगी है। जिससे की आने वाले समय में उस गलती की वजह से हार का सामना नहीं करना पड़े। बीजेपी ने इस बार टिकट जिलाध्यक्ष कृष्णकांत चंद्रा को दिया था। वे जिलाध्यक्ष भी हैं। लंबे वक्त से पार्टी में संगठन का काम देख रहे थे। कृष्णकांत चंद्रा के बारे में कहा जाता है कि, उनके पास राजनीतिक अनुभव का भंडार है। इस मामले में वो कांग्रेस के बालेश्वर साहू से काफी आगे हैं। बड़ा सवाल है कि, जब संगठन और संसाधन के साथ अनुभव भी था, तो चूक कहां हो गई। बीजेपी नेता ने बताया कि, पार्टी के कुछ अपने लोगों ने ही हार की कहानी लिखी। हालांकि कृष्णकांत चंद्रा ने कहा कि, वे इस बारे में पार्टी नेतृत्व से बात करेंगे। अभी दो दिन पहले ही बीजेपी के जिला पंचायत सदस्य गगन जयपुरिया पर भितरघात का आरोप लगाकर उनको संगठन के महामंत्री पद से हटाने का पत्र जारी हुआ था।

कांग्रेस के दुर्ग में भाजपा की सेंधमारी, 4 सीटों पर कब्जा

दुर्ग। छत्तीसगढ़ विधानसभा चुनाव 2023 में बीजेपी ने अप्रत्याशित बहुमत हासिल किया है। कांग्रेस का गढ़ माने जाने वाले दुर्ग जिले की छह विधानसभा सीटों में बड़ा उलेटफेर देखने को मिला है। दुर्ग जिले में कांग्रेस पार्टी को बड़ा झटका लगा है। दुर्ग की कुल 6 विधानसभा सीटों में से 4 सीटों पर बीजेपी ने जीत दर्ज की है, जबकि कांग्रेस को केवल 2 सीटें पर ही सफलता मिली है। दुर्ग जिले की दुर्ग शहर विधानसभा सीट पर भाजपा प्रत्याशी गजेन्द्र यादव, दुर्ग ग्रामीण विधानसभा सीट में भाजपा प्रत्याशी ललित चंद्राकर, वैशाली नगर विधानसभा सीट से भाजपा प्रत्याशी रिकेश सेन और अहिवारा विधानसभा सीट से भाजपा प्रत्याशी डोमनलाल कोर्सेवाड़ा ने जीत दर्ज की है। कांग्रेस की ओर से पाटन सीट पर सीएम भूपेश बघेल और भिलाई नगर विधानसभा सीट पर देवेंद्र यादव को ही सफलता मिली है। दुर्ग जिले की 06 विधानसभा सीटों पर चौंकाने वाले नतीजे सामने आए हैं। दुर्ग ग्रामीण से भाजपा प्रत्याशी ललित चंद्राकर ने कांग्रेस प्रत्याशी ताम्रध्वज साहू को 16042 के मतों से हराया।

अविश्वास प्रस्ताव पारित, पद से हटाई कोलियारी सरपंच

अभनपुर। ग्राम पंचायत कोलियारी(लखना) की सरपंच ममता देवांगन के खिलाफ अविश्वास प्रस्ताव पारित होने के बाद उन्हें पद से हटा दिया गया हैं। ग्राम पंचायत के पंचों ने एसडीएम अभनपुर जगन्नाथ वर्मा के समक्ष सरपंच देवांगन के खिलाफ अविश्वास प्रस्ताव के लिए आवेदन किया था। जिसे लेकर हुए मतदान में आज अविश्वास प्रस्ताव के पक्ष में 12 जबकि सरपंच ममता देवांगन के पक्ष में कुल 4 वोट पड़े। इसके बाद तहसीलदार ने सरपंच देवांगन को तत्काल प्रभाव से पद से अपदस्थ करते हुए उप सरपंच राजू यादव को कार्यवाहक सरपंच नियुक्त किया है। जानकारी के मुताबिक, ममता देवांगन के खिलाफ पंचों ने आवेदन में तर्क दिया था कि वह सभी सरपंच ममता देवांगन के काम से असंतुष्ट हैं। पिछले 6 महीने से सरपंच ने किसी प्रकार की कोई मीटिंग नहीं बुलाई है। इसके अलावा ढाई साल से आय-व्यय की जानकारी भी उन्हें नहीं दी जा रही है। पंचगणों द्वारा सचिव और सरपंच से आय-व्यय की जानकारी बार-बार पूछने पर भी गोलमटोल जवाब दिया जाता है।

खूंखार लकड़बग्घे का आतंक युवक पर किया हमला

जगदलपुर। केशकाल थाना क्षेत्र के अंतर्गत बेड़मा पटवारीपारा में दो लकडबग्घे ने एक युवक पर रविवार की शाम हमला कर दिया। घटना की जानकारी लगते ही मौके पर पुलिस टीम पहुंची और घायल को बेहतर उपचार के लिए अस्पताल ले गए। जहां उपचार के दौरान उसकी मौत हो गई। मामले के बारे में जानकारी देते हुए केशकाल थाना प्रभारी ने बताया कि बेड़मा पटवारीपारा में एक युवक पैदल जा रहा था। तभी अचानक दो लकड़बग्घे ने हमला कर घायल कर दिया। घटना के बाद घायल को अस्पताल में उपचार के लिए भर्ती किया गया। जहां उपचार के दौरान मौत हो गई। मृतक व्यक्ति के पास किसी भी प्रकार के दस्तावेज नहीं मिले हैं। जिससे इसकी पहचान नहीं हो पा रही है। जिसके बाद केशकाल पुलिस ने मृतक के फोटो को सोशल मीडिया ग्रुप में शेयर करते हुए मृतक के बारे में जानकारी जुटाई है। मृतक की फोटो को अधिक से अधिक लोगों तक पहुंचाने की बात भी कही है। अगर कोई मृतक व्यक्ति को पहचान लेता है तो इसकी सूचना पुलिस को दे।

बेमेतरा जिले की तीनों विधानसभा सीटों पर भाजपा का कब्जा

बेमेतरा। बेमेतरा जिला के तीनों विधानसभा साजा, बेमेतरा और नवागढ़ विधानसभा पर भाजपा ने जीत का परचम लहराया है। बेमेतरा जिले की तीनों सीटों साजा से मंत्री रविंद्र चौबे को बीजेपी के ईश्वर साहू, बेमेतरा से दो बार के विधायक आशीष छाबड़ा को बीजेपी के दीपक साहू और नवागढ़ सीट से मंत्री गुरु रूद्र कुमार को दयालदास बघेल ने हराया है। इन तीनों सीटों पर भूपेश कैबिनेट के दो मंत्रियों और कांग्रेस विधायक को हार का समना करना पड़ा है।

बेमेतरा जिले के साजा से प्रदेश के कृषि मंत्री रविंद्र चौबे को ईश्वर साहू ने मात दी है। वहीं कैबिनेट मंत्री गुरु रुद्र कुमार को उनके ही चेले और पूर्व कैबिनेट मंत्री दयाल दास बघेल ने हरा दिया है। बेमेतरा विधानसभा में युवाओं के बीच हुई टक्कर में भाजपा के दीपेश साहू ने कांग्रेस प्रत्याशी आशीष छाबडा ने शिकस्त दी है। चुनाव परिणाम के बाद बेमेतरा कलेक्टर

और जिला निर्वाचन अधिकारी पीएस एल्मा ने तीनों विधानसभा से जीते प्रत्यशियों को जीत का प्रमाण पत्र सौंपा है।

प्रदेश की सबसे हाईप्रोफाइल सीट मानी जानी वाली साजा विधानसभा सीट पर बेहद दिलचस्प मुकाबला हुआ। जहां प्रदेश भर के लोगो की नजर बनी हुई थी। प्रदेश के कद्दावर मंत्री रविंद्र चौबे को बिरनपुर हमले में शहीद भुनेश्वर साहू के पिता ईश्वर साहू ने 5308 मतों से मात दी है। ईश्वर साहू ने चुनाव प्रचार के दौरान लोगों से वोट के साथ भुनेश्वर की हत्या को लेकर न्याय की अपील की थी। जिसके बाद ईश्वर साहू चौबे के गढ़ को भेदने में कामयाब रहे।

गौरलतब है कि साजा विधानसभा कांग्रेस का गढ़ मानी जाती है। जहां से रविंद्र चौबे के मां और भाई भी विधायक रह चुके हैं। चौबे की जीत की परंपरागत सीट माने जाने वाली सीट पर ईश्वर साहू ने जीत दर्ज की है। मंत्री रविन्द्र चौबे को दूसरी बार साजा की जनता ने नकारा है। इससे पहले लाभचंद बाफना ने उन्हें हाराया था। मंत्री चौबे बिरनपुर हिंसा के बाद पीड़ित भुनेश्वर साहू के घर नहीं गए, जिसे लेकर हिंदुत्व विरोधी होने का उन पर आरोप लगा। जिसके बाद लोगों ने ईश्वर को सहानुभूति के चलते जमकर वोट दिया और चुनाव जीता दिया है।

नवागढ़ विधानसभा सीट में संसदीय सचिव गुरुदयाल सिंह बंजारे को टिकट नहीं देना और बाहरी प्रत्याशी अहिवारा विधायक गुरु रुद्र कुमार को टिकट देना कांग्रेस के लिए भारी पड़ गया। कांग्रेस प्रत्याशी मंत्री गुरुरुद्र कुमार को 15 हजार मतों से हार का सामना करना पड़ा है। इससे पहले 2018 के विधानसभा चुनाव में कांग्रेस के गुरुदयाल सिंह बंजारे ने 33 हजार मतों से जीत दर्ज की थी। तब उन्हें संसदीय सचिव बनाया गया था। लेकिन पार्टी ने उन्हें 2023 में टिकट ही नहीं दिया और गुरु रुद्र कुमार को मैदान में उतर दिया। जिसका खामियाजा इस चुनावी नतीजों में साफ दिखाई दे रहा है।

नवागढ़ विधानसभा सीट से भाजपा प्रत्याशी दयाल दास बघेल ने जीत दर्ज की है। इससे पहले वह 2003, 2008 और 2013 में तीन बार क्षेत्र के विधायक रह चुके हैं। दयालदास की इस क्षेत्र में अच्छी पकड़ होने के साथ ही बेदाग छवि है। गांव-गांव में लोगों से सीधा सम्पर्क होने का उन्हें फायदा मिला है। 2018 में वे कर्जा माफी की आंधी में उड़ गए थे, लेकिन इस बार उन्होंने फिर से वापसी की है।

बेमेतरा विधानसभा क्षेत्र से विधायक आशीष छाबडा की छवि बेहतर और मिलनसार छवि है। इसके बावजूद वे चुनाव हार गए। बेमेतरा विधानसभा चुनाव में ओबीसी कार्ड हावी रहा और भाजपा ने मास्टर स्ट्रोक खेलते हुए बेमेतरा विधानसभा का सीट पर गहन मंथन कर बाद ओबीसी प्रत्याशी और नौकरी छोड़कर भाजपा पार्टी ज्वाइन करने वाले दीपेश साहू पर दांव खेला। जिसका फायदा नतीजों में साफ दिखाई दे रहा है। दिपेश साहू ने कांग्रेस के प्रत्याशी आशीष छाबडा को 9137 मतों से हराया है। जिन्हें ओबीसी मतदाताओ का भरपूर साथ मिला है।

अंबिकापुर जिले की तीनों सीटों पर भाजपा की जीत

अंबिकापुर। छत्तीसगढ़ विधानसभा चुनाव 2023 में बीजेपी ने प्रचंड बहुमत हासिल किया है। बीजेपी की इस जीत में सरगुजा संभाग की 14 सीटों का बड़ा योगदान रहा है। सरगुजा संभाग की 14 सीटों पर क्लीन स्वीप किया है, जिसमें अंबिकापुर की तीनों सीटें भी शामिल हैं। ये परिणाम अप्रत्याशित और इतिहास को दोहराने वाले हैं, क्योंकि जब 2018 में प्रदेश में कांग्रेस ने सरकार बनाई, तब भी सरगुजा की 14 सीटें कांग्रेस के पास गई थी। अंबिकापुर जिले की तीनों विधानसभा में सबसे पहले लुंड्रा विधानसभा सीट से भाजपा प्रत्याशी प्रबोध मिंज ने जीत दर्ज की। भाजपा ने आजादी के बाद पहली बार सीतापुर सीट जीतने में सफलता हासिल की है। विधानसभा लुण्ड्रा से कुल 12 उम्मीदवार मैदान में थे।

मोदी की गारंटी ने बदला छत्तीसगढ़ियों का मन! कांग्रेस की करारी हार

भाजपा ने छत्तीसगढ़ की 90 सीटों में से 54 विधानसभा सीटें अपने नाम की, कांग्रेस को सिर्फ 35 सीटें मिली

रायपुर। छत्तीसगढ़ विधानसभा चुनाव से पहले कांग्रेस और भाजपा दोनों ने लोकलुभावन योजनाओं से किसानों, महिलाओं और गरीबों को लुभाने की पुरजोर कोशिश की। लेकिन जनता ने कांग्रेस से ज्यादा भाजपा के वादों और मोदी की गारंटी पर भरोसा जताया। जिससे भाजपा ने छत्तीसगढ़ विधानसभा चुनाव 2023 में बड़ी जीत पाई। भाजपा ने छत्तीसगढ़ की 90 सीटों में से 54 विधानसभा सीटें अपने नाम की जबकि साल 2018 में 68 सीटें जीतकर सरकार बनाने वाली कांग्रेस को सिर्फ 35 सीटें मिली। गोंडवाना गणतंत्र पार्टी ने अपना पारंपरिक सीट पाली तानाखार पर विजय हासिल की।

कांग्रेस और भाजपा दोनों ने अपने घोषणापत्र में समाज के विभिन्न वर्गों को रियायतें देने के बड़े बड़े वादे किए। चुनाव से काफी पहले कांग्रेस ने घोषणा की थी कि राज्य इस खरीफ सीजन में किसानों से प्रति एकड़ 20 क्विंटल धान खरीदेगी। चुनाव प्रचार के दौरान कांग्रेस ने किसानों को ऋण माफी का वादा किया, जो 2018 में भी किया गया था। जैसे ही चुनाव अभियान ने गति पकड़ी, कांग्रेस ने कई और वादे किए। जिनमें राजीव गांधी भूमिहीन किसान न्याय योजना के तहत भूमिहीन मजदूरों को दी जाने वाली वार्षिक वित्तीय सहायता को 7,000 रुपये से बढ़ाकर 10,000 रुपये करना, 3200 रुपये क्विंटल में धान खरीदी, केजी से पीजी तक मुफ्त शिक्षा देना शामिल है। साथ ही 200 यूनिट तक मुफ्त बिजली की भी घोषणा कांग्रेस ने की। इसके साथ ही महिलाओं को घरेलू गैस सिलेंडर पर 500 रुपये की सब्सिडी, 6,000 रुपये में प्रति बैग तेंदू पत्ते की खरीदी और तेंदू पत्ता

संग्राहकों को 4000 रुपये का वार्षिक बोनस, गरीबों को 10 लाख रुपये तक का मुफ्त इलाज की घोषणा, सड़क दुर्घटना में पीड़ितों को सहायता राशि और स्व-सहायता समूहों का ऋण माफी की घोषणा कांग्रेस ने की।

2018 में भाजपा की करारी हार के पीछे चुनावी विश्लेषकों ने पार्टी के कमजोर घोषणा पत्र को कारण बताया। इससे सबक लेते हुए भाजपा ने साल 2023 के विधानसभा चुनाव के लिए मजूबत घोषणा पत्र बनाया। भाजपा ने इस बार अपने घोषणापत्र में छत्तीसगढ़ के लिए मोदी की गारंटी 2023 नाम से लोकलुभावन वादे किए। भाजपा के वादों में प्रति एकड़ 21 क्विंटल धान की खरीद 3100 रुपये प्रति क्विंटल, महतारी वंदन योजना के तहत विवाहित महिलाओं को 12000 रुपये की वार्षिक वित्तीय सहायता, पीएम आवास योजना के तहत 18 लाख घरों का निर्माण, तेंदू पत्ता की खरीद 5500 रुपये शामिल है। प्रति मानक बोरा और पत्ता संग्राहकों को 4500 रुपये का बोनस और भूमिहीन खेत मजदूरों को 10000 रुपये की वार्षिक सहायता शामिल है। गरीब परिवारों की महिलाओं को 500 रुपये में रसोई गैस सिलेंडर, कॉलेज जाने के लिए छात्रों को मासिक यात्रा भत्ता, लड़कियों के जन्म पर बीपीएल (गरीबी रेखा से नीचे) परिवारों को 1।50 लाख रुपये का आश्वासन, साथ ही अयोध्या में राम मंदिर का फ्री दर्शन कराना भाजपा के लोकलुभावन वादों में से एक था।

अपने लोकलुभावन वादों के साथ भाजपा सरकार में आ तो गई लेकिन अब पार्टी के पास चुनौती है अपने सभी वादों को पूरा कर हर वर्ग को खुश करने की। आने वाले कुछ महीनों में लोकसभा चुनाव है। साल 2019 के लोकसभा चुनावों में भाजपा ने छत्तीसगढ़ में 11 सीटों में से 9 सीटें हासिल की थी। लेकिन इस बार देखना होगा कि भाजपा अपना रिकॉर्ड कायम रख पाती है या नहीं।

पार्टी को यह चिंतन करना पड़ेगा कि सारे सर्वे भी फेल हुए और हम भी नहीं भांप पाए: टीएस

अंबिकापुर से विधानसभा चुनाव हारने के बाद छत्तीसगढ़ के पूर्व उप मुख्यमंत्री व कांग्रेस नेता टीएस सिंह देव ने कहा पार्टी को यह चिंतन करना पड़ेगा कि सारे सर्वे भी फेल हुए और हम भी नहीं भांप पाए, हमें लग रहा था कि कांग्रेस की सरकार ज़रूर बनेगी... काम भी किया तभी हमें कुछ वोट मिले और क्या नहीं किया जिस कारण से वोट नहीं मिले... इस बार कांग्रेस का वोट प्रतिशत उतना ही रहा लेकिन भाजपा का वोट प्रतिशत बढ़ा है। उन्होंने कहा कि मध्य प्रदेश में भाजपा की ऐसी जीत होगी इसकी हमें उम्मीद नहीं थी, राजस्थान में हर 5 वर्ष में सरकार बदलती है, तेलंगाना संतोष का विषय रहा। छत्तीसगढ़ में सरकार बनने की पूरी बात थी, नुकसान छत्तीसगढ़ में हुआ है।

छत्तीसगढ़ में अगला मुख्यमंत्री कौन ?

रायपुर। छत्तीसगढ़ में बीजेपी की जीत के बाद अब सभी की निगाहें इस बात पर टिकी है कि प्रदेश में अगला सीएम कौन होगा।क्योंकि बीजेपी अबकी बार ऐसे चेहरे को सीएम पद की कुर्सी पर बिठाएगी,जो पूरे पांच साल तक बिना किसी विवाद के ना सिर्फ सरकार चलाए,बल्कि संगठन को भी साथ लेकर चले।आईए आपको बताते हैं कि जब सीएम पद को लेकर बीजेपी के दिग्गजों से बात की गई तो उन्होंने क्या कहा। पूर्व सीएम रमन सिंह ने छत्तीसगढ़ की जनता को इस जीत के लिए बधाई दी है। रमन सिंह ने कहा कि बीजेपी ने 15 साल तक छत्तीसगढ़ में शासन किया,लेकिन किसी भी तरह का घोटाला या आरोप सरकार पर नहीं लगा।लेकिन कांग्रेस ने सत्ता में आने के बाद भ्रष्टाचार और तुष्टिकरण की राजनीति शुरु की।जिसका खामियाजा उन्हें भुगतना पड़ा।

रमन सिंह ने कहा छत्तीसगढ़ की इस नई सरकार में हमारे लिए पहली चुनौती अपने घोषणापत्र में किए गए वादों को पहली कैबिनेट से ही लागू करना होगा। फिर पीएम मोदी की दी गई गारंटी और हमारी पार्टी के वादों को प्राथमिकता दी जाएगी। बीजेपी के सत्ता में आने के बाद पूरी प्रक्रिया बदल जाती है। अगर पार्टी की मंशा और नीति अच्छी है तो भ्रष्टाचार की कोई गुंजाइश नहीं है। वहीं कांग्रेस की हार पर प्रदेशाध्यक्ष अरुण साव ने कहा कि कांग्रेस के भ्रष्टाचारी कुशासन का अंत हो गया है। 5 साल की भय और आतंक की सरकार का अंत प्रदेश की जनता ने किया है। प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी के प्रति लोगों का भरोसा और उनकी गारंटी पर जनता ने भरोसा जताया।भारतीय जनता पार्टी के लाखों कार्यकर्ताओं ने दिन रात मेहनत करके बीजेपी के झोली में जीत डाली है। वहीं ओपी चौधरी ने प्रदेश की सबसे बड़ी जीत को लेकर जनता को धन्यवाद कहा।ओपी चौधरी ने कहा कि वो भरोसे और विश्वास के साथ जनता की सेवा करेंगे। साथ ही साथ जब ओपी चौधरी से सीएम की रेस में होने का सवाल पूछा गया तो उन्होंने इसके लिए खुद को काफी छोटा बताया है। ओपी चौधरी ने कहा छत्तीसगढ़ के इतिहास का सबसे बड़ा जनादेश रायगढ़ की जनता ने मुझको आशीर्वाद के रूप में दिया है। मैं एक छोटा नेता हूं।छत्तीसगढ़ में मुझसे भी बड़े-बड़े नेता हैं।इसलिए मुझसे ऐसा बड़ा सवाल ना करें। ओपी चौधरी 2005 बैच के छत्तीसगढ़-कैडर के आईएएस अधिकारी थे। यूपीए सरकार में 2011-12 के लिए लोक प्रशासन में उत्कृष्टता पुरस्कार में प्रधानमंत्री पुरस्कार मिला था।आईएएस अधिकारी से बीजेपी नेता बने ओ।पी। चौधरी ने छत्तीसगढ़ की रायगढ़ सीट पर जीत हासिल की है।उन्होंने कांग्रेस के प्रकाश शक्राजीत नाइक को 64,000 से अधिक वोटों से हराया है।ओपी चौधरी को केंद्रीय गृह मंत्री अमित शाह का करीबी माना जाता है। 2018 में बीजेपी में शामिल हुए।रायगढ़ जिले की खरसिया विधानसभा सीट से चुनाव लड़े, लेकिन हार गए।

संक्षिप्त समाचार

छत्तीसगढ़ में भाजपा के नए विधायकों की बैठक स्थगित, माथुर से होनी थी चर्चा

रायपुर। छत्तीसगढ़ विधानसभा चुनाव में भाजपा ने प्रचंड बहुमत के साथ जीत हासिल की है। बीजेपी ने 5 साल के बाद फिर से वापसी की है। छत्तीसगढ़ में जीत के बाद सोमवार को विधायक दल की बैठक सुबह 11 बजे आहूत की गई थी। बैठक भाजपा प्रदेश कार्यालय कुशाभाऊ ठाकरे परिसर में होने वाली थी। जिसे स्थगित किया गया है। सभी जीते हुए प्रत्याशियों के साथ चर्चा करने के लिए भाजपा प्रदेश प्रभारी ओम माथुर और सहप्रभारी नितिन नवीन की मौजूदगी में यह बैठक बुलाई गई थी। लेकिन इस बैठक को स्थगित कर दिया गया है। वहीं भाजपा की ओर से बैठक स्थगित होने की वजह सामने नहीं आई है।

पंडरिया की जनता की मांगों को सबसे आगे रखूंगी : भावना बोहरा

पंडरिया। पंडरिया विधानसभा में इस बार जनता ने कांग्रेस के साथ ही अन्य पार्टियों के द्वारा जारी घोषणा पत्र को नकारते हुए भाजपा की भावना बोहरा को अपना विधायक चुन लिया है। जीत के बाद भावना ने पत्रकारों से चर्चा करते हुए कहा कि पांच साल और 15 साल का कार्यकाल देखा है। जनता को वचन देते हुए कहा कि विधानसभा में वे पंडरिया की जनता की मांगों को सबसे आगे रखेंगी और पिछली सरकार के द्वारा अधूरे छोड़े हुए कार्य को वे जल्द शुरु कराएंगी।

जोगी, बसपा का बंधा बस्ता

रायपुर। विधानसभा चुनाव संपन्न होने के बाद जो परिणाम आए वे चौकाने वाले रहे। भारतीय जनता पार्टी ने जहां 5 वर्षों बाद वापसी की तो वहीं दूसरी ओर छत्तीसगढ़ की जनता ने जनता जोगी कांग्रेस और बसपा का बस्ता बांध दिया। हालांकि इन दोनों के अलावा आप भी अपनी शक्ति का एहसास कराने का दंभ भर रही थी लेकिन जनता ने उसे भी नहीं बख्शा। इन तीनों ही पार्टियों के एक भी प्रत्याशी चुनावी होड़ में कहीं नजर नहीं आया। मतगणना के बाद जो आंकड़े सामने आए है उनमें भारतीय जनता पार्टी को सबसे अधिक 46.27 प्रतिशत वोट मिले, 42.23 प्रतिशत के साथ कांग्रेस दूसरे स्थान पर रही और 2.5 प्रतिशत के साथ बीएसपी तीसरे स्थान पर रही। जनता जोगी कांग्रेस 1.23 प्रतिशत वोटों के साथ चौथे स्थान पर रही, आप को महज 0.93 प्रतिशत वोट ही मिली।

आदिवासी बहुल सरगुजा और बस्तर संभाग में भाजपा की वापसी, 26 में से 22 सीटें जीतीं

रायपुर। छत्तीसगढ़ विधानसभा चुनाव 2023 में एक बार फिर अप्रत्याशित नतीजे सामने आये हैं। तमाम एग्जिट पोल्स को गलत साबित करते हुए बीजेपी ने छत्तीसगढ़ में प्रचंड हुमत हासिल की है। बीजेपी ने प्रदेश की 90 सीटों में से 54 सीटों पर जीत हासिल किया है। जबकि कांग्रेस 35 सीटों पर विजयी रही। गोंडवाना गणतंत्र पार्टी 01 सीट जीतने में कामयाब रही। इसके साथ ही बीजेपी ने छत्तीसगढ़ के दो आदिवासी बहुल संभागों सरगुजा और बस्तर की 26 विधानसभा सीटों में 22 सीटों पर जीत दर्ज की है।

बस्तर संभाग में 12 सीटें हैं, जिनमें से 11 एसटी के लिए आरक्षित है। 2018 के चुनावों में कांग्रेस ने इन 12 सीटों में से 11 सीटें जीती थीं, जबकि भाजपा केवल दंतेवाड़ा में जीतने में सफल रही थी। वहीं कांग्रेस ने सरगुजा संभाग में अनुसूचित जनजाति के लिए आरक्षित नौ सहित सभी 14 सीटें जीती थीं। लेकिन 2023 के चुनावी नतीजों के बाद भारतीय जनता पार्टी ने इन दोनों संभागों को कांग्रेस से छीन लिया है। बस्तर और सरगुजा की 26 में से 22 सीटों पर बीजेपी ने शानदार जीत हासिल किया है। कांग्रेस ने छत्तीसगढ़ विधानसभा चुनाव 2018 में 90 सदस्यीय विधानसभा में 68 सीटों पर जीत दर्ज की थी। जिसके बाद 15 साल से सत्ता में बैठी भाजपा की रमन सरकार बुरी तरह हार गई। बीजेपी केवल 15 सीटें जीत

सकी थी। कांग्रेस की इस शानदार जीत में बस्तर संभाग और सरगुजा संभाग की सीटों का बड़ा योगदान था। 2023 के चुनावी नतीजे रविवार को घोषित किए गए। इन नतीजों में भाजपा ने सरगुजा संभाग की सभी 14 सीटें जीत ली हैं। जिनमें बीजेपी ने अंबिकापुर, मनेंद्रगढ़, बैकुंठपुर, प्रेमनगर, प्रतापपुर, रामानुगंज, सामरी, लुंड्रा, सीतापुर, जशपुर, कुनकुरी, भटगांव, भरतपुत-सोनहत और पत्थलगांव सीट से जीत हासिल की है। कांग्रेस ने प्रतापपुर, सामरी, रामानुगंज और मनेंद्रगढ़ से अपने मौजूदा विधायकों को टिकट नहीं दिया था, ये सभी चार सीटें कांग्रेस हार गई है। अंबिकापुर में कांग्रेस के दिग्गज नेता और उप मुख्यमंत्री टीएस सिंहदेव भाजपा के राजेश अग्रवाल से 94 वोटों के मामूली अंतर से हार गए। कांग्रेस के वरिष्ठ आदिवासी नेता और मंत्री अमरजीत भगत भी सीतापुर सीट पर भाजपा के पूर्व सीआरपीएफ कर्मी राम कुमार टोप्पा से 17160 वोटों के अंतर से हार गए। जबकि भाजपा सांसद गोमती साय ने पत्थलगांव में कांग्रेस के रामपुकार सिंह को 255 वोटों से हराया है। भरतपुर-सोनहत सीट पर बीजेपी की वरिष्ठ नेता और केंद्रीय मंत्री रेणुका सिंह ने कांग्रेस प्रत्याशी गुलाब सिंह कमरो को 4919 वोटों से हरा दिया है। 2023 चुनाव में बस्तर संभाग में कांग्रेस सिर्फ चार सीटें जीत पाई है। जबकि बीजेपी ने अंतागढ़, कांकेर, केशकाल, कोंडागांव, जगदलपुर, चित्रकोट, नारायणपुर और दंतेवाड़ा सीट पर जीत हासिल की है। वहीं बस्तर में जीतने वाले कांग्रेस के चार उम्मीदवार कवासी लखमा (कोंटा) और विक्रम मंडावी (बीजापुर), लखेश्वर बघेल (बस्तर) और सावित्री मंडावी (भानुप्रतापपुर) हैं। छत्तीसगढ़ कांग्रेस प्रमुख बैज भी चित्रकोट सीट पर भाजपा के विनायक गोयल से 8,370 वोटों से हार गए, जबकि मोहन मरकाम को कोंडागांव में बीजेपी की लता उसेंडी से 18,572 वोटों के अंतर से हार का सामना करना पड़ा।

मुख्यमंत्री बनना चाहते थे सिंहदेव, विधायक भी नहीं बन सके, 94 वोट से हारे

रायपुर। छत्तीसगढ़ में सत्तारूढ़ कांग्रेस को बड़ा झटका लगा है। रविवार को घोषित चुनाव परिणामों में उसे हार का सामना करना पड़ा है। इसके साथ ही राज्य में उपमुख्यमंत्री रहे वरिष्ठ नेता टीएस सिंह देव सहित उसके नौ मंत्री अपनी सीटें हार गए। सिंह देव को भाजपा के राजेश अग्रवाल से 94 वोटों से हराया है। सिंह देव पार्टी के उन दिग्गज नेताओं में से एक थे जिन पर कांग्रेस इस चुनाव में भरोसा कर रही थी। 2018 के छत्तीसगढ़ विधानसभा चुनाव में, श्री देव ने भाजपा के अनुराग सिंह देव को 39,624 मतों के अंतर से हराकर यह सीट जीती थी।

अंबिकापुर में मुख्यालय वाले सरगुजा के वर्तमान महाराजा देव ने अंबिकापुर निर्वाचन क्षेत्र से चुनाव लड़ा। वह 2018 में सीएम पद के बड़े दावेदार थे। कई भाजपा नेताओं ने वापसी की, भाजपा के लिए एक आश्चर्यजनक जीत ईश्वर साहू की थी, जो एक किसान थे, जिन्हें इस साल बेमेतरा जिले में एक

सांप्रदायिक घटना में उनके बेटे की हत्या के बाद भाजपा ने न्याय के प्रतीक के रूप में टिकट दिया था। साहू ने सात बार के विधायक और मंत्री रवींद्र चौबे को हराया।

सिंह देव और चौबे के अलावा, अन्य मंत्री जो इसमें शामिल नहीं हो सके वे हैं- मोहम्मद अकबर, ताम्रध्वज साहू (गृह मंत्री), अमरजीत भगत, शिव कुमार डहरिया, गुरु रुद्र कुमार, मोहन मरकाम और जयसिंह अग्रवाल। दूसरी बड़ी क्षति नए प्रदेश कांग्रेस कमेटी प्रमुख (पीसीसी) दीपक बैज की है, जो लोकसभा सदस्य हैं, जो चित्रकोट से हार गए। संयोग से, बैज ने 2018 में सीट जीती थी लेकिन 2019 में लोकसभा चुनाव लड़ने के लिए इसे खाली कर दिया। चार बार के विधायक अकबर, जिन्होंने कवर्धा सीट 59,000 से अधिक वोटों के रिकॉर्ड अंतर से जीती थी, कवर्धा में 2021 की सांप्रदायिक हिंसा के मुख्य आरोपियों में से एक, भाजपा के विजय शर्मा से हार गए। शर्मा 39,592 वोटों से जीते।

एक और आश्चर्यजनक जीत केंद्रीय रिजर्व पुलिस बल (सीआरपीएफ) के पूर्व जवान रामकुमार टोप्पो की थी, जिन्होंने मंत्री अमरजीत भगत को सीतापुर से हराया। इस सीट पर 2003 में राज्य के गठन के बाद पहली बार कांग्रेस हारी है। इसी तरह, कांग्रेस 2003 के बाद पहली बार गोंडवाना गणतंत्र पार्टी (जीजीपी) से पाली तानाखार सीट हार गई।

कर्जमाफी जैसी रेवड़ियां बांटने निकली कांग्रेस को प्रदेश की जनता ने नकारा

रायपुर। कर्जमाफी जैसी रेवड़ियां बांटकर मतदाताओं का भरोसा जीतने निकली कांग्रेस को जोर का झटका लगा है। मुख्यमंत्री भूपेश बघेल और कांग्रेस नेताओं को यही भरोसा था कि मतदाताओं के आगे रेवड़ियों की झड़ी लगाकर वे भाजपा की किलेबंदी को भेद लेंगे। मगर, कमजोर रणनीति के चलते भाजपा की ओर से उठाए गए भ्रष्टाचार, बेरोजगारी, विकास, हिंदुत्व और धर्मांतरण जैसे मुद्दे दरकिनार करते गए। यही नहीं, चुनाव जैसे नाजुक दौर में भी पार्टी सत्ता और संगठन के बीच तालमेल बैठाने में नाकामयाब साबित हुई।

'मोदी की गारंटी' के जरिये भाजपा खुद को कांग्रेस से बेहतर विकल्प साबित करने में कामयाब हुई। पार्टी की इस सफलता के पीछे संघ की भी सक्रिय भूमिका रही। पिछले चुनाव में शहरी इलाकों तक सीमित हुई पार्टी को गांवों में बूथ स्तर तक मजबूती दी। छत्तीसगढ़ में इस बार महिला मतदाताओं की संख्या भी पुरुषों की तुलना में लगभग सवा लाख अधिक थी।

इसे देखते हुए पार्टी ने मध्यप्रदेश की लाडली बिटिया की तर्ज पर महतारी वंदन योजना के तहत सालाना 12 हजार रुपये की गारंटी का वादा कर महिलाओं मतदाताओं को साधा। महिलाओं को इस योजना से भावनात्मक रूप से जोड़ने के लिए उनके

फार्म भी भरवाए। शराबबंदी को लेकर कांग्रेस की वादाखिलाफी से पहले से नाराज महिलाओं ने भी इसे हाथोंहाथ लिया। हालांकि, दूसरे चरण के मतदान से ठीक पहले कांग्रेस ने मातृवंदन के मुकाबले गृहलक्ष्मी योजना के तहत महिलाओं को सालाना 15 हजार रुपये देने का वादा तो किया, पर तब तक बहुत देर हो चली थी।

प्रदेश में भाजपा की प्रचंड विजय पर हमारे नेता प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी के अथक परिश्रम और कुशल नेतृत्व के लिए हृदय से आभारी हूं। आज हमारे संकल्प पत्र 'मोदी की गारंटी' और प्रधानमंत्री मोदी समेत केंद्रीय नेताओं के वादों पर जनता ने विश्वास जताकर विजय तिलक किया है। प्रधानमंत्री के मार्गदर्शन में यह जीत छत्तीसगढ़ के एक-एक व्यक्ति की जीत है।

छत्तीसगढ़ में सत्ता की चाबी माने जाते हैं आदिवासी सीट, भाजपा ने कैसे किया कब्जा

जया भारती

छत्तीसगढ़ में सत्ता की चाबी माने जाने वाले आदिवासी सीटों पर भारतीय जनता पार्टी (भाजपा) ने इस बार पिछले चुनाव के मुकाबले बेहतर प्रदर्शन किया है और 29 में 17 आदिवासी सीट जीत ली है। चुनाव विश्लेषकों के मुताबिक, आदिवासी इलाकों में प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी, केंद्रीय गृह मंत्री अमित शाह और पार्टी प्रमुख जेपी नड्डा की रैलियां, आदिवासी इलाकों से पार्टी की दो परिवर्तन यात्राओं की शुरुआत और चुनाव पूर्व वादों ने भाजपा के पक्ष में काम किया है। छत्तीसगढ़ की 90 सदस्यीय विधानसभा में 29 सीटें अनुसूचित जनजाति वर्ग के लिए आरक्षित हैं। राज्य की लगभग 32 फीसदी आबादी आदिवासियों की है। कांग्रेस ने 2018 के विधानसभा चुनाव में 25 आदिवासी सीटों पर जीत हासिल की थी। इस बार यह घटकर 11 रह गई। भाजपा ने 2018 में अपनी संख्या तीन से बढ़ाकर 17 कर ली है, जबकि एक सीट गोंडवाना गणतंत्र पार्टी को मिली है।

चुनाव विश्लेषक कृष्णा दास ने कहा, ''आदिवासियों को राज्य में सरकार बनाने में महत्वपूर्ण माना जाता है। आदिवासी कल्याण के लिए कई कदम उठाने के बावजूद कांग्रेस इस बार उनका समर्थन बरकरार नहीं रख सकी।'' उन्होंने कहा कि पिछले कुछ वर्षों में राज्य के आदिवासी बहुल इलाकों, विशेषकर बस्तर संभाग में धर्म परिवर्तन को लेकर आदिवासियों और ईसाई धर्म अपनाने वाले आदिवासियों के बीच झड़प और मारपीट की कई घटनाएं सामने आई हैं। दास ने कहा कि चुनाव प्रचार के दौरान यह मुद्दा सत्ताधारी दल कांग्रेस को परेशान करता रहा क्योंकि भाजपा के शीर्ष नेताओं ने अपने चुनाव प्रचार में आक्रामक तरीके से भूपेश बघेल सरकार पर धर्मांतरण में शामिल लोगों को संरक्षण देने का आरोप लगाया। उन्होंने कहा कि सरगुजा और बस्तर संभाग के आदिवासी इलाकों में भी खनन के खिलाफ विरोध प्रदर्शन देखा गया। दास ने कहा कि गोंडवाना गणतंत्र पार्टी (जीजीपी) और हमर राज पार्टी (हाल में सर्व आदिवासी समाज द्वारा गठित एक संगठन) ने भी कई एसटी आरक्षित सीटों पर कांग्रेस की संभावनाओं को प्रभावित किया।

कांग्रेस के वरिष्ठ आदिवासी नेताओं को भी करना पड़ा हार का सामना

राज्य गठन के बाद से ही सीतापुर-एसटी सीट पर अजेय रहे कांग्रेस के वरिष्ठ आदिवासी मंत्री अमरजीत भगत को इस बार हार का सामना करना पड़ा। एक अन्य वरिष्ठ आदिवासी नेता और कांग्रेस के पूर्व प्रदेश अध्यक्ष मोहन मरकाम अपनी सीट कोंडागांव से हार गए। एसटी समुदाय के लिए आरक्षित सीटों से जीतने वाली वरिष्ठ भाजपा आदिवासी नेता केंद्रीय मंत्री रेणुका सिंह (भरतपुर-सोनहत), सांसद गोमती साय (पत्थलगांव), पूर्व केंद्रीय मंत्री विष्णुदेव साय (कुनकुरी), राज्य के पूर्व

मंत्री- रामविचार नेताम (रामानुजगंज), केदार कश्यप (नारायणपुर) और लता उसेंडी (कोंडागांव) हैं। चुनाव से पहले अपनी नौकरी छोड़कर भाजपा में शामिल होने वाले भारतीय प्रशासनिक सेवा (आईएएस) अधिकारी नीलकंठ टेकाम केशकाल सीट से विजयी हुए।

आदिवासियों के बीच गहरी पैठ बनाने में कामयाब रही बीजेपी

वर्ष 2000 में राज्य बनने के बाद 2003 में छत्तीसगढ़ में हुए पहले चुनाव में भाजपा उन आदिवासियों के बीच गहरी पैठ बनाने में कामयाब रही, जो कभी कांग्रेस के कट्टर समर्थक माने जाते थे, लेकिन अगले चुनावों में भाजपा उन पर पकड़ खोती चली गई। वर्ष 2003 के विधानसभा चुनाव में 90 सदस्यीय सदन में 34 सीटें अनुसूचित जनजाति (एसटी) वर्ग के लिए आरक्षित थीं। भाजपा ने तत्कालीन अजीत जोगी के नेतृत्व वाली कांग्रेस सरकार को हराकर 25-एसटी आरक्षित सीटों सहित 50 सीटें जीतकर शानदार जीत दर्ज की थी, तब कांग्रेस ने नौ एसटी आरक्षित सीटें जीतीं थी। इसी तरह, वर्ष 2008 के विधानसभा चुनाव में भाजपा ने आदिवासियों के आशीर्वाद से 50 सीटें जीतकर फिर से सरकार बनाई, तब भाजपा ने 29-एसटी आरक्षित सीटों में से 19 सीटें जीती थीं, जबकि कांग्रेस ने 10 एसटी सीटें जीती थीं। वर्ष 2008 में हुए परिसीमन ने राज्य में एसटी आरक्षित सीटों को 34 से घटाकर 29 कर दिया था।

2013 में दूर हो गए थे आदिवासी मतदाता

वर्ष 2013 के विधानसभा चुनावों में आदिवासी मतदाता भाजपा से दूर हो गए और उन्होंने कांग्रेस को भारी वोट दिया, लेकिन कांग्रेस सरकार नहीं बना सकी। कांग्रेस 29 आदिवासी आरक्षित सीटों में से 18 जीतने में कामयाब रही थी, लेकिन उसकी संख्या 39 तक ही सीमित रही। भाजपा 90 सदस्यीय सदन में 11 एसटी आरक्षित सहित 49 सीटें जीतकर लगातार तीसरी बार सरकार बनाने में सफल रही। वर्ष 2018 में कांग्रेस ने रमन सिंह के नेतृत्व वाली भाजपा सरकार के 15 साल के शासन को समाप्त करते हुए 90 सदस्यीय विधानसभा में 68 सीटें जीतकर शानदार जीत दर्ज की। भाजपा 15 सीटों पर सिमट गई थी जबकि जेसीसी (जे) और बसपा (बहुजन समाज पार्टी) को क्रमशः पांच और दो सीटें मिलीं। वर्ष 2018 में 29 एसटी आरक्षित सीटों में से कांग्रेस ने 25, भाजपा ने तीन और जेसीसी (जे) ने एक सीट जीती थी। बाद में कांग्रेस ने उपचुनाव में दो और एसटी आरक्षित सीटें मरवाही और दंतेवाड़ा जीत ली थी।

2023 के चुनाव से पहले भाजपा ने क्या किया

वर्ष 2023 का चुनाव जैसे-जैसे नजदीक आया, भाजपा के स्टार प्रचारकों ने राज्य के आदिवासी बहुल इलाकों का दौरा करना शुरू कर दिया। प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी और अमित शाह ने बस्तर क्षेत्र में रैलियों को संबोधित किया था, जबकि पार्टी के राष्ट्रीय अध्यक्ष जेपी नड्डा ने आदिवासी बहुल जशपुर में भाजपा की दूसरी परिवर्तन यात्रा को हरी झंडी दिखाई थी। पार्टी की पहली परिवर्तन यात्रा आदिवासी बहुल दंतेवाड़ा जिले से निकाली गई। दास ने कहा कि भाजपा ने तेंदूपत्ता संग्राहकों, जो मुख्य रूप से आदिवासी हैं, को 4,500 रुपये तक वार्षिक बोनस के साथ 5,500 रुपये प्रति मानक बोरा पर तेंदूपत्ता खरीदने का वादा किया है। कांग्रेस ने भी तेंदू पत्ता संग्राहकों को चार हजार रुपये के वार्षिक बोनस के साथ तेंदू पत्ता के लिए छह हजार रुपये प्रति मानक बोरा देने का समान वादा किया था। इसके अलावा, प्रत्येक लघु वन उपज की खरीद पर प्रति किलोग्राम 10 रुपये अतिरिक्त देने का भी वादा किया गया था। उन्होंने कहा कि कांग्रेस ने एमएसपी (न्यूनत समर्थन मूल्य) पर खरीदे जाने वाले लघु वनोपजों की संख्या सात से बढ़ाकर 63 कर दी थी, लेकिन इसके बावजूद वह आदिवासियों का समर्थन नहीं जीत सकी।

चरम पर है मोदी का जादू

आर राजागोपालन

चार राज्यों के विधानसभा नतीजे आ गये हैं। मोदी का जादू चल गया है। नतीजों के अगले ही दिन मोदी सरकार द्वारा साहसपूर्वक संसद की बैठक बुलाना यह दर्शाता है कि भाजपा का अपना आकलन ठोस रहा है। तेलंगाना एक मोड़ था। वहां भाजपा ने वंशवादी केसीआर परिवार समेत भारतीय राष्ट्र समिति को खत्म करने में मदद की है। दूसरे शब्दों में, यह लोकतंत्र का नृत्य है। एक वोट सरकारें बदल सकता है। मोदी और भाजपा अब 2024 के लोकसभा चुनाव पर ध्यान केंद्रित करने के लिए पूरी तरह तैयार हैं। वंशवाद भ्रष्टाचार लाता है, यह प्रचार बहुत प्रभावी रहा है। यह अखिलेश यादव, एमके स्टालिन, उद्धव ठाकरे जैसे वंशवादियों के लिए एक संदेश है। कांग्रेस द्वारा चुनावी हिंदुत्व को अपनाना एक नकारात्मक कारक रहा है। राहुल गांधी की लगातार विदेश यात्राएं मतदाताओं को पसंद नहीं आयीं। राजस्थान, मध्य प्रदेश और छत्तीसगढ़ के करोड़ों आदिवासी मतदाताओं ने कांग्रेस को नकार दिया। राहुल गांधी का अडानी विरोधी और चीन समर्थक अभियान उत्तर भारतीय मतदाताओं को रास नहीं आया। दिलचस्प बात यह है कि सनातन धर्म पर डीएमके के उदयनिधि के आक्रोश ने उत्तर भारत में कांग्रेस की हार सुनिश्चित कर दी। भाजपा ने इसका प्रभावी इस्तेमाल किया। राहुल गांधी का प्रिय नारा 'जल, जंगल, जमीन' छत्तीसगढ़ में असफल रहा। इसका कारण है मतदाताओं का सबसे पुरानी पार्टी कांग्रेस से विश्वास उठना। प्रत्येक राज्य से एक स्पष्ट संदेश है। लेकिन पिछले कई घंटों से अनुमान लगा रहे कई राजनीतिक पंडित आज उलझन में हैं। एग्जिट पोल ने व्यापक रुझान का संकेत दिया था, लेकिन कई पोल में स्पष्टता की बजाय भ्रम अधिक फैलाया गया। जैसा एक राजनेता का लोकप्रिय कथन है कि वोट उंगली दिखाकर किया जाता है, लेकिन टीवी रिमोट से कोई भी चैनल बदल देता है। पहली बार कई टीवी दर्शक अलग-अलग राज्यों में अलग-अलग पार्टियों को लेकर भ्रमित रहे। तेलंगाना में कांग्रेस की जीत का कारण केसीआर का वंशवाद है। तेलंगाना के मतदाता आंध्र प्रदेश और तेलंगाना के बंटवारे के लिए कांग्रेस के आभारी हैं। सोनिया गांधी को राज्य की अम्मा माना जाता है। कांग्रेस के रेवंत रेड्डी ने केसीआर परिवार के खिलाफ जोरदार अभियान चलाया था। उन्होंने यहां तक कहा है कि अगर कांग्रेस सत्ता में आयी, तो केसीआर को गिरफ्तार किया जायेगा। राहुल और प्रियंका गांधी ने संयुक्त रूप से प्रचार किया। राज्य के अल्पसंख्यक वोट केसीआर और ओवैसी को छोड़कर कांग्रेस की ओर चले गये। हिंदू वोट भाजपा में गये। इसलिए रेवंत रेड्डी की यह लहर दिखी है। क्या हम यह मान सकते हैं कि भारत जोड़ो यात्रा का कोई प्रभाव नहीं है, लेकिन इसका उत्तर यह है कि मतदाताओं ने इसका विश्लेषण किया है और कांग्रेस को चुना है। कांग्रेस ने तेलंगाना में शीघ्र ही रेवंत की पहचान कर ली थी, पार्टी के अंदर के मतभेदों को सुलझा लिया गया था, कर्नाटक को भुनाया गया, बीआरएस की योजनाओं का मुकाबला किया गया, बीआरएस-भाजपा-मजलिस को साझेदार के रूप में चित्रित किया गया। इनका फायदा पार्टी को मिला। कांग्रेस को राहुल गांधी की भारत जोड़ो यात्रा को अच्छी प्रतिक्रिया मिलने के बावजूद इस साल की शुरुआत में भी राज्य में अपनी संभावनाओं के बारे में ज्यादा उम्मीद नहीं थी। आंध्र प्रदेश में यात्रा को मिली ठंडी प्रतिक्रिया के कारण पार्टी ने पिछले साल नवंबर में यात्रा के राज्य से बाहर निकलने के तुरंत बाद प्रदेश अध्यक्ष को बर्खास्त कर दिया था।

उफान पर हिन्दुत्व की लहर

संजय तिवारी

इतनी बड़ी जीत की उम्मीद तो खुद भाजपावालों को नहीं थी जैसी जीत मध्य प्रदेश में हुई। भाजपा के नेता छत्तीसगढ में भी हारी हुई लड़ाई ही लड़ रहे थे। राजस्थान में कांटे का मुकाबला था। लेकिन 3 दिसंबर को जब चुनाव परिणाम आये तो पता चला कि तीनों ही राज्य बंपर जीत के साथ बीजेपी की झोली में चले गये। भारत के राजनीतिक मानचित्र पर गुजरात से उत्तर प्रदेश तक एक बार फिर उत्तर भारत भगवामय हो गया है।

अब गुजरात, राजस्थान, मध्य प्रदेश, छत्तीसगढ, उत्तराखंड, उत्तर प्रदेश, हरियाणा, महाराष्ट्र, सिक्किम, अरुणाचल, असम, त्रिपुरा, मणिपुर में भाजपा का भगवा लहरा रहा है। दिल्ली, हिमाचल प्रदेश, पंजाब, कर्नाटक की हार के बाद भाजपा के लिए जरूरी था कि राज्यों में अपनी जीत के समीकरण ठीक करती। आम चुनाव से पहले राजस्थान, छत्तीसगढ को जीतकर तथा मध्य प्रदेश में मजबूत वापसी करके भाजपा ने राज्यों में अपनी उपस्थिति को मजबूत कर लिया है। इन तीन राज्यों में जीतनेवाले 332 विधायक राज्यसभा में भी उसकी उपस्थिति को अगले पांच साल तक मजबूत बनाकर रखेंगे।

इन तीन राज्यों के इतर तेलंगाना में भी भाजपा ने अब तक का सबसे बेहतर प्रदर्शन करते हुए 8 सीटें हासिल की हैं। तेलंगाना में भाजपा ने 14 प्रतिशत वोट शेयर हासिल किया है जो राज्य में भाजपा के बेहतर भविष्य का संकेत भी कर रहा है। हालांकि उत्तर के तीन राज्यों में हार का सामना करनेवाली कांग्रेस को तेलंगाना ने संजीवनी प्रदान कर दी है और पार्टी ने 39.5 प्रतिशत वोट शेयर के साथ 64 सीटें जीत ली हैं जो राज्य की 119 सीटों वाली विधानसभा में पूर्ण बहुमत से चार ज्यादा है।

जहां तक मध्य प्रदेश की बात है तो वहां मानों भाजपा के हिन्दुत्व की सुनामी चली है। गुजरात और उत्तर प्रदेश के बाद अब मध्य प्रदेश ही ऐसा राज्य बन गया है जहां भाजपा को इतने

बंपर वोटों और सीटों से जीत हासिल हुई है। भाजपा को 48.5 प्रतिशत वोट शेयर हासिल हुआ है और उसे राज्य की कुल 230 सीटों में 163 सीटों पर जीत मिली है। पिछले विधानसभा चुनाव में भाजपा को 109 तो कांग्रेस को 114 सीटें मिली थी। इस बार कांग्रेस घटकर 66 सीटों पर आ गयी।

इसी तरह राजस्थान में 41.70 प्रतिशत वोट शेयर के साथ बीजेपी 115 सीटें जीतने में कामयाब रही जबकि 39.5 प्रतिशत वोट शेयर के बाद भी कांग्रेस 69 सीटों पर सिमट गयी। 200 सीटों वाला राजस्थान ही इकलौता ऐसा राज्य है जहां छोटे दलों और निर्दलियों को भी कुछ सीटें हासिल हुई हैं। वरना छत्तीसगढ और मध्य प्रदेश में सीधा मुकाबला भाजपा और कांग्रेस के बीच ही रहा है। यही कारण है कि 39.5 प्रतिशत वोट शेयर होने के बावजूद त्रिकोणीय संघर्ष में कांग्रेस बहुमत से बहुत दूर रह गयी। राज्य में निर्दलियों और अन्य छोटे दलों को 15 सीटें मिली हैं, जबकि अन्य के खाते में 16 प्रतिशत वोट गया है।

छत्तीसगढ में भाजपा और कांग्रेस में सीधा मुकाबला हुआ और भाजपा ने सबसे अप्रत्याशित प्रदर्शन इसी राज्य में किया। राज्य की 90 सीटों वाली विधानसभा में भाजपा ने 54 सीटें जीत ली हैं जबकि कांग्रेस को 36 सीटें मिली हैं। भाजपा को कुल वोटों का 46.2 प्रतिशत तो कांग्रेस को 42.2 प्रतिशत हासिल हुआ है। बसपा सहित अन्य छोटे दल और निर्दलीय यहां चुनाव मैदान में जरूर उतरे थे लेकिन वो एक भी सीट जीत पाने में सफल नहीं हुए। छत्तीसगढ में मानों मतदाताओं ने भाजपा के लंबे शासन से ऊबकर कांग्रेस को एक कार्यकाल दिया था और फिर से भाजपा को ही शासन सौंप दिया है।

भाजपा की यह भीषण जीत जहां पार्टी के स्तर पर संतोष देगी वहीं नेताओं के स्तर पर असंतोष का पारा भी चढेगा। जब से केन्द्र में मोदी सत्तारूढ़ हुए हैं उन्होंने क्षेत्रीय नेताओं को ताकतवर होने देने से परहेज ही किया है। हालांकि सीधे तौर पर उन्होंने क्षेत्रीय नेताओं के काम काज में दखल तो नहीं दिया लेकिन मोदी शाह की चुनावी रणनीति ऐसी रहती है कि पहले वो चुनाव की कमान अपने हाथ में लेते हैं, मेहनत करते हैं और जीत के बाद नेतृत्व तय करते हैं। यही कारण है कि 2014 में चुनाव से पहले अपने आपको प्रधानमंत्री के चेहरे के रूप में प्रस्तुत तो कर दिया था लेकिन राज्यों में वो कमल निशान पर चुनाव लड़ने पर जोर देते हैं।

इसलिए तीन राज्यों की बंपर जीत के बाद सबसे बड़ा उहापोह अब भावी मुख्यमंत्री को लेकर होगा। मध्य प्रदेश में शिवराज सिंह चौहान हों, राजस्थान में वसुंधरा राजे हों या फिर छत्तीसगढ में रमन सिंह। सभी ने चुनावी नतीजे सामने आने के बाद सबसे पहले जीत का श्रेय नरेन्द्र मोदी के नाम और काम को दिया। भाजपा के भीतर यह नया चलन है। भाजपा का इतिहास रहा है कि अगर चुनाव सामूहिक नेतृत्व में लड़े जाते थे तो जीत का श्रेय भी सभी को समान रूप से मिलता था। यह पहली बार दिख रहा है कि कांग्रेस के नक्शेकदम पर चलते हुए भाजपा के नेता जीत का श्रेय पार्टी कार्यकर्ताओं और कमल निशान को देने की बजाय किसी एक नेता को दे रहे हैं जिसके पास उनकी कुर्सी का निर्णय लंबित है।

फिर भी भाजपा के केन्द्रीय नेतृत्व के लिए इन तीनों राज्यों में मुख्यमंत्री का निर्णय इतना आसान नहीं होगा। शिवराज सिंह चौहान हों, रमन सिंह हों या फिर वसुंधरा राजे। ये सभी नरेन्द्र मोदी के समकक्ष हैं। इसमें दो राय नहीं कि हारी हुई बाजी जीतने के लिए मशहूर नरेन्द्र मोदी और अमित शाह की नीति और रणनीति इन राज्यों में सफल रही है फिर भी इन तीनों नेताओं को दरकिनार करके एकदम से नये नेतृत्व को कुर्सी सौंप देने से विद्रोह, विरोध और भीतरघात के स्वर जरूर उभरेंगे इससे इन्कार नहीं किया जा सकता। झारखण्ड में अपनी मर्जी से रघुवर दास को सीएम बनाकर दोनों नेता उसका दुष्परिणाम देख चुके हैं। कर्नाटक में येदिय्युरप्पा को किनारे करने का क्या परिणाम निकला, वह सबके सामने है।

बहरहाल, किस राज्य में कौन सीएम होगा ये मोदी शाह ही तय करेंगे लेकिन इसके लिए उन्हें हर पहलू का ध्यान तो रखना ही पड़ेगा। अगर क्षेत्रीय क्षत्रपों को अपने मातहत रखना ही मंशा है तो शिवराज हों या वसुंधरा उन्होंने पीएम मोदी को जीत का श्रेय दे ही दिया है। लेकिन समग्रता में इन चुनावों से एक बात और साबित हुई है कि जातिवादी राजनीति की व्यूहरचना करनेवाले लोगों की करारी हार हुई है और भाजपा का हिन्दुत्व एक बार फिर स्थापित हुआ है। फिर चाहे राजस्थान में सालेह मोहम्मद की हार हो या छत्तीसगढ के साजा से निर्धन ईश्वर साहू की जीत। ये हिन्दुत्व की ही जीत कही जाएगी जब पाकिस्तान की सीमा वाले इलाके में अपनी मजहबी सियासत चलाने वाले गाजी फकीर का बेटा एक भगवाधारी से चुनाव हार गया और छत्तीसगढ में मुस्लिमों की भीड़ हिंसा के शिकार बने भुवनेश्वर साहू के पिता ईश्वर साहू चुनाव जीत गये तो इसे हिन्दुत्व की जीत नहीं तो और क्या कहा जाएगा?

भारतीय ज्ञान परंपरा....

यागचूडामण्युपनिषद् (भाग-4)

गतांक से आगे...

सम्पूर्ण शरीर में धनञ्जय वायु इस प्रकार से व्याप्त है कि मृत्यु के बाद भी शरीर को नहीं छोड़ता है। इन्हीं नाड़ियों में जीव (प्राण) भ्रमण करते रहते हैं। खिलाड़ियों के द्वारा इधर से उधर फेंकी हुई गेंद की तरह जीव भी प्राण, अपान आदि वायुओं से स्थिर नहीं रह पाता अर्थात् सदैव गतिशील रहता है। यह जीव प्राणादि वायुओं के वशीभूत होकर नीचे ऊपर गमन करता हुआ बायें एवं दायें मार्ग में भी-आता-जाता है। गमनचक्र तीव्रता से चलने के कारण वह दिखाई नहीं पड़ता। रस्सी से बँधा हुआ श्येन पक्षी ऊपर उड़ता हुआ भी जिस प्रकार खींच लिया जाता है, ठीक उसी प्रकार गुणों से आबद्ध यह जीव भी प्राण और अपान वायुओं के द्वारा खींचा जाता है।

प्राण अपान को खींचता है एवं अपान प्राण को खींचता है, इसलिए यह जीव प्राण और अपान की इस क्रिया के द्वारा निरंतर ऊपर-नीचे आता जाता रहता है। प्राण एवं जीव की इस अध: एवं ऊर्ध्वगमन प्रक्रिया को जानने वाला ही योगवेत्ता है। श्वास स कार ध्वनि (वायु) के माध्यम से भीतर और ह कार के साथ बाहर आती है। इस तरह यह जीव हंस-हंस (हंसमंत्र) का जप सदैव करता रहता है।

दिन-रात निरन्तर जप करते रहने से यह जीव इक्कीस हजार छ: सौ मंत्र नित्य जपता है। योगियों के लिए मुक्ति प्रदात्री यही अजपा गायत्री है। इसके संकल्प मात्र से सभी पापों से मुक्ति मिल जाती है।

इसके समान न कोई विद्या, न कोई जप, न कोई ज्ञान पहले हुआ है और न भविष्य में होगा। यह गायत्री प्राण को धारण करने वाली प्राणविद्या है-महाविद्या है, जो कुण्डलिनी से उद्भूत है। इस प्रकार जो जान लेता है, वही वेदवेत्ता है।

क्रमश: ...

अंतर्राष्ट्रीय स्वयंसेवक दिवस

प्रियांक व्यास

हमारे आसपास कई ऐसे स्वयंसेवक हैं, जो लोगों की भलाई के लिए लगातार कार्य करते रहते हैं। यह स्वयंसेवक निर्धन लोगों के अधिकारों की रक्षा से लेकर किसी प्राकृतिक आपदा में लोगों की मदद करना, लोगों के स्वास्थ्य, भोजन का प्रबंध करना, बेसहारा लोगों को आसरा देने जैसे कई काम करते हैं। ऐसे में स्वयंसेवक को बढ़ावा देने और इनके द्वारा किए जा रहे कार्यों को सम्मान देने के लिए हर साल 5 दिसंबर को अंतर्राष्ट्रीय स्वयंसेवक दिवस मनाया जाता है।

दरअसल स्थानीय, राष्ट्रीय और अंतरराष्ट्रीय स्तर पर कार्य कर रहे स्वयंसेवको के विकास में योगदान को

महत्व देने के लिए 17 दिसंबर 1985 को संयुक्त राष्ट्र महासभा में एक प्रस्ताव पारित किया गया था। इस प्रस्ताव में 05 दिसंबर को अंतरराष्ट्रीय वालंटियर दिवस के रूप में मनाने की बात कही गई थी। तब से हर साल इस दिन अंतर्राष्ट्रीय स्वयंसेवक दिवस मनाया जाता है।

अंतर्राष्ट्रीय स्वयंसेवक दिवस मनाते हुए राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ की स्थितियों का आकलन इस दिवस की सार्थकता को व्यक्त करता है। आरएसएस में स्वयंसेवक शब्द का अर्थ होता है- स्वेच्छा से काम करने वाला। संघ के विचारों को मानने वाले और नियमित तौर पर शाखा में जाने वाले लोगों को संघ का स्वयंसेवक कहा जाता है।

यह तो हम सभी जानते हैं कि दुनियाभर में मौजूद स्वयंसेवक विभिन्न क्षेत्रों में सक्रिय हैं और किसी भी आपात स्थिति में उनकी भूमिका महत्वपूर्ण हो जाती है। बीते दिनों कोरोना महामारी के दौरान भी विश्व स्वास्थ्य संगठन ने स्वयंसेवकों की भूमिका की तारीफ़ की थी। इस महामारी के दौरान दुनियाभर में स्वयंसेवकों ने लॉकडाउन के हालात के बीच पीड़ितों व प्रभावितों की मदद के लिए हरसंभव कदम उठाए थे। ऐसे में इन स्वयंसेवकों को हिम्मत देने और स्वयंसेवकों के प्रयासों का समर्थन करने के लिए सरकारों को प्रोत्साहित करने के लिए इस दिन का विशेष महत्व है।

दुनिया में ज्यादातर स्वयंसेवी एक संगठन के रूप में लोगों के सेवा करते हैं। वैसे अगर हम दुनिया के सबसे बड़े स्वयंसेवी संगठन की बात करें तो वह भारत का राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ (आरएसएस) है। 27 सितंबर 1925 को आरएसएस की स्थापना हुई थी। एक रिपोर्ट के अनुसार आरएसएस से 90 लाख से अधिक स्वयंसेवक जुड़े हुए हैं। आरएसएस ने विभाजन के पीड़ितों की मदद, 1962 के युद्ध, आपातकाल, गोवा के विलय के सहित देश में आने वाली प्राकृतिक आपदाओं में अपनी महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है। हालांकि आरएसएस पर अक्सर राजनीति करने के आरोप भी लगते रहे हैं।

मोदी-मेलोनी की इस दोस्ती के मायने क्या हैं?

नीरज कुमार दुबे

इटली की प्रधानमंत्री जियोर्जिया मेलोनी जब इस साल भारत की यात्रा के दौरान प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी के साथ संयुक्त संवाददाता सम्मेलन को संबोधित करते हुए भारतीय प्रधानमंत्री की ग्लोबल अप्रूवल रेटिंग का जिक्र करते हुए उन्हें दुनिया में सबसे ज्यादा स्नेह और प्यार हासिल करने वाला नेता बताते हुए शर्मा गयीं थीं और प्रधानमंत्री मोदी भी मुस्कुरा दिये थे तब वह वीडियो वायरल हो गया था। इसके बाद से प्रधानमंत्री मोदी जब-जब भी इटली की प्रधानमंत्री मेलोनी से मिले तब-तब दोनों की मुलाकात की तस्वीरें और वीडियो वायरल होने लगे और सोशल मीडिया पर मीम्स बनाने वालों ने मोदी और मेलोनी की दोस्ती को मेलोडी नाम दे दिया और इन दोनों नेताओं की वैश्विक मंचों और द्विपक्षीय आधार पर होने वाली मुलाकातों की तस्वीरों का लोगों को इंतजार रहने लगा।

देखा जाये तो मोदी और मेलोनी जानते हैं कि सोशल मीडिया पर उनकी तस्वीरें वायरल होती हैं इसलिए दोनों कोई मौका नहीं चूकते अपनी मुलाकातों की तस्वीरें पोस्ट करने का। प्रधानमंत्री मोदी जब इस सप्ताह दुबई में जलवायु परिवर्तन मुद्दे पर आयोजित वैश्विक सम्मेलन में भाग लेने गये तो वहां भी उनकी इटली की प्रधानमंत्री मेलोनी से मुलाकात हुई। दोनों नेता इस मुलाकात के दौरान काफी हंसते खिलखिलाते नजर आये। बस फिर क्या था वीडियो और तस्वीरें तमाम तरह के कैप्शन के साथ वायरल होने लगे। यही नहीं, मोदी और मेलोनी दोनों ने अपने अपने सोशल मीडिया अकाउंट पर भी अपनी मुलाकात की तस्वीरें पोस्ट कीं जोकि देखते ही देखते वायरल हो गयीं। मोदी के साथ तस्वीर का मेलोनी को इतना फायदा हुआ कि सोशल मीडिया मंच एक्स पर दो मिलियन फॉलोअर रखने वालीं मेलोनी की मोदी के साथ फोटो को कुछ ही घंटों में 16 मिलियन लोगों ने देख लिया और उनके फॉलोअर्स की संख्या में भी तेजी से इजाफा हो गया।

अगर मोदी और मेलोनी के सोशल मीडिया अकाउंट्स पर आ रही प्रतिक्रियाओं को देखेंगे तो पाएंगे कि लोग दोनों प्रधानमंत्रियों को लेकर मजेदार टिप्पणियां कर रहे हैं। जैसे एक यूजर ने लिखा है कि इतिहास अपने को दोहरा रहा है, एक बार फिर भारत से बारात इटली जायेगी। एक यूजर ने लिखा कि मोदी जी को अब समझ आया कि पूर्व प्रधानमंत्री

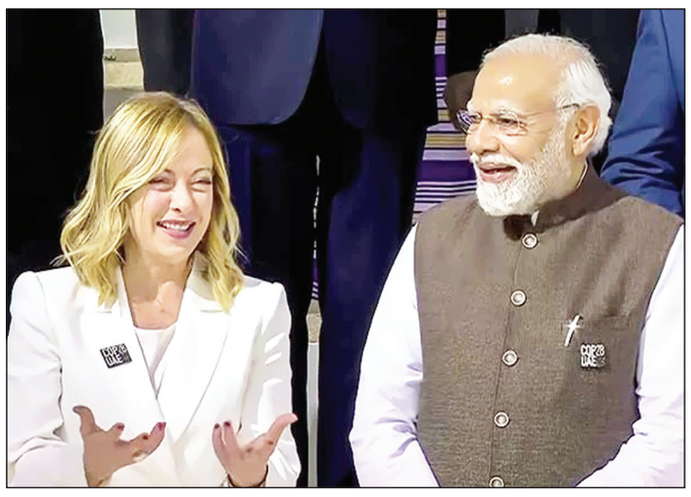

राजीव गांधी क्यों इटली गये थे। एक यूजर ने लिखा कि मोदी और मेलोनी की तस्वीरें देखने के बाद भाजपा के प्रवक्ताओं ने सोनिया गांधी के इतालवी मूल के मुद्दे पर निशाना साधना बंद कर दिया है। एक यूजर ने लिखा कि मोदी ने पहले राहुल गांधी के पारिवारिक गढ़ अमेठी में अपनी पैठ बनाई और अब उनके ननिहाल में भी अपनी पैठ बना रहे हैं। एक यूजर ने लिखा कि मोदी और मेलोनी की दोस्ती पर कांग्रेस का कोई नेता टिप्पणी करने का साहस नहीं जुटा पा रहा है क्योंकि सोनिया गांधी भी इतालवी मूल की हैं। एक यूजर ने लिखा कि भारत और इटली के संबंध अपने सबसे सुनहरे दौर में हैं। एक यूजर ने प्रसिद्ध विज्ञापन की तर्ज पर लिखा कि मेलोडी आखिर राजनीतिक रूप से इतनी चॉकलेटी क्यों है। इसी तरह की तमाम टिप्पणियां आपको दोनों प्रधानमंत्रियों के सोशल मीडिया अकाउंटों पर देखने को मिल जायेंगी।

लेकिन मजाक से हट कर जरा मोदी की कूटनीति को समझेंगे तो पाएंगे कि भारतीय प्रधानमंत्री के लिए देश हित ही सबकुछ है। समस्त भारतीयों को अपने परिवारजन कह कर संबोधित करने वाले प्रधानमंत्री मोदी दशकों पहले ही अपने परिवार को छोड़ भारत माता की सेवा करने निकल पड़े थे। जो लोग मोदी की मेलोनी के साथ तस्वीरों को देख कर आनंद ले रहे हैं वह दरअसल मोदी की कूटनीति को नहीं जानते। मोदी ने प्रधानमंत्री बनने के बाद जिस तरह वैश्विक नेताओं के साथ अपने संबंध स्थापित किये हैं उसके चलते भारत को अनेकानेक लाभ हुए हैं और भारत के प्रति दुनिया का नजरिया भी बदला है। यह मोदी के करिश्माई नेतृत्व का ही कमाल है कि वह ग्लोबल अप्रूवल रेटिंग में दुनिया में सबसे आगे हैं। मोदी सिर्फ भारत और भारतीयों की ही चिंता नहीं करते बल्कि वह दुनिया के किसी भी कोने में आपदा के समय सबसे पहले मदद भेजने वाले नेताओं में शुमार हैं और महामारी के समय वैक्सीन मैत्री अभियान चला कर उन्होंने पूरी दुनिया का दिल जीता था। इस सबके चलते ही वह पूरी दुनिया में सबसे लोकप्रिय नेता बने हैं। जाहिर है जब कोई वैश्विक नेता उनसे मिलता है तो वह उनसे बहुत कुछ सीखना भी चाहता है और मित्रता भी करना चाहता है। मोदी भी किसी को निराश नहीं करते और सबके साथ घुल मिलकर बात करते हैं।

लोगों की स्मृतियों में मोदी की कई ऐसी तस्वीरें होंगी जब वह दुनिया के बड़े नेताओं के साथ गले मिलते हैं, हाथ मिलाते हैं, हाथ पकड़ कर बातें करते हैं या कंधे पर हाथ रखकर बात करते हैं। देखा जाये तो मोदी जब किसी राष्ट्राध्यक्ष से मिलते हैं तो उनकी पहली प्राथमिकता इस बात की रहती है कि कैसे अपने देश भारत के संबंध उस नेता के देश के साथ प्रगाढ़ किये जायें। जाहिर है इसके लिए व्यक्तिगत मित्रता बनाना बेहद जरूरी है क्योंकि सिर्फ राजनयिक या कूटनीतिक संबंध हर जगह काम नहीं आते। इसलिए मोदी सबसे मित्रता स्थापित करने पर जोर देते हैं तभी तो कभी अमेरिका के राष्ट्रपति सार्वजनिक रूप से मोदी से कहते हैं कि आप तो हमारे देश में मुझसे भी ज्यादा लोकप्रिय हैं, ऑस्ट्रेलिया के प्रधानमंत्री कह देते हैं कि मोदी बॉस हैं। यही नहीं, कोई राष्ट्राध्यक्ष मोदी के आगमन पर उनके पैर छू लेता है तो कोई उन्हें गले से लगाकर रखना चाहता है। विभिन्न देशों में मोदी को अपने देश के सर्वोच्च सम्मान से नवाजने की होड़ दिखाती है कि मोदी दुनियाभर में कितने लोकप्रिय हैं।

इसके अलावा, मोदी की यह मित्रता वाली डिप्लोमेसी सिर्फ पुरुष नेताओं के साथ ही नहीं दिखती बल्कि महिला नेताओं के साथ भी मोदी बेहद सहज रहते हैं ताकि भारत को और दूसरे देशों में रह रहे भारतीयों को इसका लाभ हो। आप मोदी की फिनलैंड की प्रधानमंत्री साना मरीन के साथ मुलाकात देखिये। आप मोदी की स्वीडन की प्रधानमंत्री मैगडालेना एंडरसन के साथ मुलाकात देखिये, आप मोदी की तत्कालीन जर्मन चांसलर एंजेला मर्केल के साथ मुलाकात देखिये, आप यूनान की राष्ट्रपति के साथ मोदी की मुलाकात देखिये, आप डेनमार्क की महारानी के साथ मोदी की मुलाकात देखिये, आप डेनमार्क की प्रधानमंत्री मेटे फ्रेडरिकसेन के साथ मोदी की मुलाकात देखिये, आपको सब समझ आ जायेगा कि मोदी कैसे सभी से मित्रवत संबंध बना कर भारत और भारतीयों की राह आसान करते हैं। हम आपको याद दिला दें कि डेनमार्क की प्रधानमंत्री के साथ सैर करते हुए मोदी के वीडियो भी खूब वायरल हुए थे और तमाम टिप्पणियां की गयी थीं लेकिन चूंकि इटली और इलालवी मूल का मुद्दा भारत में दशकों से राजनीति से भी जुड़ा हुआ है इसलिए लोग इटली की प्रधानमंत्री के साथ मोदी की मुलाकातों पर जमकर टिप्पणियां कर रहे हैं। हम आपको यह भी बता दें कि मोदी जब किसी राष्ट्राध्यक्ष से मिलते हैं तो उनके परिजनों के साथ भी वह काफी सहज रहते हैं इसलिए आपने कई बार देखा होगा कि अमेरिका, फ्रांस तथा कई अन्य देशों के राष्ट्रपति की पत्नी भी प्रधानमंत्री मोदी के साथ जितना मुस्कुरा कर बात करती हैं उतना अन्य किसी राष्ट्राध्यक्ष के साथ वह सहज नहीं होतीं।

बहरहाल, नेता चाहे छोटा हो या बड़ा, सबको चर्चा में बने रहना भाता है। मोदी और मेलोनी समझ रहे हैं कि उनकी तस्वीरें उन्हें ग्लोबल चर्चा का केंद्र बना रही हैं। मोदी और मेलोनी समझ रहे हैं कि मेलोडी नाम कितना वायरल हो रहा है। मोदी और मेलोनी समझ रहे हैं कि उनकी तस्वीरों को देखकर लोग आनंद ले रहे हैं और इन तस्वीरों से उन्हें कोई राजनीतिक नुकसान होने की बजाय उनके फॉलोअर्स की संख्या में इजाफा ही हो रहा है, इसलिए दोनों नेता आगे भी ऐसा करते नजर आयें तो कोई आश्चर्य नहीं होना चाहिए। फिलहाल तो यही कहा जा सकता है कि तमाम तरह की चुनौतियों से जूझ रही दुनिया को इस %मेलोडी% ने मुस्कुराने का भरपूर मौका दे दिया है।

आज का इतिहास

1950 चीनी सैनिकों ने संयुक्त राष्ट्र की वापसी के बाद अब उत्तर कोरियाई राजधानी प्योंगयांग पर हमला किया है।
1955 लंबी दूरी के टेलीफोन कॉल को घर घर की चीज बना देने वाली एसटीडी सेवा अस्तित्व में आई।
1956 गुलाब हेइलब्रॉन ब्रिटेन की प्रथम महिला न्यायाधीश बनी।
1965 द्वितीय विश्व युद्ध के बाद सोवियत संघ में ग्लासनॉस्ट मीटिंग पहला प्रदर्शन बन गया और देश में नागरिक अधिकारों के आंदोलन की शुरुआत हुई।
1966 वियतनाम युद्ध शुरू होने के समय से ही अमेरिका को विमानों का सबसे बड़ा नुकसान हुआ। अमेरिकी युद्धक विमानों ने हनोई के निकट ठिकानों पर हमला करके और दुश्मन के विमान को मार गिराकर प्रतिक्रिया व्यक्त की।
1972 गफ व्हिटलाम ने 21 वें प्रधान मंत्री के रूप में कार्यभार संभाला और लिबरल-कंट्री पार्टी सरकार के 23 वर्षों को समाप्त करते हुए अपने डिप्टी लांस बरनार्ड के साथ एक डूमविरेट का गठन किया।
1974 बर्मिंघम अमेरिकियों ने विश्व फुटबॉल लीग इतिहास में एकमात्र विश्व बाउल जीता।
1974 माल्टा गणराज्य घोषित हुआ।
1995 अज़रबैजान एयरलाइंस की उड़ान 56 नखचिवान हवाई अड्डे से उड़ान भरने के तुरंत बाद दुर्घटनाग्रस्त हो गई, जिसमें 52 लोग मारे गए।
2000 अमेरिकी सुप्रीम कोर्ट ने राष्ट्रपति चुनाव में जार्ज बुश के पक्ष में फैसला दिया।
2005 सिविल पार्टनरशिप एक्ट लागू हुआ, जिससे यूनाइटेड किंगडम में नागरिक विवाह के अधिकार और जिम्मेदारियों के साथ नागरिकता प्रदान की गई।
2006 ई। कोलाई बैक्टीरिया महामारी ने लॉन्ग आइलैंड पर लगभग 12 लोगों को प्रभावित किया है, जिसमें कई ऐसे हैं जिन्होंने टैको बेल को खाया। अधिकारियों ने आठ टैको बेल रेस्तरां को बंद करने का आदेश दिया है।
2007 संयुक्त राज्य अमेरिका में नेब्रास्का के ओमाहा के एक मॉल में एक व्यक्ति द्वारा गोलियां चलाने से आत्महत्या करने से पहले आठ लोगों की हत्या कर दी।
2009 सैंटियागो में चिली के गायक और राष्ट्रीय आइकन विक्टर जारा के अंतिम संस्कार में हजारों लोग शामिल होते हैं, जो कि अगस्तो पिनोशेत द्वारा किए गए 1973 के सैन्य तख्तापलट में यातना के माध्यम से उनकी मृत्यु के 36 साल बाद पुनर्जन्म हुआ था।
2010 एक अमेरिकी विश्वविद्यालय ने अपने राजनीतिक विज्ञान के छात्रों को आगाह किया है कि अगर वे विकीलीक्स वेबसाइट का उपयोग करते हैं तो राज्य विभाग की नौकरी पाने की उनकी संभावना खतरे में है।
2011 यूरोपीय मॉनिटर चुनावों को नापसंद करते हुए कहते हैं कि नियम संयुक्त रूस को पसंद करते हैं और दावा करते हैं कि यह दोषों द्वारा त्रुटिपूर्ण था।

इन 5 गलतियों ने डूबो दी कांग्रेस की नैया

जयसिंह रावत

ठीक लोकसभा चुनाव से पहले सम्पन्न पांच राज्यों के चुनाव में जहां भाजपा के मजबूत संगठन, बेहतर चुनावी प्रबंधन और प्रधानमंत्री मोदी का करिश्मा काम कर गया वहीं विपक्ष की सबसे बड़ी पार्टी जिसके साथ ''इंडिया एलायंस'' के नाम से विपक्ष का ध्रवीकरण हो रहा था, उसके कमजोर नेतृत्व, गलतफहमियों और चुनावी कुप्रबंधन को जगजाहिर कर दिया है।

भाजपा मध्य प्रदेश में एंटी इन्कम्बेंसी को मात देने के साथ ही कांग्रेस से एक प्रमुख राज्य राजस्थान के साथ ही छत्तीसगढ़ को भी छीन ले गई। हालांकि कांग्रेस ने भाजपा का दक्षिण में प्रवेश का एक और प्रयास तेलंगाना में विफल कर तो दिया मगर मगर कांग्रेस ने एक तेलंगाना जीतने के साथ राजस्थान और छत्तीसगढ़ गंवा लिए। इसका असर 2024 के चुनाव में कांग्रेस की संभावनाओं पर चाहे जो भी हो मगर उससे पहले इंडिया गठबंधन में उसने अपनी गलतियों के कारण अपनी स्थिति को और कमजोर कर दिया।

केवल विज्ञानबाजी नहीं लगाती नैया पार

इन चुनावों में कांग्रेस तेलंगाना में एक मजबूत क्षेत्रीय पार्टी, भारत राष्ट्र समिति (बीआरएस) को हराने में तो सफल रही मगर भाजपा के आगे फिर कमजोर साबित हो गई। कांग्रेस मध्यप्रदेश में एंटी इन्कम्बेंसी का लाभ उठाना तो रहा दूर भाजपा की झोली में एक तूफानी जीत डाल गई।

राजस्थान में अत्यधिक विज्ञापनबाजी और योजनाओं तथा तोहफों की झड़ी लगाने के बावजूद मतदाताओं अशोक गहलोत वोटरों का विश्वास नहीं जीत पाए। इससे यह भी साबित हो गया कि महज विज्ञापनबाजी से चुनाव नहीं जीते जा सकते। चुनाव जीतने के लिए नेतृत्व की विश्वसनीयता भी होनी चाहिए। राजस्थान के विपरीत मध्यप्रदेश में शिवराज सिंह चौहान लाड़ली बहना जैसी योजनाओं को लेकर वोटर में विश्वास पैदा कर गए।

ओबीसी का मुद्दा भी बूमरैंग कर गया

कांग्रेस के लिए ये चुनाव जीने मरने के जैसे थे और अगर अब भी उसने सबक नहीं सीखा तो देश की एक ऐतिहासिक पार्टी विपक्ष को नेतृत्व देने के बजाय अन्य क्षेत्रीय विपक्षी दलों की पिछलग्गु बनकर रह जाएगी। इसके बाद अवसरवादी नेताओं में पुन: भगदड़ मच सकती है। कांग्रेस को भाजपा से हार जरूर मिली मगर उसी से सीख भी जरूर मिली है, बशर्ते कांग्रेस कुछ सीख पाए।

कांग्रेस ने इन चुनावों से पहले ओबीसी का मुद्दा बड़े जोर-शोर से उठाया मगर वह भी बूमरैंग कर गया। मप्र राजस्थान और यहां तक कि ओबीसी मुख्यमंत्री भूपेश बघेल के राज्य में तक ओबीसी का दांव उल्टा पड़ गया।

इंडिया गठबंधन के अस्तित्व पर भी उठेंगे सवाल

इन चुनावों के दम पर कांग्रेस विपक्षी गठबंधन में अपना सिक्का जमाना चाहती थी। वह साबित करना चाहती थी कि अगर भाजपा का मुकाबला करना है तो वह कांग्रेस ही कर सकती है और कांग्रेस की मदद से ही भाजपा को 2024 में हराया जा सकता है। जाहिर है कि नजर प्रधानमंत्री पद पर थी। इसी गलतफहमी में उसने इन चुनावों में 'इण्डिया गठबंधन' के दलों से दूरी बनाए रखी।

कांग्रेस की रणनीति से सबसे अधिक नाराजगी अखिलेश यादव ने प्रकट की थी। आज अखिलेश अपनी बात दुहरा कर कांग्रेस के घावों में नमक छिड़क सकते हैं। अब कांग्रेस किस मुंह से पंजाब में आप से और उत्तर प्रदेश में समाजवादी पार्टी से और पश्चिम बंगाल में टीएमसी से लोकसभा चुनावों में अधिक सीटें मांगेगी।

कांग्रेस के एकला चलो रवैये से इंडिया गठबंधन को भी झटका लगा है। कांग्रेस ने गठबंधन के सहयोगियों का विश्वास अर्जित करने के बजाय उनका विश्वास तोड़ा है। इससे अब इंडिया गठबंधन के अस्तित्व पर ही सवाल उठने लगे हैं। स्वयं इस गठबंधन के प्रणेता नितीश कुमार गाहेबगाहे अपनी नाखुशी प्रकट कर ही रहे थे।

गहलोत और कमलनाथ ने डुबोया कांग्रेस को

राजस्थान में अशोक गहलोत और मध्य प्रदेश में कमलनाथ को लगाम न दे सकने का नतीजा भी इस चुनाव में दिखाई दे रहा है। कांग्रेस के लचर नेतृत्व के कारण इन दोनों बुजुर्गों की मनमानियों पर रोक नहीं लग सकी। जिसका नतीजा ज्योतिरादित्य सिंधिया जैसे परखे हुए वोट कमाऊ युवा नेता को खोना था। अगर सिंधिया आज कांग्रेस में होते तो मध्यप्रदेश में ऐसी दुर्दशा कांग्रेस की नहीं होती।

दरअसल, तत्कालीन कांग्रेस नेतृत्व सिंधिया का पक्षधर होते हुए भी कमलनाथ के आगे बेबस रहा और सरकार के गिरने के साथ ही कांग्रेस के वोट बैंक का एक बड़ा हिस्सा सिंधिया के साथ ही टूटकर भाजपा की ओर चला गया। कमलनाथ की गलतफहमी के कारण सपा जैसे छोटे दलों से इस चुनाव में गठबंधन नहीं हो सका, जिसका खामियाजा कांग्रेस 'इंडिया' गठबंधन में भुगतेगी।

इसी तरह अशोक गहलोत व्यक्तिगत रंजिश के चलते युवा नेता सचिन पायलट को बाहर का रास्ता दिखाने के लिए निरन्तर उनकी आलोचना और हतोत्साहित करते रहे। वह पायलट को हमेशा अपने रास्ते का कांटा मानकर उनके खिलाफ बोलते रहे, इसलिए कांग्रेस के गुजर वोट बैंक का खिसक कर भाजपा के पाले में जाना स्वाभाविक ही था। गुर्जर समाज को लगा कि अब उनके नेता सचिन की कांग्रेस में कोई संभावनाएं नहीं हैं।

इसी तरह हार्दिक पटेल ने गुजरात में किनाराकसी कर अपने भविष्य का मार्ग चुना था। लोकतंत्र में विपक्ष का भी मजबूत होना जरूरी है। अन्यथा तानाशाही का खतरा बना रहता है। किसी भी दल का अजेय होना भी मनमानी की संभावनाओं को बढ़ाता है जैसा नजर आ भी रहा है।

पार्टी को अंदर और बाहर से संगठन को मजबूत करना होगा

पार्टी राहुल गांधी की भारत जोड़ो यात्रा को जिस तरह से कैश करना था वह कर नहीं पाई। खासतौर पर राहुल गांधी अपने बयानों से ही अपनी मेहनत पर पानी फेरते दिखे। यही नहीं संगठन के भीतर जिस तरह से चुनावों की तैयारियां की जानी थी वह नही दिखी। ऐसा लगा मानों मप्र में कमलनाथ, छग में बघेल और राजस्थान में गहलोत ही एक कांग्रेस बनकर सामने थे। ऐसा लगा नहीं कि राष्ट्रीय स्तर की एक पार्टी चुनावों में उतरी है जबकि इसके ठीक उलट भाजपा ने प्रधानमंत्री को चेहरा बनाकर तीनों राज्यों में चुनावों को एक बड़ी चुनौती बनाकर पेश किया। दरअसल, जीत की तैयारी ना कांग्रेस ने दिखाई बल्कि संगठन में कार्यकर्ता भी वैसे उत्साहित नहीं लगे।

वंशवादी राजनीति की हार में जीत गई भाजपा की सियासत

आर. राजगोपालन

पांच में से जिन चार राज्यों के चुनावी नतीजे आए हैं, उनमें से तीन में नरेंद्र मोदी का जादू जबर्दस्त तरीके से चला है। शीत सत्र की आज से हो रही शुरुआत के बीच विधानसभा चुनावों के ये नतीजे भाजपा की मजबूती के बारे में ही बताते हैं। तेलंगाना का नतीजा हालांकि भाजपा के अनुकूल नहीं है, जहां कांग्रेस को विजय मिली है। लेकिन बीआरएस (भारत राष्ट्र समिति) और केसीआर परिवार को राजनीतिक रूप से ध्वस्त करने में भाजपा की भूमिका रही। तेलंगाना में कांग्रेस की जीत की वजह राज्य में केसीआर की वंशवादी राजनीति के प्रति मतदाताओं की नाराजगी है। केसीआर के बेटे केटीआर और बेटी कविता को लगातार जिस तरह महत्व मिलता रहा, उससे आम मतदाता ही नहीं, पार्टी में भी बहुत सारे लोग असहज थे। इसके अलावा यह याद रखना चाहिए कि कांग्रेस ने आंध्र प्रदेश को विभाजित कर जिस तरह स्वतंत्र तेलंगाना राज्य बनाया, उसके लिए राज्य के लोग कांग्रेस के प्रति कृतज्ञ हैं और सोनिया गांधी की छवि वहां अम्मा की है। तेलंगाना में स्थानीय कांग्रेस नेता रेवंत रेड्डी ने अपने चुनाव अभियानों में केसीआर परिवार के खिलाफ जबर्दस्त माहौल बनाया था। उन्होंने यहां तक कहा कि अगर कांग्रेस सत्ता में आती है, तो केसीआर की गिरफ्तारी तय है। राहुल गांधी और प्रियंका के चुनाव अभियानों का भी मतदाताओं पर प्रभाव पड़ा। मुस्लिम वोट तो केसीआर और ओवैसी की पार्टियों से खिसककर कांग्रेस की झोली में गया ही, हिंदू वोट भी भाजपा से खिसक गए। लिहाजा सही अर्थों में तेलंगाना में कांग्रेस की जीत को रेवंत रेड्डी के पक्ष में चली लहर का नतीजा कह सकते हैं। बताया यह जा रहा था कि राहुल गांधी की %भारत जोड़ो यात्रा% का तेलंगाना में कोई खास असर नहीं था, लेकिन सच्चाई यह है कि मतदाताओं ने राहुल की उस यात्रा को बेहद सकारात्मकता के साथ लिया। पड़ोसी आंध्र प्रदेश की तुलना में तेलंगाना में राहुल गांधी की %भारत जोड़ो यात्रा% के प्रति स्थानीय लोगों में भारी उत्साह था। पार्टी द्वारा रेवंत रेड्डी को समुचित महत्व देना, राज्य इकाई में व्याप्त आपसी फूट सुलझा लेना, कर्नाटक की जीत को भुनाना, बीआरएस की योजनाओं की तीखी आलोचना करना और बीआरएस-भाजपा-एआईएमआईएम को साझेदार बताना चुनाव में कांग्रेस के पक्ष में काम कर गया। यह अलग बात है कि 2014 में पृथक राज्य बने तेलंगाना में पहली बार अपनी सरकार बनाने के बारे में कांग्रेस इस साल की शुरुआत में भी उतनी आश्वस्त नहीं थी। तेलंगाना में केसीआर की वंशवादी राजनीति की हार ने चूंकि वंशवाद और भ्रष्टाचार के आपसी रिश्ते को रेखांकित किया, लिहाजा यह नतीजा अखिलेश यादव, एमके स्टालिन और उद्धव ठाकरे जैसों के लिए एक संदेश भी है, जिन्हें राजनीति विरासत में मिली। चार राज्यों के चुनावी नतीजे एक बार फिर लोकतंत्र की शक्ति के बारे में बताते हैं, जिसमें वोट की ताकत सरकार बदलने में सक्षम है। चार में से तीन राज्य जीतकर भाजपा और नरेंद्र मोदी अब बेहद आश्वस्ति के साथ 2024 के लोकसभा चुनाव पर अपना ध्यान केंद्रित करेंगे। कांग्रेस ने भले ही तेलंगाना जीता हो, लेकिन छत्तीसगढ़ और राजस्थान में उसने अपनी सरकार गंवा दी। दरअसल चुनावी हिंदुत्व से कांग्रेस को लाभ नहीं, बल्कि नुकसान ही होता है। विपक्षी गठबंधन %इंडिया% से जुड़े द्रमुक के उदयनिधि ने सनातन धर्म के खिलाफ जो टिप्पणी की, मध्य प्रदेश, छत्तीसगढ़ और राजस्थान जैसे हिंदी भाषी प्रदेशों के मतदाताओं ने उसके लिए कांग्रेस को दंडित किया। आदिवासी वोटरों के भाजपा के पाले में जाने से भी कांग्रेस का नुकसान हुआ और छत्तीसगढ़ में जल, जंगल, जमीन का राहुल गांधी का नारा विफल साबित हुआ। राहुल गांधी के लगातार विदेश दौरों का हिंदी प्रदेश के इन तीन चुनावी राज्यों के मतदाताओं पर अच्छा संदेश तो नहीं ही गया, अदाणी के खिलाफ उनके आक्रामक रुख के कारण भी उत्तर भारतीय मतदाताओं ने कांग्रेस के प्रति बेरुखी दिखाई हो, तो आश्चर्य नहीं। कुल मिलाकर, यह नतीजा विपक्ष के लिए बेहद निराशाजनक है।

क्या कांग्रेस लगातार होती पराजय से सीख लेगा?

सतीश एलिया

यह बात तो खैर अपने स्तर पर वैचारिक स्तर-हीनता को प्रश्रय देने जैसी होगी कि कांग्रेस इस सबसे कोई सबक लेगी। फिर भी सच यह कि इस दल के लिए एक बार फिर दिल से सोचने का समय आ गया है कि वह किस दिशा में जा रहा है। शायद विचार के केंद्र में यह सवाल प्रमुख रहेगा कि उसे किस तरफ ले जाया जा रहा है। वह भी हांकने के अंदाज में। छत्तीसगढ़ और राजस्थान से इतर यदि केवल मध्यप्रदेश की बात करें तो ही स्थिति को साफ समझा जा सकता है। कांग्रेस के हिस्से में एक बार फिर आई बड़ी हार कई दिशा में ध्यान खींचती है। चुनाव के पहले से ही यह साफ था कि कमलनाथ ने पूरे अभियान की कमान अपने हाथ में ले ली है। वह हाथ भी ऐसा कि उसमें पंजे की संभावनाओं का जैसे कोई स्थान ही नहीं बचा था। निश्चित ही कमलनाथ ने एक जगह जोरदार विजय हासिल की। वह पार्टी के आलाकमान को अपने आगे नतमस्तक करने में सफल रहे। सोनिया गांधी से लेकर राहुल गांधी और प्रियंका वाड्रा जैसे कांग्रेस के कथित दमदार चेहरों की इस चुनाव में नाथ के आगे कोई बिसात ही नहीं दिखी। बस सियासी बिसात पर नाथ अपने हिसाब से मोहरे बिछाते चले गए। नेतृत्व मजबूर है। उसकी अपनी सीमा रेखा है। उसे आज पार्टी के प्रति नहीं, बल्कि परिवार के प्रति निष्ठा वाले लोगों की बड़ी आवश्यकता है। यह उसके लिए अनिवार्यता बन गया है, इसीलिए तो यह हुआ कि पार्टी के हित को हिट करते हुए अशोक गहलोत बनाम सचिन पायलट और भूपेश बघेल बनाम एमएस सिंहदेव के प्रकरण में नेतृत्व ने घुटने टेकने में कोई संकोच नहीं किया। शीर्ष की इस कमजोरी और परिवार से नजदीकी ही नाथ ने भी फायदा उठाने में कोई चूक नहीं की। शायद घर के अंदर की इस जीत ने ही कमलनाथ के भीतर वह आत्मविश्वास पनपा दिया कि चुनाव को लेकर वह कहीं 'वन मैन आर्मी' तो कभी-कभी 'लोन वूल्फ' वाली शैली में भी आगे बढ़ने से पीछे नहीं रहे। तीन राज्यों के इस राजहठ को अपने हित और हक में प्रश्रय देने की कांग्रेस की नीति का यह नतीजा हुआ कि आज वह हिंदी-भाषी राज्यों में केवल हिमाचल प्रदेश तक सिमट कर रह गयी है। यै तो गनीमत है कि तेलंगाना में भारत राष्ट्र समिति की पिता-पुत्री वाली युति के परिवारवाद ने इस राज्य में कांग्रेस को जीत का अवसर दे दिया, वरना तो आज पंजे की लकीरों से एक और राज्य के लिए राजयोग का चिन्ह भी मिट गया होता। यह सवाल उठाने का भी कोई अर्थ नहीं है कि अंतत: कौन, किस तरीके से पनौती साबित हुआ है।

क्या भाजपा में भरोसे का साइलेंट ब्रांड बन रहे हैं शिवराज?

सारंग उपाध्याय

राजनीति पहुंचने से ज्यादा यात्रा की महत्वकांक्षा है और मंजिल से ज्यादा सफर की इच्छा। जो यहां अनुभव से सधा है वह धैर्य से बंधा है, और जो धैर्य से गुंथा है वह सत्ता में दीर्घकाल तक स्थापित रहा है- फिर चाहे वह दो दशक से ज्यादा तक पश्चिम बंगाल पर राज करने वाले मुख्यमंत्री ज्योतिबसु रहे हों या फिर 2023 के विधानसभा चुनावों में टिकट तक ना मिल पाने की अफवाहों में करियर की सांझ तक करा बैठे मप्र के सीएम शिवराज सिंह चौहान हों-दोनों ही सीएम सियासत की बिसात पर अनुभव की लंबी यात्रा की बानगी हैं। फिलहाल वामपंथ का सियासी सितारा अस्त हो चुका है, लेकिन देश की दक्षिणपंथ की राजनीति में एक तारा सियासत का थोड़ा नायाब सितारा बनने की जगह तलाश रहा है।

दरअसल, मप्र की सियासत में शिवराज सिंह चौहान राजनीतिक कीर्तिमानों का सबसे उभरता हुआ स्तंभ हैं। भारतीय जनता पार्टी को दिया गया लंबा छात्र जीवन, आरएसएस के सामाजिक और राजनीतिक अनुषांगिक संगठनों में आंदोलन में होम हुई उम्र, संसद में पांच बार की सांसदी और तकरीबन तीन दशक तक फैला हुआ मप्र के सबसे ज्यादा बार सीएम पद के कार्यकाल का खिताब संजोने वाले शिवराज को गर भाजपा में भरोसे का उभरता हुआ साइलैंट ब्रैंड कहा जाए तो अतिशियोक्ति नहीं होगी।

खास यह कि साइलैंट होता हुआ ये ब्रांड यदि 2023 के इन चुनावों में दोबारा मप्र का सीएम बनता है, तो भाजपा में वे वाइब्रैंट भी होंगे, जिसकी संभावना कभी भाजपा के उस सबसे बुजुर्ग राजनेता ने जताई थी जो अपने सियासी जीवन में देश के पीएम बनने की इच्छा पूरी किए बिना ही राजनीति से रिटायर हो गया। बानगी दूं तो यूट्यूब पर उस वीडियो को खंगाला जा सकता है, जब आडवाणी ने कभी उनकी तुलना करते हुए उन्हें मोदी से श्रेष्ठ बताया था। यह वह दौर था जब मोदी गुजरात की सरहदों से पहली बार संसद में पहुंचने की तैयारियां कर रहे थे जबकि मोदी के बरक्स पीएम पद के लिए शिवराज अपनी बेहद शाइस्ता सी नजर रखते थे।

बहरहाल, सियासत में वर्तमान की जड़ें सुदूर अतीत से रिसते किस्सों और इतिहास की पेचिंदा घटनाओं से सिंचित होती रहीं हैं। दौर बदलते हैं और राजनीति अपने औजारों में धार करती चलती है। आज प्रधानमंत्री मोदी का रसूख, रुतबा और लोकप्रियता आसमान की बुलंदियों पर है। मप्र, राजस्थान और छत्तीसगढ़ में क्षेत्रिय नेता नहीं बल्कि उनका चेहरा चुनावी जीत की गारंटी था। ऐसा उन्होंने हर रैली से जयघोष किया।

यह एक तरह से 2024 के लोकसभा चुनावों में प्रधानमंत्री पद के तीसरे कार्यकाल की गारंटी का शंखनाद ही रहा। परिवर्तन भी ऐसे ही हुए। मप्र में जब टिकट बंटे तो प्रदेश भाजपा में हलचल हुई। दिग्गज अपनी-अपनी सीटों पर विधायकी जीतने दिल्ली से उतारे गए। लेकिन बदलाव के इस दौर में सबसे आखिर में करियर की सांझ ढलने की अफवाह के बीच टिकट मिला भाजपा के सबसे अनुभवी शख्स को।

भाजपा संगठन में देश के इस हृदय प्रदेश में चुनावी सियासत को लेकर इस बार अलग गणित था। हालांकि देर से ही सही शिवराज को टिकट मिला लेकिन प्रदेश में लगे उन पोस्टर में जगह नहीं मिली जिसके वे हकदार थे।

इस समय मप्र में चुनावी रिजल्ट सामने हैं। सीटों के समीकरण में पिछला रिकॉर्ड और बेहतर हुआ है। जीत का सहरा भले ही पीएम मोदी की गारंटी के माथे बांधा जा रहा है लेकिन प्रदेश की राजनीति को करीब से जानने वाले और जमीनी पत्रकार, राजनीतिक पंडित इस बात को मुखरता से कहते रहे हैं कि भाजपा की इस जीत के असली नायक शिवराज सिंह चौहान ही हैं। लंबी यात्राएं, जमीनी संपर्क, ग्रामीण और आंचलिक जीवन में गाहे-बगाहे हिस्सेदारी, सत्ता में रहते हुए जनप्रिय योजनाओं के बीच जनता से सीधा संपर्क और अंत में मुख्यमंत्री लाड़ली बहना योजना का चमत्कार, यह सब भाजपा की झोली में जीत की असली वजह हैं। अतीत पर नजर डालें तो कभी 2018 में मंदसौर किसान गोली कांड, भ्रष्टाचार के आरोप और आंतरिक सियासत से अपनी ही छवि में कैद रहे शिवराज सिंह के लिए कांग्रेस एक चुनौती बनी थी। लेकिन उस दौर के बाद साइलैंट काम करने वाला यह वाइब्रैंट नेता अपनी कार्य की शैली बदल चुका है। शिवराज विनम्र हुए हैं जो वे पहले से थे ही। राजनीति में छवि की कीमत समझने लगे हैं और दिए जाने बयानों की संवदेनशीलता भी। वे छवि सुधारने को आतुर दिखते हैं। आदिवासी पर पेशाब कांड जैसी घटना पर पैर धोकर देशभर के आदिवासियों से तुरंत माफी, लॉ एंड ऑर्डर, किसानों से संपर्क और काम का सबसे ज्यादा फोकस महिलाओं से जुड़ी योजनाओं पर होना और उसकी डायरेक्ट मॉनिटरिंग करना, दरअसल ऐसा बहुत कुछ है जो शिवराज सिंह चौहान को भाजपा में एक सधा, कुशल और अनुभव में पका हुआ राजनेता बनाती है। अच्छी बात यही रही कि वे भाजपा ने अपने इस नेता के तजुर्बे को सर्वे के तराजु में तौलकर जगह दे दी क्योंकि गारंटी के कितने ही शंखनाद लाउड स्पीकर में छोड़ दिए जाएं और हेलिकॉप्टर से कितने ही नेता उतार लिए जाएं और रैलियों में भीड़ इकट्ठी कर ली जाए, लेकिन क्षेत्रीय नेता जमीन पर यदि काम ना कर पाएं तो चुनाव जीतना आसान नहीं होता।

हिंदी पट्टी में राहुल और प्रियंका की हार कांग्रेस के लिए बहुत बड़ा झटका है

डॉ. आशीष वशिष्ठ

पांच राज्यों के विधानसभा चुनावों को अगले साल होने वाले लोकसभा चुनाव का सेमीफाइनल माना जा रहा था। खासकर हिंदी पट्टी के तीन राज्यों राजस्थान, मध्य प्रदेश और छत्तीसगढ़ के चुनाव नतीजों पर देशभर की आंखें टिकी हुई थीं। इन तीन राज्यों में जिस तरह भारतीय जनता पार्टी ने कांग्रेस को पछाड़ा है, वो काबिलेतारीफ है। वास्तव, में कांग्रेस को इस बात का भरोसा था कि वो छत्तीसगढ़ में अपनी सरकार बरकरार रखेगी और मध्य प्रदेश को भाजपा से छीन लेगी। राजस्थान को लेकर उसकी राय यह थी कि यहां कांटें की टक्कर होगी और हो सकता है कि अशोक गहलोत अपनी सरकार बचा पाने में सफल रहेंगे। लेकिन कांग्रेस के रणनीतिकारों के सारे अनुमान धरे के धरे रह गए। भारतीय जनता पार्टी ने मध्य प्रदेश में ऐतिहासिक जीत दर्ज की ही, वहीं उसने कांग्रेस से राजस्थान और छत्तीसगढ़ जैसे दो अहम राज्य छीन लिए। भाजपा राजस्थान और मध्य प्रदेश को लेकर आश्वस्त थी, छत्तीसगढ़ तो बोनस की तरह उसकी झोली में आ गया है।

मध्य प्रदेश, राजस्थान और छत्तीसगढ़ में विधानसभा की 519 और लोकसभ की 65 सीटें आती हैं। अगर हिंदी पट्टी के राज्यों- जम्मू कश्मीर, हरियाणा, पंजाब, हिमाचल प्रदेश, उत्तर प्रदेश, उत्तराखण्ड, दिल्ली, राजस्थान, बिहार, मध्य प्रदेश, छत्तीसगढ़, झारखंड और केंद्र शासित चंडीगढ़ एवं लेह लद्दाख में कुल 245 लोकसभा की सीटें आती हैं। वर्तमान में कांग्रेस के पास हिंदी पट्टी में मात्र 14 लोकसभा सांसद हैं। वर्तमान लोकसभा में कांग्रेस के कुल 51 सांसद हैं और हिंदी पट्टी के एकमात्र राज्य हिमाचल प्रदेश में कांग्रेस की सरकार है। केंद्र में किसकी सरकार बनेगी यह तय करने में हिंदी पट्टी के राज्य बड़ी भूमिका निभाते हैं। ताजा चुनाव नतीजों से कांग्रेस की लोकसभा चुनाव तैयारियों को बड़ा झटका लगना तय है।

अगर हिन्दी पट्टी के सबसे बड़े राज्य उत्तर प्रदेश की बात की जाए तो यहां कांग्रेस की हालत किसी से छिपी नहीं है। पिछले तीन दशकों से पार्टी यूपी में अपनी जमीन तलाश रही है। यूपी में सारी रणनीति और पैंतरेबाजी के बावजूद वो ठीक से खड़ी नहीं हो पा रही है। साल 2022 में उत्तर प्रदेश विधानसभा चुनाव में कांग्रेस का अब तक सबसे खराब प्रदर्शन दिखा। कांग्रेस को दो सीटों पर जीत हासिल हुई। इस चुनाव में देश की सबसे पुरानी पार्टी कई प्रधानमंत्री देने वाले राज्य में अब निराशाजनक प्रदर्शन के सबसे निचले स्तर पर पहुंच गई। वर्ष 2017 का विधानसभा चुनाव कांग्रेस ने समाजवादी पार्टी के साथ गठबंधन करके लड़ा था। और उसे 7 सीटों पर जीत मिली थी। असल में कांग्रेस की यूपी में खराब हालत 1985 से ही जारी है। उत्तर प्रदेश में कांग्रेस तब से 50 सीटें भी नहीं जीत पाई है। कांग्रेस 1985 के बाद से अब तक 50 का आंकड़ा नहीं पार कर पाई। इस चुनाव में इतिहास का अब तक का सबसे खराब प्रदर्शन दिख रहा है। कांग्रेस को वर्ष 2012 में विधानसभा चुनाव में 28, वर्ष 2007 में 22 और वर्ष 2002 में 25 सीटें मिली थीं। यूपी में पिछले चार लोकसभा चुनाव के नतीजों पर गौर किया जाएगा तो कांग्रेस का सबसे बेहतर प्रदर्शन 2009 में ही रहा था। आज सिर्फ एक सीट वाली कांग्रेस ने

2009 में 21 सीटों पर जीत दर्ज की थी। 2009 के बाद 2014 के लोकसभा चुनाव में पार्टी को जबरदस्त झटका लगा और कांग्रेस सिर्फ अपनी दो परंपरागत सीटों रायबरेली व अमेठी में ही जीत हासिल कर सकी। 2019 के चुनाव में कांग्रेस की सिर्फ एक सीट ही रह गई। इन चुनावों में सपा-बसपा के गठबंधन की वजह से कांग्रेस ने कई सीटों पर अपने प्रत्याशी नहीं उतारे, जबकि कई सीटों पर कांग्रेस तीसरे नबंर पर रही। 2019 में कांग्रेस के सबसे बड़े नेता राहुल गांधी को यूपी की अमेठी सीट के साथ केरल की वायनाड सीट से चुनाव लड़ने को मजबूर होना पड़ा। अमेठी में राहुल गांधी को बीजेपी की तेजतर्रार नेता स्मृति ईरानी से शिकस्त दी।

विधानसभा चुनाव को लोकसभा चुनाव का सेमीफाइनल माना जा रहा था, ऐसे में कांग्रेस ने चुनाव जीतने के लिए हर पैंतरे का प्रयोग किया। प्रधानमंत्री मोदी पर सीधे हमले के साथ ही, जाति जनगणना और जनता को लुभाने के लिए वायदे भी जमकर किये गये। बावजूद इसके पार्टी हिंदी पट्टी में बुरी तरह हार गई। खासकर मध्य प्रदेश में कांग्रेस ने अपनी पूरी ताकत झोंक दी। लेकिन वहां बीजेपी 18 साल के अपने शासन को बरकरार रखने में सफल रही। बीजेपी ने 2018 के विधानसभा चुनाव से बड़ी जीत दर्ज की है। जो अपने आप में ऐतिहासिक है। मध्य प्रदेश में जहां बीजेपी 18 साल के शासन के बाद सरकार बचाने में सफल रही, वहीं कांग्रेस राजस्थान और छत्तीसगढ़ में अपने पांच साल के कार्यकाल के बाद ही भ्रष्टाचार, तुष्टिकरण, वायदाखिलाफी और अकुशल प्रशासन के चलते सत्ता से बाहर हो गई। छत्तीसगढ़ में बीजेपी ने वर्ष 2003 से 2018 तक 15 साल शासन किया था। उसके बाद 2018 में कांग्रेस की सत्ता स्थापित हुई। लेकिन प्रदेश की जनता ने पांच साल में ही उसे सत्ता से बेदखल कर दिया। छत्तीसगढ़ में कांग्रेस ने 2018 के चुनाव में शराबबंदी का वायदा किया था। लेकिन पांच साल में उसने यह वायदा पूरा नहीं किया। उलटा बघेल सरकार पर शराब घोटाले के आरोप लगे। सीमेंट घोटाला और महादेव बैटिंग एप्प के आरोपों में भी बघेल सरकार घिरती दिखाई दी। तमाम आरोपों के बावजूद कांग्रेस को इस बात की पूरी उम्मीद थी कि प्रदेश में बीजेपी कमजोर स्थिति में है, ऐसे में वो सरकार बनाने में कामयाब रहेगी। वहीं छत्तीसगढ़ को लेकर बीजेपी को भी कोई ज्यादा उम्मीद नहीं थी। लेकिन प्रदेश की जनता ने सारे समीकरणों और अनुमानों को धता बताते हुए समझदारी दिखाई और सारे विश्लेषणों को फेल करते हुए बीजेपी के हक में अपना फैसला सुनाकर सबको चौंका दिया।

ताजा चुनाव नतीजों में देश की सबसे पुरानी पार्टी कांग्रेस का एक साथ हिंदी पट्टी के तीन राज्यों में हार से उसके नेताओं और कार्यकर्ताओं का मनोबल गिरेगा। राहत की बात यह है कि दक्षिण भारत के राज्य तेलंगाना में कांग्रेस की सरकार बन रही है। तीन अहम राज्यों में हार से राहुल गांधी और प्रियंका गांधी वाड्रा के नेतृत्व पर भी सवालिया निशान लग गया है। विधानसभा चुनाव में हार से देशभर में ये संदेश जाएगा कि राहुल और प्रियंका दोनों मिलकर भी पार्टी को खड़ा करने की क्षमता नहीं रखते हैं। वहीं विधानसभा चुनाव के दौरान नये नवेले इंडिया गठबंधन के सहयोगियों के बीच सीटों के बंटवारे को लेकर जो तीखी बयानबाजी और खींचतान सामने आई थी, उससे अब इंडिया गठबंधन के भविष्य पर भी बड़ा प्रश्न चिन्ह लग गया है। इंडिया गठबंधन की कुल जमा चार बैठकों के बाद सारी गतिविधियां ठप हो गई थीं। विधानसभा चुनाव में करारी शिकस्त के बाद कांग्रेस अध्यक्ष मल्लिकार्जुन खरगे ने आगामी 6 दिसंबर को इंडिया गठबंधन की बैठक बुलाई है। जिस पर इंडिया गठबंधन के सहयोगियों की तीखी प्रतिक्रियाएं सामने आई हैं। जानकारों के मुताबिक इस पराजय के बाद इंडिया गठबंधन में भी कांग्रेस की ताकत और नेतृत्व कमजोर होगा। हो सकता है इंडिया गठबंधन नये रंग रूप में नजर आए या फिर तीसरा मोर्चा भी बन सकता है।

कुल मिलाकर हिंदी पट्टी के तीन राज्यों- राजस्थान, मध्य प्रदेश और छत्तीसगढ़ में जीत और तेंलगाना में सीटों में वृद्धि से भाजपा का मनोबल बढ़ेगा। वो दोगुनी तैयारी के साथ लोकसभा चुनाव में उतरेगी। चूंकि विधानसभा चुनाव स्थानीय नेतृत्व के स्थान पर प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी के चेहरे पर लड़े गए ऐसे में 2024 के लोकसभा चुनाव में मोदी फिर एक बार बड़े और मजबूत चेहरे के साथ विपक्ष के सामने होंगे।

आलू की खेती

मिट्टी व जलवायु

आलू अच्छी जल निकास वाली कार्बनिक पदार्थ से भरपूर बलूई दोमट मिट्टी में लगाएँ। पानी ठहरने वाली क्षारीय मिट्टी में आलू की फ़सल नहीं उगानी चाहिए। आलू की अच्छी बढ़वार के लिये हल्की जलवायु की आवश्यकता होती है।

बीजोपचार

आलू का बीज सरकारी संस्थानों और बीज निगमों से खरीदें। आलू का बीज तीन-चार साल बाद अवश्य बदल दें, वरना बीज में विषाणु रोग बढने की संभावना रहती है। अच्छा अंकुरित 30 - 40 ग्रा0 भार का आलू लगायें। आलू के बीज को बुआई से 10 दिन पूर्व ठंडे गोदाम से निकालें। पहले बीज को 24 घंटे के लिए प्रीकूलिंग चेम्बर में रखें इसके पश्चात बीज को छाया वाली जगह में कच्चे फुटाव के लिये रखें। इसी दौरान सडे हुये व बिना अंकुरित हुये आलू निकाल दें।

बुआई का समय

आलू की बुआई का उचित समय अक्टूबर का दूसरा पखवाडा है। यह समय इसलिये उपयुक्त है क्योंकि जिन स्थानों पर पाला दिसम्बर के आखिर में या जनवरी के प्रथम सप्ताह में पड़ता है अतः पाला पड़ने तक आलू को बढने के लिए पूरा समय मिल जाता है।

खेत में पूर्व से पश्चिम की दिशा में मेंड 5-6 से0मी0 दूरी पर बनाएँ और बीज को मेंड की उत्तरी ढलान पर 20-25 सें0मी0 की दूरी पर लगाएँ। 30-40 ग्राम. का आलू लिया गया हो तो एक हेक्टेअर के लिये 30-50 कुन्टल बीज के आवश्यकता होती है।

आलू देश की महत्वपूर्ण सब्जी वाली फसलों में से एक है, इसकी औसत पैदावार 161 कु. प्रति हेक्टेअर है, यदि उत्तम क़िस्मों और नवीन प्रौद्योगिकी को उपनाया जाए तो इसकी पैदावार को और अधिक बढ़ाया जा सकता है।

खाद और उर्वरक

आलू की अच्छी पैदावार लेने के लिये नाइट्रोजन, फ़ॉस्फ़रस एवं पोटाश की अधिक मात्रा में आवश्यकता होती है इसके लिए 120-150 कि0ग्रा0 नाइट्रोजन ;260-300 कि0ग्रा0 यूरिया, 80 कि0ग्रा0 फ़ॉस्फ़रस पोटाश ;500 कि0ग्रा0 सिंगल सुपर फ़ॉस्फ़ेट और 50-100 कि0ग्रा0 पोटाश ;130-160 कि0ग्रा0 म्यूरेट ऑफ पोटाश प्रति हक्टेयर की दर से देने की सिफारिश की जाती है। मिट्टी परीक्षण के आधार पर उर्वरकों की मात्रा बढ़ाई या घटाई जा सकती है। फ़ॉस्फ़रस व पोटाश की पूरी मात्रा तथा नाइट्रोजन की आधी मात्रा बुआई से पहले मेंड बनाने के पहले ज़मीन के ऊपर छिड़क दें। इसके बाद मेंड बनाएँ नाइट्रोजन की शेष आधी मात्रा बुआई के 30-35 दिन बाद मिट्टी चढाने से पहले व सिंचाई देने के बाद दें जिन किसानों के पास गोबर की खाद उपलब्ध हो वे 10-20 टन प्रति है0 की दर से आलू की बुआई से एक माह पूर्व खेत में डालें गोबर की खाद की मात्रा के अनुसार, उर्वरकों की मात्रा घटाई जा सकती है ।

सिंचाई

आलू की फ़सल में हल्की व जल्दी सिंचाई की आवश्यकता होती है। सिंचाई करते समय ध्यान रखें कि मेंडों में पानी हमेशा 3/5 उंचे हिस्से तक ही दें आलू अच्छी नमी वाली ज़मीन में लगाएँ एवं पहली सिंचाई पौधे उग आने के करीब 15-20 दिन बाद करें दूसरी सिंचाई पहली सिंचाई के 15 दिन बाद करें स्टोलोनाइजेशन एवं कन्द बनने की अवस्था में सिंचाई की कमी न होने दें वरना आलू की पैदावार पर प्रतिकूल प्रभाव पडेगा। इन अवस्थाओं के बीच में फ़सल में 10-15 दिन के अन्तर पर सिंचाई करते रहें आलू को खोदने से पहले सिंचाई बंद कर दें ।

खरपतवार नियंत्रण

आलू की फ़सल में खरपतवार नहीं पनपने दें इसके लिए खुरपी से खरपतवारों को बाहर निकालते रहे यदि खरपतवारनाशी दवाइयों को प्रयोग करना हो तो मैट्रीब्यूजीन ;मोटोवीर कि ग्रा.प्रति हेक्टेअर 600-700 लीटर पानी में मिलाकर जमने से पहले छिड़कें ।

पौध संरक्षण

आलू की फ़सल में मुख्यतः कुतरने वाले कीड़े, जैसिड और माहू नुकसान पहुँचाते हैं कुतरने वाले कीडों की रोकथाम के लिये क्लोरवीर 4 प्रतिशत धूल वाला 25-30 कि0ग्रा0 प्रति हेक्टेअर की दर से ज़मीन में मिला दें जैसिड व माहू की रोकथाम के लिये क्लोरवीर 2 मि. ली. प्रति लीटर पानी में मिलाकर उपरोक्त कीडों का प्रकोप दिखाई देते ही छिड़काव करें। आवश्यकता पड़ने पर 15 दिन बाद दुबारा छिड़काव करें ।अगेती अंगमारी, पछेती, पत्तियों का मुड़ना, चित्ती रोग व सूत्रकृमि आलू की मुख्य बीमारी हैं। अगेती व पछेती अंगमारी की रोकथाम के लिए फ़सल पर बीमारी के लक्षण, अगेती अंगमारी- पुरानी पत्तियों पर गहरे भूरे धब्बे, पछेती अंगमारी- पत्तियों के किनारे पर छोटे भूरे रंग के धब्बे दिखाई देने पर या बादल व अधिक आर्द्रता वाला मौसम होने पर वीर एम. 45 या डाइथेन जेड 78 या ब्लाइसक्स 2 ग्राम. प्रति ली. पानी में मिलाकर अच्छी तरह पत्तियों पर छिड़क दें जिससे पत्तियाँ दोनों तरफ से भीग जाएँ यदि आवश्यकता पडे तो 15 दिन बाद इन्हीं दवाईयों का छिड़काव करें ।पत्तियों का मुड़ना एवं चित्ती रोग की रोकथाम के लिए रोग के आक्रमण की प्रारम्भिक अवस्था के लक्षण दिखाई देते ही रोगग्रस्त पौधों को निकाल कर ज़मीन में दबा दें ।जड़ गांठ वाले सूत्रकृमि से बचाव के लिये आलू बोने से पहले गर्मियों में खेत की 2-3 बार गहरी जुताई करें और बीज की रोपाई से पहले खेत में 2 कि0ग्रा0 एल्डीकार्ब-कार्बोफयूरान प्रति है, की दर से मिलाने से सूत्रकृमि के प्रकोप से बचा जा सकता है ।

पाले से बचाव

उत्तरी व पश्चिमी भारत में दिसम्बर के आखरी व जनवरी के प्रथम सप्ताह में पाला पड़ने की सम्भावना रहती है । यदि पाला पड़ने की सम्भावना हो तो किसान आलू की फ़सल में तुरन्त सिंचाई करें खेत में रात को ही हवा की दिशा के अनुसार धुआँ करके पाले से फ़सल को बचा सकते हैं ।

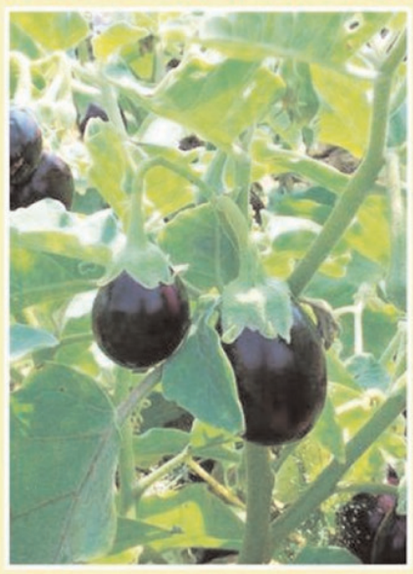

बैंगन की शानदार खेती

बैंगन एक पौष्टिक सब्जी है। इसमें विटामिन ए एवं बी के अलावा कैल्शियम, फ़ॉस्फ़रस तथा लोहे जैसे खनीज भी होते है। यदि इसकी उपयुक्त उत्तम क़िस्में तथा संकर किस्में बोई जाए और उन्नत वैज्ञानिक सस्य क्रियाऐं अपनाई जाएँ तो इसकी फ़सल से काफ़ी अधिक उपज मिल सकती है।

क़िस्में

पूसा हाईब्रिड –5

पौधे की अच्छी बढ़वार तथा शाखाएँ ऊपर को उठी हुई होती है, फल मध्यम लम्बाई के, चमकदार तथा गहरे बैंगनी रंग के होते है। बुआई से पहली तुड़ाई में 85- 90 दिन लगते है। उत्तरी तथा मध्य भारत के मैदानी क्षेत्रों तथा समुद्र तट को छोड़ कर कर्नाटक, केरल, आन्ध्र प्रदेश, तमिलनाडु क्षेत्र के लिये उपयुक्त है। उपज 450 से 650 क्विंटल प्रति हेक्टेअर होती है।

पूसा हाईब्रिड-6

पौधे मध्यम सीधे खडे रहने वाले होते हैं। फल गोल, चमकदार, आकर्षक बैंगनी रंग के होते है, प्रत्येक फल का वजन लगभग 200 ग्राम होता है। बुआई से पहली गुड़ाई में 85-90 दिन लगते है। उपज 400-600 क्विंटल प्रति हेक्टेअर होती है।

पूसा हाईब्रिड 9

पौधे सीधे खडे रहने वाले होते हैं। फल अण्डाकार गोल, चमकदार बैंगनी रंग के होते हैं। प्रत्येक फल का वजन लगभग 300 ग्राम होता है । बुआई के पहली तुडाई में 85-90 दिन लगते है । गुजरात तथा महाराष्ट्र क्षेत्र के लिए उपयुक्त है । इसकी औसत उपज 500 क्विंटल प्रति हेक्टेअर है।

पूसा क्रान्ति

इस क़िस्म के फल गहरे बैंगनी रंग के मध्यम लम्बाई के होते है । यह क़िस्म बसन्त तथा सर्दी दोनों मौसमों के लिये उपयुक्त पाई गई है । इसकी औसत उपज 300 किंवटल प्रति हेक्टेअर है।

पूसा भैरव

इसके फल गहरे बैंगनी रंग के थोड़े मोटे व कुछ लम्बे होते है । यह क़िस्म फल-गलन रोग प्रतिरोधी है।

पूसा पर्पल कलस्टर

पौधें सीधे खडे रहने वाले होते है। पत्तियाँ रगंदार होती है। फल 9 से 12 सें0मी0 लम्बे तथा गुच्छे में लगते है। यह क़िस्म पहाडी क्षेत्रों के लिए उपयुक्त है। यह क़िस्म फल तथा तना छेदक, जीवाणु तथा उकटा रोग के लिए कुछ रोधक है।

पालक की खेती

पत्ती वाली सब्जियों में कैल्सियम, आयरन इत्यादि खनिज तत्व व विटामिन 'ए' 'बी' काम्पलैक्स व 'सी' बहुतायत में पाये जाते हैं। पत्ती वाली सब्जियों में पालक का महत्तवपूर्ण स्थान है। जो कि मुख्यतः अपनी मुलायम एवं कोमल पत्तियों के लिए उगाया जाता है। पालक का कोमल तना भी प्रयोग में लाया जाता हैं पालक की खेती सर्दियों में अधिक की जाती है।

भूमि और जलवायु

पालक की खेती पूरे साल विभिन्न प्रकार की जलवायु में की जा सकती है। परन्तु अत्यधिक तापक्रम इसके लिए हानिकारक होता है। अतः सर्दियों के महीने पालक की खेती के लिए उपयुक्त होते हैं।

भूमि की तैयारी

पालक को पर्याप्त उर्वरता वाली सभी प्रकार की मिट्टीयों में उगाया जा सकता है। भूमि में जल निकास का भी उचित प्रबन्ध होना चाहिए। बलुई दोमट पालक के विकास के लिए अच्छी भूमि होती है। पालक की प्रजाति जैसे जोबनेर ग्रीन इत्यादि को 8 से 10 पी. एच. मान की क्षारीय भूमियों में भी उगाया जा सकता है। पालक की बुआई के लिए खेत को 3-4 जुताइयाँ करके

मिट्टी को भुरभुनी बना लेना चाहिए। उचित जलनिकास के लिए खेत को पाटे द्वारा समतल करना भी आवश्यक होता है।

प्रजातियां

भारत में पालक की बहुत सी प्रजातियां उगाई हैं परन्तु अधिक पोषक तत्वों एवं मुलायम पत्तियों वाली कटाई के बाद अच्छी और जल्दी पुर्नवृद्धि वाली एवं देर से कल्ले फूटने वाली प्रजाति ही अच्छी मानी जाती है। पालक की कुछ मुख्य प्रजातियां निम्नलिखित हैं-

पालक आल ग्रीन ,पालक पूसा ज्योति, पालक हरित, पालक भारती , जोबनेर ग्रीन ।

बुआई

मैदानी क्षेत्रों में पालक की बुआई वर्ष में तीन बार की जा सकती है। 1 बसन्त ऋतु के शुरू में ,2 वर्षा के शुरू में , 3 मुख्य फ़सल सितम्बर व नवम्बर के मध्य में बीज द्वारा तैयार खेत में पंक्तियों में बुआई करना उचित रहता है। क्योंकि पंक्तियों में बुआई करने से खरपतवार नियंत्रण , अन्तःकर्षण क्रियाएं एवं कटाई आसानी से की जा सकती है। बीज को 20 सें0मी0 की दूरी पर बनी पंक्तियों में 3-4 सें0मी0 की गहराई पर बोना चाहिए। यह ध्यान रहें कि बीज बोने से पहले खेत में पर्याप्त नमी रहनी चाहिए। एक हेक्टेअर क्षेत्र. की बुआई के लिए 25-30 कि. ग्राम. बीज काफी रहता है।

खाद एवं उर्वरक

पत्तियों वाली सब्जियों के लिए नाइट्रोजन बहुत ही आवश्यक तत्व है। खेत की तैयारी अर्थात् बुआई से 12-15 दिन पहले 15 - 20 टन प्रति हेक्टेअर के हिसाब से गोबर की खाद मिट्टी में मिला देनी चाहिए। 30 कि0ग्रा0 नाइट्रोजन, 25 कि0ग्रा0 फॉस्फोरस एवं 50 कि0ग्रा0 पोटाश बुआई से पहले खेत तैयार करते समय मिट्टी में मिला दें। हरी एवं मुलायम पत्तियों कटाई के बाद खेत में डालनी चाहिए।

सिंचाई

पालक में सिंचाई मौसम एवं मिट्टी की स्थिति पर निर्भर करती है। यदि खेत में बुआई के समय पर्याप्त नमी न हो तो बुआई के तुरन्त बाद एक हल्की सिंचाई करनी चाहिए। बसन्त एवं गर्मी के मौसम में छः से सात दिन के अन्तराल तथा सर्दियों में दस से पन्द्रह दिन के अन्तराल पर सिंचाई करनी चाहिए।

फ़सल सुरक्षा

डेम्पिंग ऑफ एवं सरकोस्पोरा ड्डलीफ स्पोट मुख्य बीमारियाँ हैं। डेम्पिंक ऑफ से बचने के लिए बीज को बुआई से पहले 2.5 ग्राम प्रति किलोग्राम बीज की दर से कैप्टन या थिरम से उपचारित करना चाहिए। जबकि सरकोस्पोरा लीफ स्पाट, जिसमें पत्तियों पर भूरे रंग के गोल धब्बे बन जाते हैं, के नियंत्रण के लिए ब्लाइटाक्स ;कॉपर आक्सीक्लोराइड दवाई ; दो ग्राम प्रति लीटर पानी में मिलाकर छिड़काव करना चाहिए। बीटल, पत्ती खाने वाला लार्वा, टिड्डा और एफिड कीड़े पालक को नुकसान पहुँचाते हैं। इन कीडों की रोकथाम के लिए मिथाइल पेराथियोन 50 ई0सी0 की दो ग्राम प्रति लीटर पानी में छिड़काव करने से पत्तियों को नुकसान पहुँचाने वाले कीडों से बचाया जा सकता है।

ब्रोकोली की खेती

इसकी खेती पिछले कई वर्षों में धीरे-धीरे बडे शहरों के आस-पास कुछ किसान करने लगे हैं । बडे महानगरों में इस सब्जी की मांग भी अब बढने लगी है । पाँच सितारा होटल तथा पर्यटक स्थानों पर इस सब्जी की मांग बहुत है तथा जो किसान इसकी खेती करके इसको सही बाजार में बेचते हैं उनको इसकी खेती से बहुत अधिक लाभ मिलता है

सब्जियों की खेती से जहां किसान की आमदनी बढ़ती है। वहीं अच्छे स्वास्थ्य के लिए सब्जियाँ , भोजन का एक महत्वपूर्ण हिस्सा भी हैं। अपने देश में लगभग 50 तरह की भिन्न प्रकार की सब्जियाँ उगाई जाती हैं जिनमें से कुछ को बाहर विदेशों में बेचकर विदेशी मुद्रा भी कमाई जाती है । आगे आने वाले समय में सब्जियों का उत्पादन तथा निर्यात दोनों ही बढ़ने की काफ़ी संभावनाएँ हैं । जहाँ हम जानी पहचानी काफ़ी तरह की सब्जियाँ अपने देश में उगा रहे हैं वहां अभी भी कुछ ऐसी सब्जियाँ हैं जो आर्थिक व पौष्टिकता की दृष्टि से बहुत महत्वपूर्ण हैं। इस तरह की सब्जियों में ब्रोकोली का नाम बहुत महत्वपूर्ण है । इसकी खेती पिछले कई वर्षों में धीरे-धीरे बडे शहरों के आस-पास कुछ किसान करने लगे हैं । बडे महानगरों में इस सब्जी की मांग भी अब बढने लगी है । पाँच सितारा होटल तथा पर्यटक स्थानों पर इस सब्जी की मांग बहुत है तथा जो किसान इसकी खेती करके इसको सही बाजार में बेचते हैं उनको इसकी खेती से बहुत अधिक लाभ मिलता है क्योंकि इसके भाव कई बार 30 से 50 रूपये प्रति कि0ग्रा0 तक मिल जाते हैं । यहां ये बताना उचित रहेगा कि ब्रोकोली की खेती करने से पहले इसको बेचने का किसान जरूर प्रबंध कर लें क्योकि यह अभी महानगरों, बड़े होटल तथा पर्यटक स्थानों तक ही सीमित है। साधारण अथवा मध्यम या छोटे बाजारों में अभी तक ब्रोकोली की मांग नहीं है क्योंकि अभी तक लोग इसके बारे में कम या बिल्कुल नहीं जानते। ब्रोकोली की सफल खेती के लिये नीचे दी गई जानकारी लाभदायक होगी। ब्रोकोली की खेती ठीक फूलगोभी की तरह की जाती है। इसके बीज व पौधे देखने में लगभग फूल गोभी की तरह ही होते हैं। ब्रोकोली का खाने वाला भाग छोटी छोटी बहुत सारी हरे फूल कलिकाओं का गुच्छा होता है जो फूल खिलने से पहले पौधों से काट लिया जाता है और यह खाने के काम आता है। फूल गोभी में जहां एक पौधे से एक फूल मिलता है वहां ब्रोकोली के पौधे से एक मुख्य गुच्छा काटने के बाद भी , पौधे से कुछ शाखायें निकलती हैं तथा इन शाखाओं से बाद में ब्रोकोली के छोटे गुच्छे बेचने अथवा खाने के लिये प्राप्त हो जाते है।

भूमि व खेत की तैयारी

जलवायु : ब्रोकोली को उत्तर भारत के मैदानी भागों में जाड़े के मौसम में अर्थात? सितम्बर मध्य के बाद से फरवरी तक उगाया जा सकता है।

मिट्टी :इस फ़सल की खेती कई प्रकार की मिट्टी में की जा सकती है लेकिन सफ़ल खेती के लिये बलुई दोमट मिट्टी बहुत उपयुक्त है।

नर्सरी तैयार करना = सितम्बर मध्य से नवम्बर के शुरू तक पौध तैयार की जा सकती है बीज बोने के लगभग 4 से 5 सप्ताह में इसकी पौध खेत में रोपाई करने योग्य हो जाती हैं इसकी नर्सरी ठीक फूलगोभी की नर्सरी की तरह तैयार की जाती है।

क़िस्में

ब्रोकोली की लगभग सभी क़िस्में विदेशी हैं। जिनमें से कुछ इस प्रकार हैं-प्रीमियम क्रॉप, टोपर, ग्रीन कोमट, क्राईटेरीयन आदि। कई बीज कम्पनियाँ अब ब्रोकोली के संकर बीज भी बेच रहीं हैं। भारतीय कृषि अनुसंधान संस्थान, नई दिल्ली ने हाल ही में पूसा ब्रोकोली 1% क़िस्म की खेती के लिये सिफ़ारिश की है तथा इसके बीज थोड़ी मात्रा में पूसा संस्थान क्षेत्रीय केन्द्र, कटराइन कुल्लू घाटी , हिमाचल प्रदेश से प्राप्त किये जा सकते हैं।

बीज की मात्रा व बुआई का तरीक़ा

बीज की मात्रा : एक हेक्टेअर की पौध तैयार करने के लिये लगभग 375 से 400 ग्राम बीज की आवश्यकता होती है।

रोपाई: नर्सरी में जब पौधे 8-10 या 4 सप्ताह के हो जायें तो उनको तैयार खेत में कतार से कतार , पक्ति से पंक्ति में 15 से 60 से. मी. का अन्तर रखकर तथा पौधे से पौधे के बीच 45 सें0मी0 का फ़ासला देकर रोपाई कर दें। रोपाई करते समय मिट्टी में पर्याप्त नमी होनी चाहिए तथा रोपाई के तुरन्त बाद हल्की सिंचाई अवश्य करें।

बुआई : पौध की रोपाई दोपहर के बाद अथवा शाम के समय करें।

खाद और उर्वरक

अच्छी पैदावार लेने के लिये निम्न खाद की मात्रा प्रति हेक्टेअर देना लभदायक रहेगा 7 खाद मिट्टी परीक्षण के आधार पर दे -

गोबर की खाद	: 50-60 टन
नाइट्रोजन	:100-120 कि0ग्रा0 प्रति हेक्टेअर
फॉसफोरस	:45-50 कि0ग्रा0 प्रति हेक्टेअर

गोबर तथा फ़ॉस्फ़रस खादों की मात्रा को खेत की तैयारी में रोपाई से पहले मिट्टी में अच्छी प्रकार मिला दें। नाइट्रोजन की खाद को 2 या 3 भागों में बांटकर रोपाई के क्रमशः 25 ,45 तथा 60 दिन बाद प्रयोग कर सकते हैं। नाइट्रोजन की खाद दूसरी बार लगाने के बाद, पौधों पर परत की मिट्टी चढाना लाभदायक रहता है 7

निराई-गुड़ाई व सिंचाई

मिट्टी मौसम तथा पौधों की बढ़वार को ध्यान में रखकर , इस फ़सल में लगभग 10-15 दिन के अन्तर पर हल्की सिंचाई की आवश्यकता होती है।

पौध संरक्षण

कीड़े व बीमारियाँ :अगर मौसम में बादल हों अथवा कुछ वर्षा होकर वातावरण थोड़ा गर्म व नम हो जाये तो ब्रोकोली की फ़सल पर पाउडरी मिल्ड्यू अर्थात फूंदी का चूर्ण रोग नुकसान करता है। इसके बचाव के लिये कैराथेन 2 ग्रा. दवा प्रति लीटर पानी के हिसाब से घोल बनाकर पौधों पर छिड़काव करें।

कटाई व उपज

फ़सल में जब हरे रंग की कलियों का मुख्य गुच्छा बनकर तैयार हो जाये तो इसको तेज़ चाकू या दरांती से कटाई कर लें। ध्यान रखें कि कटाई के साथ गुच्छा खूब गुंथा हुआ हो तथा उसमें कोई कली खिलने न पाएँ। ब्रोकोली को अगर तैयार होने के बाद देर से कटाई की जाएगी वह ढीली होकर बिखर जायेगी तथा उसकी कली खिलकर पीला रंग दिखाने लगेगी ऐसी अवस्था में कटाई किये गये गुच्छे बाजार में बहुत कम दाम पर बिक सकेंगे। मुख्य गच्छा काटने के बाद, ब्रोकोली के छोटे गुच्छे ब्रिकी के लिये प्राप्त होंगें। ब्रोकोली की अच्छी फ़सल से लगभग 12 से 15 टन पैदावार प्रति हेक्टेअर मिल जाती है।

राष्ट्रीय/अंतरराष्ट्रीय
प्रमुख समाचार

तीन राज्यों में भाजपा की जीत के बाद लोकसभा में लगे नारे

नईदिल्ली। मध्य प्रदेश, छत्तीसगढ़ और राजस्थान के विधानसभा चुनावों में जीत के बाद बीजेपी उत्साहित है। इस जीत का असर संसद सत्र में भी देखने को मिला। तीनों राज्यों में जीत से उत्साहित पार्टी के सदस्यों ने सोमवार को लोकसभा में प्रधानमंत्री मोदी के समर्थन में जमकर नारेबाजी की। प्रधानमंत्री के सदन में आने के बाद बीजेपी के सदस्य और सरकार के कुछ मंत्री अपने स्थान पर खड़े होते दिखाई दिए और 'बार-बार मोदी सरकार, तीसरी बार मोदी सरकार' तथा 'एक गारंटी, मोदी की गारंटी' जैसे नारे लगाते नजर आए। बीजेपी सदस्यों ने नारेबाजी करने के साथ ही तालियां भी बजाईं। बीजेपी सदस्यों की नारेबाजी के समय सदन में प्रधानमंत्री मोदी के अलावा राजनाथ सिंह, अमित शाह और नितिन गडकरी भी लोकसभा में उपस्थित थे। आपको बता दें कि मध्य प्रदेश, छत्तीसगढ़ और राजस्थान में बीजेपी को बहुमत मिला है तो तेलंगाना में कांग्रेस ने जीत हासिल की।

मत प्रतिशत के मामले में हम भाजपा से दूर नहीं : कांग्रेस

नईदिल्ली। कांग्रेस ने मध्य प्रदेश, छत्तीसगढ़ और राजस्थान के विधानसभा चुनाव में अपने प्रदर्शन को निराशाजनक करार देते हुए सोमवार को कहा कि नतीजे भले ही उसकी उम्मीद के मुताबिक नहीं हैं, लेकिन मत प्रतिशत के मामले में वह भारतीय जनता पार्टी (भाजपा) से ज्यादा दूर नहीं है। पार्टी महासचिव जयराम रमेश ने कहा कि मत प्रतिशत के इस अंतर को मिटाया जा सकता है तथा ये आंकड़े उम्मीद जगाते हैं। मध्य प्रदेश, छत्तीसगढ़ और राजस्थान में भारतीय जनता पार्टी को जीत मिली है तो तेलंगाना में कांग्रेस ने जीत हासिल की। वह राजस्थान और छत्तीसगढ़ में सत्ता में थी जो उसे गंवानी पड़ी है। रमेश ने सोशल मीडिया मंच 'एक्स' पर पोस्ट किया, ''यह सच है कि छत्तीसगढ़, मध्य प्रदेश और राजस्थान में भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस का प्रदर्शन निराशाजनक रहा है। नतीजे हमारी उम्मीदों के मुताबिक़ नहीं आए हैं। लेकिन वोट शेयर के मामले में कांग्रेस भाजपा से ज़्यादा दूर नहीं है।'' उन्होंने कहा, ''इस अंतर को मिटाया जा सकता है। ये आंकड़े वापसी के लिए आशा और उम्मीद जगाते हैं।''

58% भूभाग पर भाजपा का कब्जा, कांग्रेस तीन राज्यों में

नईदिल्ली। रविवार को राजस्थान, छत्तीसगढ़ और मध्य प्रदेश के विधानसभा चुनावों में भाजपा की शानदार जीत के साथ, पार्टी के राजनीतिक परिदृश्य में काफी विस्तार हुआ है। पार्टी अब भारत के 28 राज्यों में से 12 में शासन में है। कांग्रेस पार्टी के पास केवल तीन राज्य बचे हैं - तेलंगाना, जहां उसने रविवार को बीआरएस हटाकर जीत हासिल की है वहीं पहले से कर्नाटक और हिमाचल प्रदेश उसके पास है। इसके अलावा, भाजपा चार राज्यों - महाराष्ट्र, नागालैंड, सिक्किम और मेघालय में सत्तारूढ़ गठबंधन में है। दिसंबर 2023 तक, भाजपा शासित क्षेत्रों में 57 प्रतिशत आबादी के साथ भारत का 58 प्रतिशत भूभाग है। इस बीच, कांग्रेस शासित राज्य, 43 प्रतिशत आबादी के साथ देश के 41 प्रतिशत भूमि क्षेत्र को कवर करते हैं। पिछले कुछ वर्षों में भाजपा के राजनीतिक मानचित्र और राजस्थान, छत्तीसगढ़ और मध्य प्रदेश में उसके शानदार प्रदर्शन ने 2024 के आम चुनावों के लिए मंच तैयार कर दिया है।

5 साल पहले बनी पार्टी ने सभी पार्टियों के झंडे उखाड़ दिए

आईजोल। दिल्ली से 2000 किलोमीटर दूर उत्तर पूर्व भारत के मिजोरम राज्य में सालों से सत्ता पर कब्जा बनाए बैठी राजनीतिक पार्टियों की नींव हिल गयी। जब पांच साल पहले बनीं एक पार्टी ने सभी पुरानी पार्टियों के झंडे को मिजोरम विधानसभा चुनाव 2023 में अपनी प्रचंड जीत के साथ उखाड़ कर फैंक दिया। मात्र पांच साल पहले बनीं पार्टी को बनाने के लिए राज्य के ग्रामीण और कुछ 6 छोटे-छोटे राजनीतिक दलों ने मिलकर एक ग्रुप बनाया। इस ग्रुप का नाम ज़ोरम पीपुल्स मूवमेंट (जेडपीएम) था। इस समुह ने छोटी मोटी शुरूआत करते हुए पहले लोगों के दिलों में जगह बनाई और फिर एक राजनीतिक पार्टी। जेडपीएम की क्रांति इस बार मिजोरम विधानसभा चुनाव में देखी जा रही है। इस पार्टी को 74 वर्षीय पूर्व आईपीएस अधिकारी लालदुहोमा लीड कर रहे हैं। अब मिजोरम में पार्टी को बहुमत हासिल हो गया है और लालदुहोमा ही मिजोरम के मुख्यमंत्री बनने वाले हैं।

कांग्रेस नेता कार्ति चिदंबरम के ट्वीट से मचा बवाल

नईदिल्ली। कांग्रेस नेता कार्ति चिदंबरम ने अपनी पार्टी द्वारा तेलंगाना पर कब्ज़ा करने और भाजपा द्वारा तीन राज्यों में निर्णायक जीत हासिल करने के बाद नाराजगी व्यक्त की। एक्स पर उन्होंने द साउथ! लिखा जिनमें मतदाताओं के बीच उत्तर-दक्षिण विभाजन के बारे में बात की गई और बहस छिड़ गई। भाजपा द्वारा जीते गए तीन राज्य छत्तीसगढ़, मध्य प्रदेश और राजस्थान हिंदी हार्टलैंड का हिस्सा माने जाते हैं। दूसरा तेलुगु राज्य तेलंगाना, 2014 में आंध्र प्रदेश से अलग होकर बनाया गया था। वहां कांग्रेस जीती है और वह दक्षिण भारत में आता है। अपने ट्वीट द साउथ पर कांग्रेस सांसद कार्ति चिदंबरम ने कहा कि मैंने ऐसा कुछ भी सुझाव नहीं दिया है। यह हर किसी की कल्पना पर निर्भर है कि वह इसकी जिस तरह से व्याख्या करना चाहे। मैं भारतीय हूं, किसी भी अन्य से ज्यादा। मैंने बस इतना ही कहा था द साउथ, मुझे नहीं पता कि लोगों को इसे लेकर इतना उत्साहित क्यों होना पड़ता है।

संसद के शीत सत्र को लेकर प्रधानमंत्री की विपक्ष को नसीहत

पराजय का गुस्सा निकालने के बजाय संसद सत्र में सकारात्मकता के साथ आगे बढ़े विपक्ष: मोदी

नईदिल्ली। प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी ने सोमवार को विपक्षी दलों से आग्रह किया कि संसद के शीतकालीन सत्र में वे, विधानसभा चुनावों में मिली पराजय का गुस्सा ना निकालें बल्कि उससे सीख लेते हुए नकारात्मकता को पीछे छोड़ें और सकारात्मक रूख के साथ आगे बढ़ें। सत्र के पहले दिन मीडिया को संबोधित करते हुए प्रधानमंत्री ने यह भी कहा कि यदि विपक्षी दल 'विरोध के लिए विरोध' का तरीका छोड़ दें और देश हित में सकारात्मक चीजों में साथ दें तो देश के मन में उनके प्रति आज जो नफरत है, हो सकता है वह मोहब्बत में बदल जाए।

चार राज्यों के विधानसभा चुनाव के नतीजों को 'बहुत ही उत्साहवर्धक' करार देते हुए उन्होंने कहा, ''देश ने नकारात्मकता को नकारा है। सत्र के प्रारंभ में विपक्ष के साथियों के साथ हमारा विचार-विमर्श होता है। हमारी टीम उनसे चर्चा करती है। मिलकर के सबके सहयोग के लिए हम हमेशा प्रार्थना करते हैं। इस बार भी इस प्रकार की सारी प्रक्रियाएं कर ली गई हैं।'' मोदी ने कहा, ''सार्वजनिक रूप से हमेशा हमारे सभी सांसदों से आग्रह करता हूं कि लोकतंत्र का यह मंदिर जन आकांक्षाओं के लिए, विकसित भारत की नयी राह को अधिक मजबूत बनाने के लिए बहुत महत्वपूर्ण मंच है। मैं सभी सांसदों से आग्रह कर रहा हूं कि वह ज्यादा से ज्यादा तैयारी करके आएं तथा सदन में जो भी विधेयक रखे जाएं, उन पर गहन चर्चा हो।''

उन्होंने कहा कि एक सांसद जब सुझाव देता है तो उसमें जमीनी अनुभव का उत्तम तत्व होता है लेकिन अगर चर्चा ही नहीं होती है तो देश को इसका नुकसान होता है। प्रधानमंत्री ने कहा, ''अगर मैं वर्तमान चुनाव नतीजे के आधार पर कहूं तो विपक्ष में जो बैठे हुए साथी हैं उनके लिए यह स्वर्णिम अवसर है। इस सत्र में पराजय का गुस्सा निकालने की योजना बनाने के बजाय, इस पराजय से सीखकर, पिछले 9 साल में चलाई गई नकारात्मकता की प्रवृत्ति को छोड़कर, इस सत्र में अगर सकारात्मकता के साथ आगे बढ़ेंगे तो देश उनकी तरफ देखने का दृष्टिकोण बदलेगा।''

मोदी ने कहा कि वे विपक्ष में हैं फिर भी वह उन्हें सकारात्मक सुझाव दे रहे हैं कि सकारात्मक के साथ ही हर किसी का भविष्य उज्जवल है। उन्होंने कहा, ''निराश होने की जरूरत नहीं है। लेकिन कृपा करके बाहर की पराजय का गुस्सा सदन में मत उतारना। हताशा, निराशा होगी, आपके साथियों को दम दिखाने के लिए कुछ न कुछ करना भी पड़ेगा लेकिन कम से कम लोकतंत्र के इस मंदिर को वह मंच मत बनाइए।''

मोदी ने कहा कि वह अपने लंबे अनुभव के आधार पर कह रहे हैं कि आप (विपक्ष) थोड़ा सा अपना रुख बदलिए और विरोध के लिए विरोध का तरीका छोड़ दीजिए। उन्होंने कहा, ''देश हित में सकारात्मक चीजों का साथ दीजिए। जो कमियां है उन पर चर्चा कीजिए। आप देखिए, देश के मन में आज जो (विपक्ष के प्रति) नफरत पैदा हो रही है, हो सकता है वह मोहब्बत में बदल जाए। तो मौका है यह। इसे जाने मत दीजिए।'' प्रधानमंत्री ने विपक्षी दलों से संसद सत्र में सहयोग करने की अपील करते हुए कहा कि इसी में उनकी भलाई है कि वह देश को सकारात्मकता का संदेश दें।

उन्होंने कहा, ''आपकी छवि नफरत की और नकारात्मकता की बने, यह लोकतंत्र के लिए अच्छा नहीं है। लोकतंत्र में विपक्ष भी महत्वपूर्ण और मूल्यवान है। उसे सार्मथ्यवान भी होना चाहिए। लोकतंत्र की भलाई के लिए मैं फिर से अपनी भावना को प्रकट करता हूं।''

इतनी सीटों पर मिली जीत

गौरतलब है, कांग्रेस सिर्फ तेलंगाना की 64 सीटें जीत सकी। जबकि मध्य प्रदेश में भाजपा प्रचंड बहुमत पाकर 163 सीटें जीतने में सफल रही। वहीं राजस्थान में भाजपा को 115 सीटों पर जीत मिली। छत्तीसगढ़ में भाजपा 54 सीटें जीतकर सत्ता कब्जाने में सफल रही है। मिजोरम में आज नतीजे साफ हो जाएंगे।

सर्दी बहुत धीमी गति से आ रही

ऐसे में, पीएम नरेंद्र मोदी ने कहा कि सर्दी बहुत धीमी गति से आ रही है, लेकिन राजनैतिक गर्मी बड़ी तेज से बढ़ रही है। कल ही चार राज्यों के चुनाव के नतीजे सामने आए हैं। परिणाम बहुत ही उत्साहजनक हैं। खासकर उन लोगों के लिए उत्साहजनक हैं, जो देश के आम लोगों के कल्याण और देश के उज्ज्वल भविष्य के लिए प्रतिबद्ध हैं।

ये चार महत्वपूर्ण जातियां

उन्होंने कहा, सभी समाजों और सभी समूहों की महिलाएं, युवा, हर समुदाय और समाज के किसान और मेरे देश के गरीब, ये चार ऐसी महत्वपूर्ण जातियां हैं, जिनके सशक्तिकरण, उनके भविष्य को सुनिश्चित करने वाली ठोस योजनाएं और अंतिम व्यक्ति तक पहुंच के उसूलों पर जो चलता है, उन्हें भरपूर समर्थन मिलता है।

लबें समय तक इस सदन में...

उन्होंने कहा कि इतने उत्तम जनादेश के बाद आज हम संसद के इस नए मंदिर में मिल रहे हैं। जब इस नए परिसर का उद्घाटन हुआ था, तो उस समय एक छोटा सा सत्र था और एक ऐतिहासिक निर्णय हुआ था। लेकिन इस बार लबें समय तक इस सदन में कार्य करने का अवसर मिलेगा।

इंडिया गठबंधन में शामिल विपक्षी दलों को भरोसा

करारी शिकस्त का असर गठबंधन पर नहीं, कड़ी मेहनत जरूरी

नई दिल्ली। पांच राज्यों के विधानसभा चुनाव को 2024 के लोक सभा चुनाव से पहले सेमीफाइनल माना जा रहा था। पांच राज्यों की कुल 680 विधानसभा सीटों पर चुनाव परिणाम का एलान भाजपा के लिए उत्साह बढ़ाने वाला है, क्योंकि तीन राज्यों में उसकी सरकार बनेगी। तेलंगाना जैसे प्रदेश में भी उसका जनाधार बढ़ा है। इन चुनाव परिणामों को कांग्रेस समेत 28 विपक्षी दलों के लिए तगड़ा झटका माना जा रहा है, लेकिन विपक्षी दलों का मानना है कि इससे आम चुनाव पर असर नहीं पड़ेगा। विपक्षी दलों ने चंद महीने बाद होने वाले आम चुनाव के लिए कड़ी मेहनत करने की वकालत की है।

विपक्षी नेताओं का कहना है कि पांच राज्यों में हुए विधानसभा चुनाव 2023 के नतीजों का असर इंडिया ब्लॉक में शामिल राजनीतिक दलों पर नहीं पड़ेगा। कड़ी मेहनत करने की जरूरत है। सोमवार को संसद सत्र की शुरुआत और चुनाव परिणाम के एक दिन बाद विपक्षी दलों ने कहा, भले ही विधानसभा चुनाव परिणाम के अनुसार भाजपा को तीन राज्यों में जीत मिली है, लेकिन इसका असर इंडिया ब्लॉक में शामिल करीब 28 दलों के गठबंधन पर नहीं पड़ेगा। हालांकि, विपक्ष ने यह भी स्वीकार किया है कि विपक्षी दलों को अगले साल होने वाले लोकसभा चुनावों के लिए कड़ी मेहनत करने की जरूरत है।

बता दें कि रविवार को हुई मतगणना के बाद मध्य प्रदेश, राजस्थान और छत्तीसगढ़ में भाजपा को प्रचंड बहुमत मिला। छत्तीसगढ़ और राजस्थान में कांग्रेस सरकार को करारी शिकस्त मिली। माना जा रहा है कि भाजपा ने हिंदी पट्टी में अपनी पकड़ मजबूत की है। सियासी पंडितों के अनुसार, इन चुनाव परिणामों से प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी के पक्ष में 2024 के लोकसभा चुनावों के लिए माहौल तैयार हो गया।

राजस्थान और छत्तीसगढ़ में भाजपा से मिली

करारी हार के बाद कांग्रेस को कुछ राहत दक्षिण भारत में मिली। तेलंगाना में कांग्रेस ने भारत राष्ट्र समिति (बीआरएस) को मात देकर सरकार बनाने के लिए स्पष्ट बहुमत हासिल किया। चुनाव के नतीजों के एक दिन बाद इंडिया में शामिल सबसे वरिष्ठ नेताओं में एक- नेशनल कॉन्फ्रेंस प्रमुख फारूक अब्दुल्ला ने कहा, इंडिया ब्लॉक में शामिल विपक्षी पार्टियों को और अधिक मेहनत करनी होगी।

विधानसभा चुनाव के नतीजों और विपक्षी दलों के गठबंधन पर करारी शिकस्त के असर से जुड़े सवाल पर फारूक अब्दुल्ला ने कहा, इस हार से गठबंधन पर कोई फर्क नहीं पड़ेगा। हमें और अधिक मेहनत करनी होगी। जीत और हार होती रहती है। हमें हारने के साथ-साथ जीतने वालों से भी सीखना चाहिए। भारत देश को एकजुट होना होगा। देश सभी के लिए है और हमें देश को मजबूत करने की जरूरत है। मध्य प्रदेश विधानसभा चुनाव में कांग्रेस और समाजवादी पार्टी के बीच सामंजस्य न होने और अगले साल के आम चुनाव में इन चुनाव परिणामों के असर पर फारूक अब्दुल्ला ने कहा, सभी दलों को समायोजन करना पड़ेगा। हमें एक साथ आगे बढ़ना होगा। उनके अलावा राष्ट्रीय जनता दल (राजद) नेता मनोज झा ने भी कहा कि विधानसभा चुनाव के नतीजों का विपक्षी दलों के गठबंधन पर कोई असर नहीं पड़ेगा। उन्होंने कहा, विधानसभा चुनाव राज्यों तक सीमित थे। इन्हें पीछे छोड़ देना चाहिए। राष्ट्रीय चुनाव कई अलग-अलग मुद्दों पर कराए जाएंगे।

खेल
प्रमुख समाचार

भारत के खिलाफ दक्षिण अफ्रीका के स्क्वॉड का एलान

नईदिल्ली। साउथ अफ्रीका ने भारत के खिलाफ होने वाली टी20 सीरीज, वनडे और टेस्ट सीरीज के लिए अपने स्क्वॉड का ऐलान कर दिया है। जहां टी20 और वनडे की कमान एडन मार्क्रम के कंधों पर दी गई है। तो वहीं टेस्ट की अगुवाई टेम्बा बावुमा करेंगे। भारत और साउथ अफ्रीका के बीच 10 दिसंबर से टी20 सीरीज का आगाज होगा। साउथ अफ्रीका दौरे पर भारत 3 टी20 और इतने ही वनडे मैचों की सीरीज खेलेगा। इसके बाद दोनों टीमों के बीच 2 टेस्ट मैच खेले जाएंगे। जिसका दूसरा टेस्ट 2024 में भारत और दक्षिण अफ्रीका का पहला मैच होगा। बीसीसीआई दक्षिण अफ्रीका दौरे के लिए टीम इंडिया के स्क्वॉड का ऐलान पहले ही कर चुकी है।

टी20 स्क्वॉड- एडन मार्क्रम (कप्तान), ओटनील बार्टमैन, मैथ्यू ब्रीट्जके, नांद्रे बर्गर, गेराल्ड कोएट्जी (पहले और दूसरे टी20 के लिए), डोनोवन फरेरा, रीज़ा हेंड्रिक्स, मार्को जानसेन (पहले और दूसरे टी20 के लिए), हेनरिक क्लासेन, केशव महाराज, डेविड मिलर, लुंगी एनगिडी (पहले और दूसरे टी20 के लिए), एंडिले फेहलुकवायो, तबरेज शम्सी, ट्रिस्टन स्टब्स, लिजाड विलियम्स।

वनडे स्क्वॉड- एडन मार्क्रम (कप्तान), ओटनील बार्टमैन, नांद्रे बर्गर, टोनी डी जोरजी, रीज़ा हेंड्रिक्स, हेनरिक क्लासेन, केशव महाराज, मिहलाली मपोंगवाना, डेविड मिलर, एंडिले फेहलुकवायो, तबरेज शम्सी, वियान मुल्डर, रासी वैन डेर डुसेन, काइल वेरिन, लिजाड विलियम्स।

टेस्ट सीरीज स्क्वॉड- टेम्बा बावुमा (कप्तान), डेविड बेडिंघम, नांद्रे बर्गर, गेराल्ड कोएत्जी, टोनी डी जोरजी, डीन एल्गर, मार्को जानसन, केशव महाराज, एडन मार्क्रम, वियान मुल्डर, लुंगी एनगिडी, कीगन पीटरसन, कैगिसो रबाडा, ट्रिस्टन स्टब्स, काइल वेरिन।

आर्थिक/वाणिज्य/विज्ञान/
प्रमुख समाचार

सेंसेक्स- निफ्टी रिकॉर्ड ऊंचाई पर, बैंकिंग शेयरों की चमक बढ़ी

नईदिल्ली। घरेलू बाजार में सोमवार को लगातार पांचवें दिन तेजी जारी रही। विदेशी निवेशकों की लगातार खरीदारी और कच्चे तेल की कीमतों के 80 डॉलर प्रति बैरल से नीचे रहने से भी सेंटीमेंट को मजबूती मिली। आज के कारोबार में बीएसई सेंसेक्स 1,384 अंक मजबूत हुआ। वहीं, निफ्टी में भी 418 अंक की बढ़त दर्ज की गई। व्यापक बाजारों में, बीएसई मिडकैप इंडेक्स इंट्राडे में 35,124 के नए शिखर पर पहुंच गया, जबकि बीएसई स्मॉलकैप इंडेक्स ने 41,222 का नया ऑलटाइम हाई का रिकॉर्ड बनाया। दोनों सूचकांक 1.2 प्रतिशत की बढ़त के साथ बंद हुए। बीएसई का 30 शेयरों वाला मानक सूचकांक सेंसेक्स 1383.93 अंक यानी 2.05 फीसदी की भारी बढ़त के साथ 68,865.12 अंक के नए शिखर पर बंद हुआ। कारोबार के दौरान सेंसेक्स 68,918.22 की ऊंचाई तक गया और नीचे में 68,274.47 तक आया।

डोम्स इंडस्ट्रीज 1200 करोड़ का आईपीओ लेकर आ रही

नईदिल्ली। दिसंबर महीने में एक और बड़ा आईपीओ आने वाला है। 13 दिसंबर को स्टेशनरी और आर्ट प्रोडक्ट्स बनाने वाली कंपनी डोम्स इंडस्ट्रीज 1200 करोड़ रुपये का आईपीओ लेकर आ रही है। यह आईपीओ सब्सक्रिप्शन के लिए 13 दिसंबर से 15 दिसंबर तक खुला रहेगा। बता दें, डोम्स इंडस्ट्रीज अनिवार्य रूप से टी+3 टाइमलाइन में शेयर बाजार में डेब्यू करने वाली पहली कंपनी होगी। ऑफर की एंकर बुक 12 दिसंबर को एक दिन के लिए खुलेगी।आईपीओ में डोम्स की ओर से 350 करोड़ रुपये के नए शेयर जारी होंगे। वहीं प्रमोटर्स की ओर से 850 करोड़ रुपये का ऑफर फॉर सेल (ओएफएस) रहेगा। कॉरपोरेट प्रमोटर एफआईएलए यानी फैब्रिका इटैलियाना लैपाइज्ड एफिनी स्पा, ओएफएस में 800 करोड़ रुपये के शेयरों की बिक्री करेगी।

शेयर बाजार में अदाणी ग्रुप के शेयर बने रॉकेट

नईदिल्ली। तीन राज्यों के विधानसभा चुनावों में भारतीय जनता पार्टी की क्लीन स्वीप के बाद बाजार में मजबूती के बीच सोमवार के इंट्राडे ट्रेड में बीएसई पर अदाणी ग्रुप की कंपनियों के शेयरों में 15 फीसदी तक की तेजी आई। अदाणी ग्रीन एनर्जी 15 प्रतिशत बढ़कर 1,178 रुपये पर पहुंच गया, जबकि अदाणी एनर्जी सॉल्यूशंस 14 प्रतिशत बढ़कर 975.05 रुपये पर पहुंच गया, इसके बाद अदाणी टोटल गैस 14 प्रतिशत बढ़कर 800 रुपये और अदाणी पावर 13 प्रतिशत बढ़कर 495 रुपये पर ट्रेड कर रहा था। अदाणी एंटरप्राइजेज 10 प्रतिशत चढ़कर 2,598.50 रुपये पर पहुंच गया। नई दिल्ली टेलीविजन 7 प्रतिशत की तेजी के साथ 235.05 रुपये, अदाणी पोर्ट्स 7 प्रतिशत की बढ़त के साथ 883 रुपये, अदाणी विल्मर भी 7 प्रतिशत की तेजी के साथ 365 रुपये पर पहुंच गया। एसीसी और अंबुजा सीमेंट्स क्रमशः 5 प्रतिशत बढ़कर 1,995 रुपये और 462.50 रुपये पर पहुंच गए।

जे कुमार इंफ्राप्रोजेक्ट को मिला 378.7 करोड़ का ठेका

नई दिल्ली। जे कुमार इंफ्राप्रोजेक्ट लिमिटेड को 378.7 करोड़ रुपये का ठेका मिला है। यह परियोजना एक फ्लाईओवर के निर्माण से संबंधित है। कंपनी ने शेयर बाजार को दी जानकारी में बताया। उसे मुंबई महानगर क्षेत्र विकास प्राधिकरण से एमएमआरडीए की मुंबई मेट्रो रेल परियोजना के लिंक रोड, अंधेरी (पश्चिम) से पूनम नगर (जेवीएलआर) तक फ्लाईओवर (मिसिंग लिंक) के निर्माण व डिजाइन आदि का ठेका मिला है। परियोजना को 30 महीने की अवधि के भीतर पूरा किया जाना है।

क्रिकेट के लिए उपयुक्त निर्णय लेने का वक्त

इंद्रजित गुप्ता

राष्ट्रीय टीम के बेहतर भविष्य के लिए उन महत्त्वपूर्ण प्रश्नों पर गौर किया जाना चाहिए, जो विश्व कप क्रिकेट प्रतियोगिता के समापन के बाद उभरे हैं। ये ऐसे प्रश्न हैं, जिन पर अजित अगरकर एवं चयनकर्ताओं की टीम को अवश्य विचार करने की आवश्यकता है।

क्या उन्हें रोहित शर्मा को टेस्ट, एक दिवसीय और टी20 तीनों प्रतिस्पर्धाओं के लिए टीम के कप्तान के रूप में बनाए रखना चाहिए? क्या उन्हें राहुल द्रविड़ का कार्यकाल बढ़ाना चाहिए या वीवीएस लक्ष्मण, आशिष नेहरा या किसी विदेशी कोच का विकल्प चुनना चाहिए? सर्वाधिक महत्त्वपूर्ण प्रश्न यह है कि क्या विश्व कप के फाइनल तक पहुंचने वाली टीम में आमूल-चूल परिवर्तन किया जाना चाहिए?

चयनकर्ताओं के लिए ये निर्णय लेने कतई आसान नहीं होंगे। क्या उन्हें पुराने दिग्गजों जैसे रोहित शर्मा, विराट कोहली और मोहम्मद शमी को और अधिक समय देना चाहिए या भविष्य पर नजर रखते हुए नए युवा खिलाड़ियों का दस्ता तैयार कर उन्हें आगे लाना चाहिए? पूर्व क्रिकेट खिलाड़ी नेहरा ने निरंतरता बनाए रखने पर जोर दिया है।

उनका कहना है कि अमेरिका महाद्वीप में जून 2024 में आयोजित होने वाले टी20 विश्व कप के लिए शर्मा को टीम का कप्तान बनाए रखना चाहिए। नेहरा का तर्क है कि उम्र के आधार पर निर्णय नहीं लेना चाहिए। उनका कहना है कि युवा खिलाड़ियों को शर्मा और कोहली के साथ बराबर शर्तों पर टीम में जगह पाने के लिए मेहनत करनी चाहिए।

शर्मा और कोहली क्रमशः 36 और 35 वर्ष के हो चुके हैं और इस बात पर कोई

विवाद नहीं है कि दोनों ही अगले कुछ और वर्षों तक राष्ट्रीय टीम में खेल सकते हैं। यहां एक बहस का विषय यह है कि इन खिलाड़ियों को दीर्घ अवधि तक राष्ट्रीय टीम से खेलने का मौका देने से किसी तरह के अवसर की हानि तो नहीं होगी? क्या इससे युवा प्रतिभाओं के लिए उच्चतम स्तर पर अपने हुनर दिखाने की संभावनाएं तो कम नहीं हो जाएगी?

यह मामला केवल क्रिकेट तक ही सीमित नहीं है। राजनीति हो या कारोबार, भारत में एक पीढ़ी से दूसरी पीढ़ी को कमान देना आसान एवं सीधा नहीं रहा है। हमारे वर्तमान राजनेता कभी-कभार ही अपनी इच्छा से पीछे हटते हैं और नई पीढ़ी को अवसर देते हैं। वे यथासंभव दीर्घतम अवधि तक मैदान में जमे रहते हैं। कुछ समय बाद उत्तरदायित्व से जुड़ी चुनौती विकराल दिखने लगती है।

अगर शुरुआती रिपोर्ट की मानें तो शर्मा इस मामले में अपवाद साबित हो सकते हैं। उन्होंने अपने निःस्वार्थ खेल, अपनी निडर बल्लेबाजी के दम पर हाल में समाप्त विश्व कप में लगातार दस मैचों में टीम को जीत दिलाकर विशेष ख्याति हासिल की है। संभवतः उन्होंने मुख्य चयनकर्ता अगरकर को बता दिया है कि वह कुछ व्यक्तिगत कारणों से टी20 नहीं खेल पाएंगे और अपनी ऊर्जा एक दिवसीय और टेस्ट क्रिकेट के लिए बचा कर रखेंगे। हार्दिक पंड्या को मुंबई इंडियन में वापस लाने का निर्णय यही संकेत दे रहा है। शर्मा इस टीम की कमान पंड्या को दे सकते हैं। फिलहाल इंतजार करना होगा कि चीजें कैसे आगे बढ़ती हैं।

यह स्पष्ट नहीं है कि कोहली भी कुछ इसी तरह करना चाहते हैं। मगर मेरा मानना है कि अगर नए युवा खिलाड़ियों को अवसर मिले तो भारतीय क्रिकेट, विशेषकर, टी20 प्रतियोगिता के लिए तो इससे बेहतर कुछ नहीं हो सकता है। क्रिकेट युवा लोगों का खेल है। इस खेल में त्वरित प्रतिक्रिया, तत्काल सुधार की खूबी और अनुकूलन की आवश्यकता होती है और यह काम पुराने लोगों की तुलना में नए लोग बखूबी कर सकते हैं। भारत में अब प्रतिभावान क्रिकेट खिलाड़ियों की कमी नहीं है और शायद पहले कभी इतने प्रतिभावान लोगों की लंबी कतार नहीं दिखी थी। रिंकु सिंह, यशस्वी जायसवाल, रचिन रवींद्र और हैरी ब्रुक जिस जज्बे और हुनर के साथ खेल दिखा रहे हैं, उससे तो यही लगता है कि वे बड़े अवसरों के लिए पूरी तरह तैयार हो चुके हैं।

सुशासन का सूर्योदय

भारतीय जनता पार्टी को मिली प्रचंड विजय के लिए
छत्तीसगढ़ के देवतुल्य कार्यकर्ता एवं जनता का

आभार

भारतीय जनता पार्टी, छत्तीसगढ़

#Rajesh

आर.एन.आई.रजि. क्र. CHHHIN/2021/80529, स्वत्वाधिकारी, मुद्रक एवं प्रकाशक- शशांक शर्मा द्वारा मिशन मीडिया प्रा. लि., प्रेस कॉम्प्लेक्स, रजबंधा मैदान, रायपुर (छ.ग.) 492001 से मुद्रित एवं 29/1110, सेवती स्मृति, आजाद चौक, रायपुर (छ.ग.) 492001 से प्रकाशित। संपादक-शशांक शर्मा, मो. 94255-20531.